राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

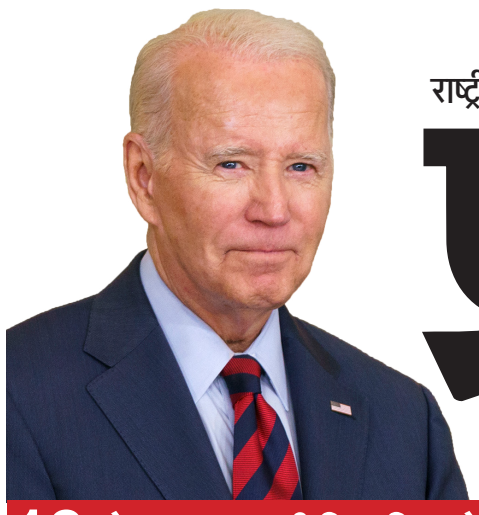

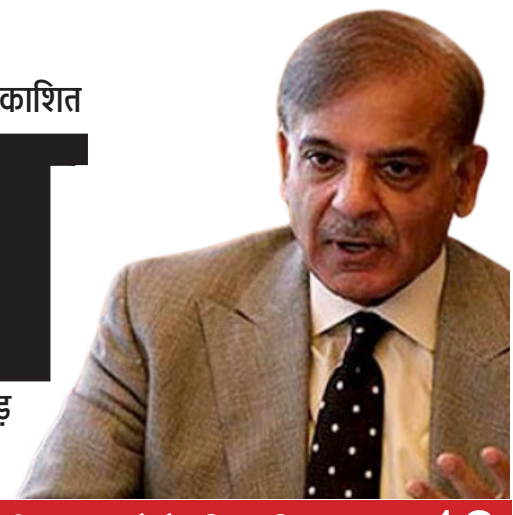

12 डोनाल्ड ट्रंप की विवादित पोस्ट पर बढ़ा हंगामा, राष्ट्रपति बाइडन के ...

पाकिस्तान में रेड कार्पेट बैन, सिर्फ विदेशी महमानों के लिए बिछाया ... 12

वर्ष : 11 | अंक : 317 | पटना, सोमवार, 01 अप्रैल, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%

नहीं 50%

कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

संक्षिप्त खबरें

प्रधानमंत्री ने ईस्टर पर देशवासियों को दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को देशवासियों को ईस्टर की शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि नवीनीकरण एवं आशावाद का संदेश हर जगह गूंजेगा। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, यह दिन हम सभी को एकजुट होने, एकता और शांति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करे। सभी को ईस्टर की शुभकामनाएं। उन्होंने कहा, ईस्टर पर, हम आशा करते हैं कि नवीनीकरण और आशावाद का संदेश हर जगह गूंजेगा। गुड फ्राइडे के बाद आने वाले रविवार को ईस्टर संडे के नाम से जाना जाता है। ईसाई, ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने के जश्न में ईस्टन मनाते हैं।

मुरादाबाद:सड़क हादसे में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

मुरादाबाद। जनपद के कांठ थाना क्षेत्र में शनिवार को सड़क हादसे एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। इनमें दो लोग घायल हैं। पुलिस ने शवों की शिनाख्त कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रारांभिक जानकारी मिली है कि एक परिवार देहरादून से कार में बैठकर मुरादाबाद के थाना मुगलपुरा क्षेत्र स्थित अपनी रिश्तेदारी में आ रहे थे। थाना कांठ क्षेत्र स्थित रसूलपुर क्रॉसिंग के पास खड़े ट्रक से कार टकराकर पलट गई। हादसे में कार सवार संगीता रस्तोगी, आशिका रस्तोगी, यश रस्तोगी, आरती रस्तोगी की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, कार चला रहे अतुल रस्तोगी और उसकी बहन मानवी रस्तोगी गंभीर रुप से घायल है, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में मरने वाले एक ही परिवार के हैं और देहरादून के थाना तिलक रोड के गढ़ मकान नंबर 13 जी मोहल्ला डांडीपुर के रहने वाले थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

द्वारका में आग लगने से एक ही परिवार के चार की मौत

देवभूमि द्वारका। गुजरात के देवभूमि द्वारका जिले के द्वारका सिटी क्षेत्र में रविवार को एक मकान के एसी मशीन में आग लग गई। इस दौरान दम घुटने से एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गयी जबकि एक अन्य को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अग्निशमन विभाग के फायर इंचार्ज जितेन्द्रभाई एस कारडिया ने बताया कि रविवार तड़के आदित्य रोड़ पर माहेश्वरी भवन के निकट स्थित कमलेशभाई उपाध्याय के घर में एयर कंडीशनर मशीन में आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियों के साथ दमकल कर्मी मौके पर पहुंच गए। कड़ी मशक्कत के बाद उन्होंने आग पर काबू पा लिया।

कांग्रेस पांच अप्रैल को जारी करेगी घोषणापत्र

नई दिल्ली। कांग्रेस ने पांच अप्रैल को अपना घोषणापत्र जारी करने की शनिवार को घोषणा की। उसने अंतिम क्षण में घोषणापत्र समिति गठित करने को लेकर भाजपा पर कटाक्ष भी किया। भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनावों के लिए शनिवार को 27 सदस्यीय घोषणा पत्र समिति गठित की और पार्टी ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को इसका अध्यक्ष, वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण को संयोजक तथा केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को सह-संयोजक बनाया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस ने 16 मार्च को पांच न्याय, 25 गारंटी जारी की और देश भर में आठ करोड़ गारंटी कार्ड वितरित करने के लिए पार्टी का घर घर गारंटी अभियान तीन अप्रैल से शुरू होगा।

राष्ट्रपति मुर्मू ने लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से किया सम्मानित, पीएम भी रहे मौजूद

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। देश के पूर्व उप-प्रधानमंत्री व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत रत्न से सम्मानित किया है। राष्ट्रपति ने रविवार को आडवाणी के आवास पर पहुंचकर उन्हें भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद रहे। 3 फरवरी को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न प्रदान करने की घोषणा की थी। रविवार को जब लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया तो मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू समेत कई दिग्गज नेता मौजूद रहे। राष्ट्रपति भवन के अनुसार, भारतीय राजनीति के पुरोधा आडवाणी ने सात से अधिक दशकों तक अटूट समर्पण और प्रतिष्ठा के साथ देश की सेवा की। कराची में 1927 में जन्मे आडवाणी का परिवार विभाजन के बाद 1947 में भारत आ गया था। राष्ट्रपति भवन ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अपने दृष्टिकोण के साथ, उन्होंने पूरे देश में दशकों तक कड़ी मेहनत की और सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव लेकर आए। उसने एक्स पर समारोह की तस्वीरें साझा करते हुए कहा, जब आपातकाल ने भारत के लोकतंत्र को खतरे में डाल दिया तो उनके अंदर के परिश्रमी योद्धा ने निरंकुश प्रवृत्तियों से इसकी रक्षा करने में मदद की। आडवाणी (96) जून 2002 से मई 2004 तक उप-

प्रधानमंत्री और अक्टूबर 1999 से मई 2004 तक केंद्रीय गृहमंत्री रहे। वह कई बार 1986 से 1990, 1993 से 1998 और 2004 से 2005 तक भाजपा अध्यक्ष रहे। गौरतलब है कि लालकृष्ण आडवाणी ने भारतीय जनता पार्टी को सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। 1990 के दशक में उनकी रथयात्रा के बाद भाजपा राष्ट्रीय राजनीति में उभर कर सामने आई। 1980 में भाजपा की स्थापना के बाद से लालकृष्ण आडवाणी ने सबसे लंबे समय तक भाजपा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। लगभग तीन दशकों के संसदीय करियर के दौरान, लालकृष्ण आडवाणी पहले गृह मंत्री और बाद में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार (1999-2004) के मंत्रिमंडल में उप प्रधान मंत्री रहे। 8 नवंबर, 1927 को कराची, ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान) में पैदा हुए लालकृष्ण आडवाणी विभाजन के बाद भारत आ गए। हैदराबाद के डीजी नेशनल कॉलेज से स्नातक करने के बाद, उन्होंने मुंबई के सरकारी लॉ कॉलेज में कानून की पढ़ाई की। इसके बाद वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए और 1947 में राजस्थान में इसकी गतिविधियों की कमान संभाली। जब 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आरएसएस की राजनीतिक शाखा, भारतीय जनसंघ (बीजेएस) की स्थापना की, तो लालकृष्ण आडवाणी पार्टी की राजस्थान इकाई के सचिव बने और 1970 तक इस पद पर बने रहे। 1960-1967 तक, वह जनसंघ की राजनीतिक पत्रिका ऑर्गनाइजर में भी थे, जहां उन्होंने सहायक संपादक के रूप में काम किया। इससे पहले राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 30 मार्च को देश की चार महान शख्सियतों- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कपूर्री ठाकुर, देश के पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव, किसानो के मसीहा कहे जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और देश के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किया था। राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में शनिवार को आयोजित एक कार्यक्रम में इन चारों विभूतियों को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

बीएसईबी के अध्यक्ष ने जारी किया परिणाम, कहा-बिहार ने एक बार फिर रचा इतिहास

मैट्रिक परीक्षा में 82.91 फीसदी विद्यार्थी पास, शिवांकर बने टॉपर

- 488 अंक लाकर समस्तीपुर का आर्दश दूसरे स्थान पर
- 486 अंक के साथ तीसरे स्थान पर संयुक्त रूप से चार परीक्षार्थी रहे

पूर्णिया जिला स्कूल के शिवांकर को मिला 489 अंक

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष आनंद किशोर ने रविवार को दोपहर डेढ़ बजे मैट्रिक परीक्षा 2024 का रिजल्ट जारी किया। उन्होंने बताया कि पूरे देश में इस बार भी सबसे पहले बिहार बोर्ड का रिजल्ट जारी किया गया। इस बार परीक्षा में शामिल हुए 16.91 परीक्षार्थियों में से 13 लाख 79 हजार 542 छात्र पास हुए। इसमें 6.99 लाख छात्राएं हैं।

बिहार बोर्ड के अध्यक्ष आनंद किशो ने बताया कि इस बार कुल रिजल्ट 82.99 प्रतिशत रहा। बिहार बोर्ड ने इस बार अधिकतम प्राप्तांक वाले शीर्ष पांच की सूची बनाकर जारी की है। इसमें 489 नंबर हासिल कर पूर्णिया के जिला स्कूल के छात्र शिवांकर कुमार स्टेट टॉपर बने हैं। इन्हें लैपटॉप के साथ एक लाख रुपये की नगद राशि दी जाएगी। वहीं दूसरे स्थान पर वी हाई स्कूल मोबाजितपुर नॉर्थ समस्तीपुर के आदर्श कुमार रहे। इन्हें 488 नंबर मिले। जबकि, तीसरे स्थान पर 486 अंकों के साथ चार परीक्षार्थी जमुई के सिमुलतला आवासीय विद्यालय के आदित्य कुमार, मधुबनी के न्यू अपग्रेड हाई स्कूल सिधाप परसाही के सुमन कुमार पूर्वे, सारण के उच्च माध्यमिक विद्यालय हुस्सेपुर एकमा की पलक कुमारी तथा वैशाली के एसएमटी हाई स्कूल की साजिया परवीन हैं। बीसईबी के अध्यक्ष आनंद किशोर ने बताया कि प्रथम टॉपर को 1 लाख रूपए, लैपटॉप, मेडल और प्रशस्ति पत्र, सेकेंड टॉपर को 75 हजार रूपए, लैपटॉप, मेडल और प्रशस्ति पत्र, थर्ड टॉपर- 50 हजार रूपए, लैपटॉप, मेडल और प्रशस्ति पत्र वे चौथे रैंक से

आनंद किशोर (बीएसईबी अध्यक्ष)

10वें रैंक तक के स्टूडेंट को10 हजार रूपए, लैपटॉप, मेडल और प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे। एक बार फिर से लड़कियों ने लड़कों को पीछे छोड़ दिया है। परीक्षा में 8,58,785 लड़कियां और 8,05,467 लड़के शामिल हुए थे। जिसमें से 6,99,549 लड़कियां और 6,80,293 लड़के पास हुए।

टॉप टेन में 51 स्टूडेंट, 11 लड़किया शामिल : बिहार बोर्ड ने जो रिजल्ट जारी किया है, उसमें टॉप टेन में 51 स्टूडेंट शामिल हैं। तीसरे स्थान पर चार परीक्षार्थी रहे हैं। इनमें सिमुलतला आवासीय विद्यालय जमुई के आदित्य कुमार न्यू अपग्रेडेड हाई स्कूल सिद्धपुर शाही लदनिया मधुबनी के सुमन कुमार पूर्वे, उच्च माध्यमिक विद्यालय हस्सेपुर एकमा सरण की पलक कुमारी और एसएमटी हाई स्कूल वैशाली की साजिया परवीन का नाम है। टॉप टेन में 10 में शामिल 26 परीक्षार्थियों में दो जमुई के सिमुलतला आवासीय विद्यालय के हैं। टाप 10 में 11 लड़कियां शामिल हैं। परीक्षा में कुल 4 लाख 52 हजार 302 छात्रों ने फर्स्ट डिवीजन पास किया है। जिसमें से दो लाख 52 हजार 846 लड़के और 1 लाख 99 हजार 456 लड़कियां हैं। इसी तरह

बिहार बोर्ड 10वीं रिजल्ट के टॉप 3 स्टूडेंड

रैंक 1 : शिवांकर कुमार, पूर्णिया, 489 अंक
रैंक 2 : आदर्श कुमार, समस्तीपुर, 488 अंक
रैंक 3 : आदित्य कुमार, जमुई, 486 अंक
रैंक 3 : सुमन कुमार पूर्वे, मधुबनी, 486 अंक
रैंक 3 : पलक कुमारी, हस्सेपुर एकमा, 486 अंक
रैंक 3 : सजिया परवीन, वैशाली, 486 अंक

सेकेंड डिवीजन छात्रों के पास होने की संख्या 5 लाख 24 हजार 965 है। जिसमें से दो लाख 52 हजार 121 लड़के और 2 लाख 572 हजार 844 छात्राएं हैं। आनंद किशोर ने कहा कि विगत वर्षों में शिक्षा व्यवस्था में काफी बदलाव आया है। शिक्षकों की बड़े पैमाने में नियुक्ति से शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार आई है। पिछले कई वर्षों से कई नए सॉप्टवेयर और आईटी टूल्स बिहार बोर्ड द्वारा विकसित किए गए हैं। टॉपर वैरिफिकेशन में इन एडवांड तकनीक का उपयोग किया जाता है।

3 से 9 अप्रैल तक स्क्रूटनी के लिए आवेदन : बिहार बोर्ड के अध्यक्ष आनंद किशोर ने बताया कि दसवीं के रिजल्ट से जो भी छात्र असंतुष्ट हैं, वे 3 अप्रैल से 9 अप्रैल तक स्क्रूटनी के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके अलावा कंपार्टमेंटल परीक्षा के लिए भी 3 अप्रैल से 9 अप्रैल तक आवेदन किया जाएगा। दसवीं की रिजल्ट के बाद विशेष परीक्षा और कंपार्टमेंटल परीक्षा होगी। विशेष परीक्षा उन छात्रों के लिए होती है जो किसी कारण से परीक्षा नहीं दे पाए थे। दो विषयों में फेल परीक्षार्थी कंपार्टमेंटल परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। समिति ने इनका रिजल्ट 31 मई तक जारी करने का लक्ष्य रखा है। इस बार से मैट्रिक विशेष परीक्षा और मैट्रिक कंपार्टमेंटल परीक्षा अलग-अलग होगी। जिन छात्रों को स्क्रूटनी के लिए अप्लाई करना होगा उन्हें 70 रुपए पर विषय के हिसाब से शुल्क देना होगा। बोर्ड ने कहा कि विशेष परीक्षा देने वाले छात्रों की मार्कशीट में कंपार्टमेंटल नहीं लिखा होगा।

प्रधानमंत्री ने मेरठ से चुनाव प्रचार का किया आगाज

पूरा देश कह रहा है की तीसरी बार मोदी सरकार, चार जून 400 पार : मोदी

भ्रष्टचारी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, जरूर होगा एक्शन

प्रात: किरण

मेरठ/ एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को उत्तर प्रदेश के मेरठ में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार का आगाज कर दिया। रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि पूरा देश कह रहा है की तीसरी बार मोदी सरकार, चार जून 400 पार। उन्होंने कहा कि अभी 10 साल में तो सिर्फ विकास का ट्रेलर दिखा है, अभी देश को बहुत आगे ले जाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं देश को भ्रष्टाचारियों से बचाने के लिए एक बहुत बड़ी लड़ाई लड़ रहा हूं, इसलिए बड़े-बड़े भ्रष्टाचारी आज सलाखों के पीछे हैं और सुप्रीम कोर्ट से भी उन्हें जमानत नहीं मिल रही है। प्रधानमंत्री ने चेतावनी देते हुए कहा कि भ्रष्टाचारी कान खोलकर सुन लें मोदी पर चाहे जितने भी हमले करें, ये मोदी है रूकने वाला नहीं है। भ्रष्टाचारी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, एक्शन होगा और जरूर होगा। जिसने देश को लूटा उसे लौटाना ही पड़ेगा, ये मोदी की गारंटी है। उन्होंने कहा कि जब मोदी पूरी ताकर के साथ भ्रष्टाचार की लड़ाई लड़ रहा, इन्होंने इंडी गठबंधन बनाया है। इन लोगों को लगता है कि इससे मोदी डर जाएगा लेकिन मोदी डरने वाला नहीं है। मेरा भारत मेरा परिवार है। अबतक कई भ्रष्टाचारी जेल जा चुके हैं। सुप्रीम कोर्ट से जमानत तक

नहीं मिल पा रही है। कहीं बिस्तर तो कहीं दीवारों से नोटों के ढेर निकल रहे हैं, वॉशिंग मशीन से नोट निकल रहे हैं। कांग्रेस पर हमला बोलते हुए पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस और इंडी अलांयस देश की अखंडता और एकता को तोड़ते रहे हैं। तमिलनाडु से कुछ किलोमीटर दूर एक टापू दीप है, ये द्वीप सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। देश आजाद हुआ हमारे पास था, लेकिन कांग्रेस ने चार पांच दशक पहले कह दिया यहां कुछ नहीं होता। मां भारती का एक अंग कांग्रेस ने काट कर भारत से अलग कर दिया। कांग्रेस के पाप का परिणाम है। मां भारती का टुकड़ा करने वाला इंडी गठबंधन देश का भला कर सकता है। जब भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था तब हर जगह गरीबी थी। जब भारत पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना, तब तक 25 करोड़ लोग गरीबी से उबर चुके थे। मैं गारंटी देता हूं कि एक बार ऐसा होने पर देश में एक मजबूत और सक्षम मध्यम वर्ग होगा। भारत अब तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

लोकतंत्र बचाओ नहीं, भ्रष्टाचार छुपाओ रैली है : भाजपा

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंस। दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया ब्लॉक की लोकतंत्र बचाओ रैली पर बीजेपी ने हमला बोला और कहा कि विपक्ष पुराने गुनाहों को छिपाने के लिए रामलीला मैदान में एकत्र हो रहा है। बीजेपी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने इसे परिवार बचाओ, भ्रष्टाचार छुपाओ रैली करार दिया है।

बीजेपी सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, आज यह कहा जा सकता है कि ये सभी पार्टियां जो राम मंदिर के विरोधी थीं, जिन्होंने हिंदू धर्म के सामूहिक विनाश जैसे संकल्प लिए, अपने पुराने अपराधों को छुपाने के लिए एक साथ इकट्ठा हो रहे हैं। इन्होने हिंदू धर्म के देवी-देवताओं पर कई आपत्तिजनक टिप्पणियाँ कीं, अपने भ्रष्टाचार के पुराने अपराधों को छिपाने के लिए रामलीला मैदान का उपयोग कर रहे हैं।

आज जब ये यहां एकत्र हो रहे हैं, तो मुझे लगता है कि अगर इसे एक शब्द में कहा जा सकता है, तो हिंदी में एक कहावत है, ह्यचोरी ऊपर से सीनाजोरी। त्रिवेदी ने कहा कि ये सभी हिन्दू विरोधी, सनातन विरोधी हैं। उन्होंने कहा, कई साल पहले इसी रामलीला मैदान में इंडिया अगेंस्ट करप्शन रैली हुई थी, लेकिन आज करप्शन करने वाले सभी एक साथ खड़े हो रहे हैं।

दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित लोकतंत्र बचाओ रैली में विपक्षी दिग्गजों का जुटान

विपक्ष ने दिखाई एकजुटता, केन्द्र सरकार को सत्ता से हटाने का लिया संकल्प

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। विपक्षी दलों के प्रमुख नेता रविवार को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में इंडिया समूह के नेतृत्व में जुटे और अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। इंडिया समूह ने भारतीय जनता पार्टी की कथित जन विरोधी नीतियों और तानाशाही के विरोध में लोकतंत्र बचाओ रैली का आयोजन किया जिसमें कांग्रेस समेत 28 पार्टियों के नेता शामिल हुए। लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों ने इस जनसभा का आयोजन दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी, भाजपा की

केंद्र सरकार की कथित तानाशाही, बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के विरोध में किया। महारैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जून खड़गे ने कहा कि संविधान और लोकतंत्र बचाने के लिए है। देश में निष्पक्ष चुनाव नहीं हो रहा है। श्री मोदी लोकतंत्र नहीं चाहते हैं। वह तानाशाही तरीके से देश को चलाना चाहते हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर लोकसभा चुनाव में फिक्सिंग करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले नेताओं को जेल में डाला जा रहा है। चुनाव कराने वाले अधिकारी बदल दिए गए हैं। बैंक खातों पर रोक लगा दी गई है और आयकर विभाग के माध्यम से डराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा संविधान बदलने की तैयारी कर रही है। इसलिए मोदी सरकार को हटाना आवश्यक है। अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने श्री केजरीवाल का पत्र पढ़ा और शिक्षा, स्वास्थ्य और बिजली की सुविधा सभी तक पहुंचाने समेत छह गारंटी दी। झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने कहा कि यह सरकार आदिवासियों के अधिकारों को खत्म कर रही है। श्री तेजस्वी यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने बेरोजगारी बढ़ाई है और किसानों को तबाह कर दिया है। उन्होंने मोदी सरकार पर ध्यान भटकने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा का संविधान में कोई विश्वास नहीं है। श्री उद्धव ठाकरे ने कहा कि देश को बचाने के लिए भाजपा को हराना जरूरी है। श्री डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करने के संघर्ष में उनकी पार्टी साथ है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा इस मैदान से एलान हो रहा है कि हुकमरान जो दिल्ली में बैठे हैं वह ज्यादा दिनों तक रुकने वाले नहीं है। अगर आपके चार सौ पार हो रहे थे तो अरविन्द केजरीवाल से घबराहट क्यों है। उन्होंने कहा कि भाजपा ब्रह्मांड की सबसे झूठी पार्टी है। सत्ता को बचाने के लिए अगर ईडी और सीबीआई को आगे कर रही है तो यह चार सौ पार नहीं चार सौ हारने वाली हैं। भाजपा ने ईडी और सीबीआई से डराकर सबसे अधिक चंदा वसूलने का काम किया है। अगर देश बचाना है इनको हराना होगा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार ने कहा कि केजरीवाल के खिलाफ के जिस तरह की कार्रवाई की गयी वह देश के संविधान और प्रजातंत्र पर जबरदस्त हमला है।

सुनवाई **निचली अदालत के आदेश को बरकरार रखने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को दी गई चुनौती**

तहखाने में पूजा की इजाजत को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई एक अप्रैल को

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। ज्ञानवापी मस्जिद प्रबंधन समिति की उस याचिका पर उच्चतम न्यायालय एक अप्रैल को सुनवाई करेगा जिसमें मस्जिद के दक्षिणी तहखाने में हिंदुओं को पूजा की अनुमति देने वाले निचली अदालत के आदेश को बरकरार रखने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती दी गई है। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ उच्च न्यायालय के 26 फरवरी के फैसले को चुनौती देने वाली अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी की याचिका पर सुनवाई करेगी। यह कमेटी वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद के मामलों

का प्रबंधन करती है। उच्च न्यायालय ने कमेटी की याचिका खारिज कर दी थी जिसमें उसने जिला अदालत के 31 जनवरी के आदेश को चुनौती दी थी। जिला अदालत ने अपने आदेश में हिंदुओं को तहखाने में पूजा करने की अनुमति दी थी। उच्च न्यायालय ने 26 फरवरी को मस्जिद कमेटी की याचिका को खारिज करते हुए कहा था कि ज्ञानवापी के दक्षिणी तहखाने में स्थित व्यास तहखाना के अंदर पूजा पाठ रोकने का उत्तर प्रदेश सरकार का 1993 का निर्णय अवैध था। उसने कहा था कि पूजा-पाठ को बिना किसी लिखित आदेश के राज्य की अवैध कार्रवाई द्वारा रोक दिया गया था और मस्जिद प्रबंधन कमेटी द्वारा दायर दो अपील खारिज कर दी थीं। कमेटी ने अपनी एक अपील में वाराणसी जिला न्यायाधीश के 17 जनवरी के उस आदेश को चुनौती दी थी जिसमें जिला मजिस्ट्रेट को व्यास तहखाने का रिसीवर नियुक्त किया गया था जबकि कमेटी ने दूसरी याचिका में 31 जनवरी के आदेश को चुनौती दी थी जिसके द्वारा न्यायाधीश ने वहां पूजा करने की अनुमति दी थी। उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि मस्जिद के व्यास तहखाना में पूजा जारी रहेगी, जो काशी विश्वनाथ मंदिर के निकट स्थित है। अदालत के आदेश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी थी कि ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान एक हिंदू मंदिर के अवशेषों पर किया गया था। जिला अदालत ने 31 जनवरी को फैसला सुनाया था कि एक हिंदू पुजारी मस्जिद के दक्षिणी तहखाने में मूर्तियों की पूजा कर सकता है। अब पूजा-अर्चना काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा नामित एक हिंदू पुजारी और याचिकाकर्ता शैलेन्द्र कुमार पाठक द्वारा की जा रही है। पाठक का दावा है कि उनके नाना सोमनाथ व्यास, जो एक पुजारी भी थे, ने दिसंबर 1993 तक तहखाने में पूजा-अर्चना की थी।

पीएम मोदी 4 अप्रैल को जमुई में करेंगे चुनावी सभा

प्रात: किरण

पटना/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 4 अप्रैल को जमुई में चुनावी सभा को संबोधित करेंगे। उक्त जानकारी लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने रविवार को दी। श्री चिराग ने कहा कि पार्टी कार्यकताओं के लिए यह गर्व की बात है कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 4 अप्रैल को बिहार में लोकसभा चुनाव प्रचार अभियान की शुरूआत जमुई से करने जा रहे हैं। इसके लिए मैं जमुई की समस्त देवतुल्य जनता की ओर से प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करता हूं। प्रधानमंत्री जी के इस निश्चय से हम सभी अभिभूत हैं। उन्होंने कहा, मेरे लिए सौभाग्य और गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री मोदी मेरे राज्य में चुनावी अभियान की शुरूआत मेरी ही कर्मभूमि जमुई से करने जा रहे हैं, अब यहां से अरुण भारती चुनावी मैदान में हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ना सिर्फ बिहार की सभी 40 सीटें जीतकर प्रधानमंत्री की झोली में डालेगी, बल्कि देश में 400 पार का लक्ष्य भी हासिल करेगी। जमुई से इस बार चुनाव अरुण भारती चुनाव लड़ रहे हैं। बता दें कि चिराग पासवान ने अपने हिस्से में आई बिहार की सभी पांच लोकसभा सीट के लिए शनिवार को उम्मीदवारों की घोषणा कर की थी जो राजग सहयोगी के रूप में चुनाव लड़ेंगे।

संक्षिप्त खबरें

प्रभु यीशु के पुनरुत्थान पर्व ईस्टर मनाया, किया गया प्रार्थना

पटना सिटी, पादरी की हवेली स्थित महागिरजाघर में रविवार को प्रभु यीशु के पुनरुत्थान का पर्व ईस्टर मनाया गया। चर्च के पल्ली पुरोहित फादर प्रवीण लोवो की देखरेख में धार्मिक कार्यक्रम मिस्सा बलिदान पूजा से शुरू हुई। इसके बाद प्रभु के वचन सुनाए गए। फिर प्रार्थना के बाद ईस्टर की बधाई दी गई। पल्ली पुरोहित फादर ने अपने संदेश में कहा कि प्रभु यीशु ने आज ही के दिन मृत्यु पर विजयी पायी थी। ऐसे में ईस्टर का यह त्योहार हमारे लिए आनंद, खुशी व आशा लेकर आती है। आयोजन में सहायक पल्ली पुरोहित फादर सुरेश खाका और सुप्रीयिर फादर प्रदीप सोरेंग, मिशनरी ऑफ चैरिटी व माता सदा सहायिका की धर्म बहनों के साथ अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष एम्ब्रोस पैट्रिक, अभिषेक पैट्रिक, पूजा एन शर्मा, विक्टर अल्फेंस, जॉर्ज पीटर, साइमन पीटर, कांता अल्फेंस, रिचर्ड रंजन, एडवर्ड अल्फेंस, चार्ल्स अल्फेंस, अग्नेस जेरेमी, अजीता कुजूर, अल्बर्ट माइकल, क्लेटस किस्पोट्टा, रोजमेंड जेरेमी, बैसिल लकड़ा, सनी केवी, एंथोनी राज आज मौजूद थे।

कोठिया ग्राम में मजदूर ने की खुदकुशी

पटना सिटी (प्राकि)। दीदारगंज थाना क्षेत्र के कोठिया गांव में एक मजदूर ने फांसी लगाकर अपनी इहलीला समाप्त कर ली। जब लोगों को घटना के बारे में जानकारी मिली तो पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा। सुसाइड करने वाले की पहचान नेपाल के परसा जिला के पोखरिया बटसौरा का रहने वाला रमाकांत शाह के पुत्र राधेश्याम कुमार (23) के रूप में हुई। जानकारी के अनुसार राधे श्याम कोठिया गांव में सुनील कुमार के मकान में बतौर किराएदार रहता था और यहीं पर स्टील कारखाना में मजदूरी का काम करता था। हालांकि खुदकुशी किए जाने का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। परिजनों के पहुंचने के बाद ही कारण स्पष्ट हो पाएगा। पुलिस को उसके कमरे से भी कोई सुसाइड नोट या आपत्तिजनक सामान भी नहीं मिला है।

इफ्तार पार्टी का आयोजन

फतुहा। रविवार को शहर के रायपुरा पठानटोली स्थित मस्जिद में पार्षद मो. मिन्टू भाई के सौजन्य से इफ्तार पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों रोजेदार उपस्थित हुए और रोजा इफ्तार किया। मौलाना ने सभी रोजेदारों के साथ अल्लाह तबारक व ताला के बारगाह में हाथ उठाकर मुल्क की अमनचैन के लिए दुआएं मांगी। इफ्तार पार्टी में मुस्लिम समाज के बड़े-बुजुर्ग, नौजवान व बच्चों ने बड़ी संख्या में शिरकत की। अजान सुनकर सभी रोजेदारों ने एक साथ रोजा इफ्तार किया। इस अवसर पर उपमुख्य पार्षद प्रतिनिधि बबन यादव ने कहा कि सभी रोजादारों को शुभकामना और ईद की अग्रिम शुभकामनाएं। मौके पर पार्षद संजीव कुमार बबलू, अजीत कुमार उर्फ पप्पू चंद्रवंशी, पार्षद प्रतिनिधि लक्ष्मण साह सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

मैट्रिक हाई स्कूल स्कूल टॉप बने आशुतोष कुमार, 470 नंबर प्राप्त कर फतुहा का नाम रोशन किया

फतुहा। बिहार बोर्ड द्वारा रविवार को मैट्रिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। जिसमें हाई स्कूल फतुहा के टॉपर आशुतोष कुमार ने 470 नंबर प्राप्त किया है। जानकारी अनुसार टॉपर आशुतोष कुमार के पिता पप्पू चौधरी चिकित्सक हैं और माता विभा देवी गृहणी है। आशुतोष दो भाई और दो बहनों में सबसे छोटे हैं। इनके टॉपर बनने पर मुख्य पार्षद रुपा कुमारी, प्रतिनिधि टुनटुन यादव, उपमुख्य पार्षद अंजनी कुमारी, प्रतिनिधि टुनटुन यादव, समाजसेवी सुधीर यादव, हाई स्कूल प्राचार्य सुभाष चंद्र, प्रधान लिपिक ठाकुर दिनेश कुमार सिंह, स्कूल के सभी शिक्षकों ने बधाई एवं शुभकामना दिया है।

अगमकुआं आरओबी पर बना ट्रेफिक पोस्ट को शरारती तत्वों ने तोड़ा

● मौसम की मार खा ड्यूटी करने को मजबूर पदा. व जवान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

यदि संबंधित थाना क्षेत्र के घर, दुकान, गोदाम व कार्यालय में चोरी की घटना होती है, तो संबंधित थाना की पुलिस को सूचना दी जाती है और बजाब्ता लिखित में आवेदन देकर मामला दर्ज कराया जाता है। पुलिस जांच-पड़ताल करती है। हालांकि चोरी के मामले में पुलिस के खाते में उपलब्धि नगण्य है। मगर जब पुलिस के लिए बने ट्रेफिक पोस्ट को ही शरारती तत्व क्षतिग्रस्त कर दे, तो फरियाद किससे की जाए। यह एक यक्ष प्रश्न बना हुआ है। अगमकुआं आरओबी से चार फ्लैंक चारों दिशा में गिरता है। इसमें एक दक्षिण में पहाड़ी की ओर, दूसरा पश्चिम में पुरानी बाइपास की ओर, तीसरा उत्तर में एनएमसीएच रोड की ओर और चौथा पूरब में तुलसी मंडी यानी गुलजारबाग स्टेशन रोड की ओर। चारों मुहाने के ऊपर केंद्र में अशोक स्तंभ एक पिलर पर बना है। इस आरओबी के बनने के काफी समय के बाद जब यातायात का दबाव बढ़ा और जाम लगने का सिलसिला शुरू हुआ, तब यहां ट्रेफिक के पदाधिकारी व जवान की तैनाती की गई। इसके बाद छोटा सा केबिननुमा पोस्ट बनाया गया। यहां पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी और ट्रेफिक के जवान बताते हैं कि पटना नगर निगम के महापौर सीता साहू जब इस रास्ते से गुजर रही थीं, तब उन सबों ने उनसे आग्रह कर एक पोस्ट बनवाने को कहा था। इसके बाद अल्युमिनियम बीट, शीट और शीशे की मदद से एक पोस्ट तैयार किया गया। मगर शरारती तत्वों ने वर्ष 2023 में इसमें लगे शीशे को तोड़ डाला। अंदर में रहे कुर्सी, पानी का जार सब लेकर भाग गया। इसके बाद भी सभी इसी में मौसम से बचने के लिए और अपनी ड्यूटी भी निभाते हुए काम कर रहे थे। मगर शरारती तत्वों को यह भी रास नहीं आया। होली के पूर्व असामाजिक और शरारती तत्वों ने पूरे पोस्ट को ही ढाह दिया। जब इस संवाददाता की नजर क्षत-विक्षत और बिल्कुल उजाड़ बने पोस्ट की ओर गया, तब वहां मौजूद ट्रेफिक के जवान से बात की। उन सबों ने बताया कि महापौर सीता साहू से आग्रह करने के बाद इसे बनाया गया था। धूप, बारिश और बर्फीली हवा से बचने में यह खासा मददगार था। पीने का पानी, लंच बॉक्स या कोई सामान भी वे सब अंदर रख दिया करते थे। मगर शरारती तत्वों को यह पसंद नहीं आया। मौजूद जवान ने कहा कि अब तो मौसम की मार खाते हुए ड्यूटी करनी पड़ रही है। अभी से ही पारा 35 डिग्री के ऊपर है। गर्म हवा के थपेड़े का सामना करना पड़ रहा है। पीने के पानी तक रखने की कोई व्यवस्था नहीं है और न ही लंच बॉक्स जो साथ लाते हैं, उसे ही रखा जाता है। बाद में अल्युमिनियम बीट और लगे दरवाजे को उन सबों ने सुरक्षित अगमकुआं स्थित शीतला माता मंदिर परिसर में होमगार्ड जवानों के कमरे में रखा गया, ताकि दोबारा अगर मेयर मैडम की कृपा बने, तो बची सामग्री काम आ सके। वरना सामाजिक तत्व रात में उसे भी ले जाकर बेच डालते। जब उनसे कहा गया कि इस संबंध में उन्होंने संबंधित थाना में मामला दर्ज क्यों नहीं कराया, तब उनका कहना था कि अपनी पीड़ा किससे कहें। इस रास्ते से पुलिस प्रशासन के वरीय अधिकारी, जनप्रतिनिधि, मंत्रीगण सभी गुजरते हैं। अगर शायद ही किसी ने हम सबों की परेशानियों पर बात करनी चाहिए हो। इन सबों का कहना था कि धनुष पुल यानी बहादुरपुर ओवरब्रिज के ऊपर में बना पुलिस पोस्ट अब तक सुरक्षित है। मगर इस ट्रेफिक पोस्ट को शरारती तत्वों ने पहले शीशा और सामान को क्षतिग्रस्त किया। दूसरी बार बिल्कुल ही उजाड़ कर दिया। इस ओर अगमकुआं, बाइपास और आलमगंज तीनों थाना की सीमा टकराती है, मगर तीनों थाना के थानाध्यक्ष ने भी इस क्षतिग्रस्त किए गए ट्रेफिक पोस्ट की सुध लेने की कोशिश नहीं की और न ही ऐसे शरारती तत्वों की पहचान कर गिरफ्तार करने और उस पर जुमार्ना लगाने का भी प्रयास नहीं किया।

कांग्रेस पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनिल शर्मा ने इस्तीफा दिया

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। कांग्रेस को एक बार फिर बड़ा झटका लगा है। पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनिल शर्मा ने इस्तीफा दे दिया है। वे बिहार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष हैं। इन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। दसअसल बिहार में सीट शेयरिंग के बाद से ही वे पार्टी से नाराज चल रहे थे। सीट बंटवारे में कांग्रेस को अधिकतर परंपरागत सीटें ही मिली हैं। वहीं औरंगाबाद और पूर्णिया की सीट नहीं मिलने से कांग्रेस कार्यकर्ता खासे नाराज चल रहे हैं। जानकारी के अनुसार अनिल शर्मा ने प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को पत्र भेज दिया है। उन्होंने अपने इस्तीफे की वजह बताते हुए कहा कि पप्पू यादव को कांग्रेस में शामिल करना उनके इस्तीफा देने की सबसे बड़ी वजह है। साथ ही उन्होंने कहा कि राजद और कांग्रेस का गठबंधन सही नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं 1998 से इस गठबंधन का विरोधी रहा हूं। उसी समय से कांग्रेस वोटकटवा पार्टी के रूप में जानी जाने लगी। अनिल शर्मा ने आगे कहा कि राजद के साथ गठबन्धन कांग्रेस के लिए घातक है। राजद पर हमला करते हुए पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राबड़ी देवी की सरकार में नरसंहार हुआ। बिहार में जंगल राज को पनपने देने में कांग्रेस से बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि सोनिया और राहुल के नेतृत्व में पार्टी सबसे कमजोर हुई। अध्यादेश फाड़ने वाले राहुल गांधी आज लालू के साथ गलबहियां लगा रहे हैं , मटन-भात खा रहें हैं। वहीं दिल्ली में हो रही महागठबंधन की रैली को लेकर अनिल शर्मा ने कहा कि आज दिल्ली में संविधान बचाओ रैली है लेकिन सोनिया गांधी के टेकओवर करने के बाद आंतरिक संविधान खत्म हो गया है। खड़गे बेचारा अध्यक्ष हैं उनकी नहीं चलती वो रिमोट कंट्रोल से कंट्रोल हो रहे हैं। राहुल गांधी को कश्मीर में मोहब्बत की दुकान खोलनी चाहिए, क्योंकि वहां एक समुदाय आतंक मचाए रहता है। वहां मोहब्बत की दुकान खोलें। जब तक दिल्ली में राहुल-सोनिया और बिहार में लालू-तेजस्वी रहेंगे, तब तक राजद और कांग्रेस का गठबंधन बना रहेगा। अगर लोकसभा चुनाव में महागठबंधन को चार-पांच सीटें आ गईं, तो तेजस्वी का जंगल राज आ जाएगा। उन्होंने कहा कि रामलला का आमंत्रण ठुकराना सोनिया गांधी का कदम सांप्रदायिक है। कांग्रेस के कथनी करनी में फर्क है। पप्पू यादव को महिमा मंडित किया गया। इसके पहले राहुल गांधी ने यूथ कांग्रेस में नियम बनाया था कि जिसके ऊपर कोई भी आपराधिक मामला होगा, उसे पार्टी में जगह नहीं दी जाएगी।

कार्यालय में तोड़फोड़ व नगद आदि की चोरी में तीन गिरफ्तार

चोरी गया कंप्यूटर का मॉनिटर, की-बोर्ड व बाइक बरामद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बाइपास थाना क्षेत्र के रानीपुर चकिया में स्थित सुनील कुमार के कार्यालय में घुसकर तोड़फोड़ किया गया था। साथ ही नगदी व कंप्यूटर का मॉनिटर, की-बोर्ड आदि की चोरी की गई थी। इस संबंध में बाइपास थाना में 25 मार्च को मामला दर्ज कराया गया था। पुलिस ने इस मामले में कार्रवाई करते हुए सीसीटीवी फुटेज एवं अन्य स्त्रोतों से मिली जानकारी के आधार पर 30 मार्च की रात घटना में संलिप्त तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। चोरी गया कंप्यूटर का मॉनिटर, की-बोर्ड और घटना में इस्तेमाल मोटरसाइकिल को जब्त किया गया है। यह जानकारी पटना सिटी के डीएसपी-2 गौरव कुमार ने प्रेस वार्ता के दौरान बाइपास थाना परिसर में दी। बताया गया कि इसी थाना क्षेत्र के रानीपुर चकिया टेंटसिटी रोड के सूरत भवन में सुनील कुमार का कार्यालय है। वह मूल रूप से समस्तीपुर जिला के विभूतिपुर थाना क्षेत्र के कापन के रहने वाले हैं। उनके द्वारा 25 मार्च को दिए गए लिखित आवेदन के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज किया। इसमें उन्होंने कहा था कि उनके कार्यालय में घुसकर करीब 23,051 रुपया नगद, एक मॉनिटर, एक की-बोर्ड चोरी कर लेने तथा ऑफिस में लगे टीवी व अन्य सामान को क्षतिग्रस्त कर दिया गया है। इसके बाद पुलिस ने अनुसंधान शुरू किया। घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज एवं अन्य स्त्रोतों से मिली जानकारी के आधार पर 30 मार्च की रात मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के रानीपुर पानी टंकी के पास बिट्टू कुमार उर्फ बंद्रा पिता रामजी यादव को उसके घर छापेमारी कर गिरफ्तार किया गया। साथ ही सख्ती से वहीं की गई पूछताछ के आधार पर उसके घर से कांड में चोरी गया कंप्यूटर का मॉनिटर एवं की-बोर्ड बरामद किया गया। घटना में इस्तेमाल मोटरसाइकिल को भी विधिवत जब्त किया गया। बिट्टू और बंद्रा की निशानदेही पर इस घटना में शामिल दो अन्य विधि विरुद्ध किशोर को भी निरुद्ध किया गया। बिट्टू के द्वारा स्वीकारोक्ति बयान में इस घटना में संलिप्तता स्वीकार करते हुए दो अन्य विधि विरुद्ध किशोर के साथ मिलकर घटना को अंजाम देने की बात कही गई। इस आधार पर उन दोनों को भी निरुद्ध किया गया।छापेमारी दल में पुलिस अवर निरीक्षक सह अपर थानाध्यक्ष संजय कुमार, एसआई इंद्रदेव यादव, अनिल कुमार सिंह, गृह रक्षक अमित कुमार व रामनिवास कुमार शामिल थे।

एनएमसी के स्थापना दिवस के पूर्व हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नालंदा मेडिकल कॉलेज का स्थापना दिवस समारोह दो अप्रैल को मनाया जाना है। इसे लेकर एनएमसीएच के सीएफडी कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन रविवार को किया गया। इसमें नालंदा मेडिकल कॉलेज के विभिन्न सत्र के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम पेश किए। इसमें सोलो डांस, ड्यूट्स सॉन्ग, सोलो सॉन्ग, नाटक, कविता, शायरी, हास्य व्यंग्य आदि पेश किया गया। इसमें छात्र-छात्राओं ने अपनी कला का बखूबी प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राचार्य डॉप्रो उषा कुमारी ने किया। निर्णायक के रूप में डॉ रश्मि प्रसाद, प्रो आरआर दास, डॉ संध्या कुमारी, डॉ अनीता कुमारी एवं डॉ अशोक कुमार थे। इस आयोजन में अधीक्षक डॉ अलका सिंह, उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार, प्रो मोतीलाल दास, डॉप्रो बीपी जायसवाल एवं अन्य चिकित्सक के अलावा मेडिकल के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे और कार्यक्रम को सफल बनाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की कड़ी में छात्र-छात्राओं ने जोरदार तालियों से डॉ आरआर दास एवं डॉप्रो मोतीलाल दास का स्वागत किया, जब दोनों ने बेहतर ढंग से गायन की प्रस्तुति दी। अंत में सोलो डांस में आनंदिता और प्रेरणा मिश्रा प्रथम, आयुषी प्रिया द्वितीय, ड्यूट डांस में प्रथम रानी प्रसाद, एसपी शिवानी, द्वितीय अभिषेक शर्मा, यश चौधरी, ग्रुप डांस में यशी एंड ग्रुप, समूह में प्रथम शमशेर, द्वितीय अनिरुद्ध, ओपेन माइक में प्रथम अंजली प्रिया एवं द्वितीय आयुष बसाक रहे।

दिल्ली में लगा भ्रष्टाचारियों व परिवारवादियों का जमावड़ा : प्रभाकर मिश्र

अपनी हार तय देख चुनाव के पहले ही ईवीएम पर फोड़ रहे ठीकरा

पटना, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडी गठबंधन की रैली पर प्रहार करते हुए कहा कि यह किसी गठबंधन की राजनीतिक रैली नहीं, बल्कि भ्रष्टाचारियों और परिवारवादियों का जमावड़ा था। यह रैली भ्रष्टाचारियों को बचाने के लिए आयोजित की गई थी। श्री मिश्र ने रविवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि रैली में सभी भ्रष्टाचारियों के बीच एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ दिखी। दिल्ली के सीएम की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने मंच से अरविंद केजरीवाल का संदेश पढ़ते हुए अनेक वायदे किए और कहा कि सरकार बनने पर यह सब पूरे किए जाएंगे। इससे कांग्रेस के युवराज की परेशानी पर पसीने आ गए। लगा कि कहीं केजरीवाल बाजी न मार लें। श्री मिश्र ने कहा कि असल में यह रैली परिवारवादियों के लिए लांचिंग रैली थी, जिसके माध्यम से सुनीता केजरीवाल और कल्पना सोरेन को राजनीति में उतारा गया। परिवारवादियों के लिए यह परिवारवाद को बढ़ावा देने का एक अवसर था। प्रवक्ता ने कहा कि इंडी गठबंधन के नेता अपनी हार निश्चित देखकर पहले से ही अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने में जुट गए हैं। बिहार के एक नेता, जिनका परिवार पशुओं का चारा खा गया, उनके मुंह से किसानों की बात सुनना हास्यास्पद है। यह रैली भ्रष्टाचारियों का सबसे बड़ा शो साबित हुआ, जिसमें जनता की भागीदारी नहीं थी।

खतश्री पटना साहिब के सेवादार भगत सिंह का निधन, अरदास

प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के सेवादार भगत सिंह का बीमारी के बाद देहांत हो गया। वह 70 वर्ष के थे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। इस मौके पर प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की ओर से गुरु महाराज के पास ज्ञानी अमरजीत सिंह द्वारा अरदास की गई एवं सरोपा ओढ़ा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। साथ ही वैशाली जिले के पेटतीक गांव शिवनगर के लिए रवाना किया गया। उनके अंतिम संस्कार के लिए उनका परिवार भी साथ गया है। इस मौके पर तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह, अधीक्षक दलजीत सिंह, मैनेजर हरजीत सिंह, लेखापाल देवेंदर सिंह, गुरजीत सिंह भोगल, मनजीत सिंह, शेखू मेजर सिंह, सुरजीत सिंह सोनू, तनवीर सिंह, पुत्र राजीव सिंह, सुखविंदर सिंह आदि कर्मचारी उपस्थित थे। कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, सचिव हरबंश सिंह, वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरविंदर सिंह के अलावा सेवादार कल्याण समिति के अध्यक्ष तेजेंदर सिंह बंटी, पूर्व अध्यक्ष बलराम सिंह, संरक्षक त्रिलोक सिंह, दीपक सिंह, अजायब सिंह आदि ने भी सेवादार भगत सिंह के निधन पर शोक जताते हुए गुरु महाराज से उन्हें चरणों में वास देने की प्रार्थना की।

राज्य की 826 महिलाओं ने सब डर्मल इम्प्लांट लगाकर दिया समुदाय में सकारात्मक संदेश

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- राज्य में केवल 7 महीने में 826 महिलाओं ने सब डर्मल इम्प्लांट लगवाकर आम लोगों के बीच सकारात्मक संदेश दिया है. राज्य में पिछले वर्ष सितंबर माह से परिवार नियोजन के लिए लंबी अवधि के अस्थायी साधन के रूप में यह नया विकल्प लाभार्थियों के लिए उपलब्ध कराया गया है. अभी राज्य के दो जिले पटना एवं भागलपुर के 4 अस्पतालों में फिलहाल यह सुविधा उपलब्ध है. सब डर्मल इम्प्लांट परिवार नियोजन कार्यक्रम में उपलब्ध अस्थाई साधनों की सूची में शामिल है. यह लंबे समय के लिए इस्तेमाल होने वाले गर्भनिरोधक और बेहतर प्रजनन स्वास्थ्य के साथ अनचाहे गर्भधारण के खतरे को कम करता है. इम्प्लांट की शुरूआत अस्थायी गर्भनिरोधक के उपलब्ध विकल्पों की सूची में सिर्फ इजाफा ही नहीं, बल्कि बेहतर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य की मजबूत आधारशिला तैयार करने में कारगर साबित होती है. इसलिए इसके इस्तेमाल को लेकर अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है. फैमिली प्लानिंग काउंसलर के माध्यम से काउंसलिंग के बाद एक्सपर्ट द्वारा इसे इम्प्लांट किया जाता है. सब डर्मल इम्प्लांट लगाने की सुविधा फिलहाल देश के चुनिन्दा दस राज्यों यथा बिहार, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, राजस्थान, गुजरात एवं दिल्ली में उपलब्ध है. बिहार में जिन दो जिले पटना एवं भागलपुर में इम्प्लांट लगाने की सुविधा मौजूद है, उनमें पटना में पीएमसीएच और गुरु गोविन्द सिंह मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल तथा भागलपुर में सदर अस्पताल, भागलपुर एवं जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल शामिल है. 826 महिलाओं सब डरमल इम्प्लांट पर जताया भरोसाः राज्य में पिछले सात महीने में अभी तक 826 महिलाओं ने परिवार नियोजन के लिए सब डर्मल इम्प्लांट पर भरोसा किया है. पटना स्थित पीएमसीएच में 285 तथा गुरु गोविन्द सिंह मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में 280 लाभुकों को इम्प्लांट लगाया गया है. इसी तरह भागलपुर सदर अस्पताल में 149 एवं जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में 112 लाभुकों ने अपने परिवार को सीमित करने के लिए सब डर्मल इम्प्लांट पर भरोसा जताया है. काउंसलिंग से स्वीकार्यता में आयी है तेजी पीएमसीएच के स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की चिकित्सक तथा सब डर्मल इम्प्लांट की मास्टर ट्रेनर डॉ. रानू सिंह ने बताया कि अगर कोई महिला बीच में ही गर्भधारण करना चाहती है तो वह इसे निकालने के कुछ दिनों में ही गर्भधारण के लिए तैयार हो जाती है. यही विशेष सुविधा इसे अन्य उपलब्ध अस्थायी साधनों की तुलना में खास बनाता है. यदि कोई महिला गर्भधारण में प्राथमिकता के आधार पर तीन साल की देरी चाहती है, तो इसमें सब डर्मल इम्प्लांट प्रभावी है. इससे करीब तीन वर्षों तक महिला अनचाहे गर्भ से सुरक्षित रह सकती है. उन्होंने बताया कि काउंसलिंग के दौरान सब डर्मल इमप्लांट के प्रति कई महिलाएं उत्साहित दिख रही हैं. कॉपर-टी के बाद सब डर्मल इम्प्लांट दूसरा अस्थायी गर्भनिरोधक साधन है जो लंबे समय के लिए है।

फ्लैट का ताला तोड़ चोरों ने चोरी की घटना को दिया अंजाम

अजीमाबाद कॉलोनी से महिला बेटी सहित अगवा, मामला दर्ज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अगमकुआं थाना क्षेत्र के बौद्ध विहार कॉलोनी में फ्लैट का ताला तोड़कर चोरों ने एक बार फिर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। वहीं आलमगंज थाना क्षेत्र के अजीमाबाद कॉलोनी के रहने वाले व्यक्ति ने पत्नी एवं दो साल की बेटी को अगवा किए जाने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया है। अगमकुआं थाना क्षेत्र के बौद्ध विहार कॉलोनी में अमोद कुमार के फ्लैट का ताला तोड़कर चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया। बताया जाता है कि करीब तीन लाख रुपए के जेवरात की चोरी कर ली गई। दरअसल अनिल कुमार सिंह के फ्लैट में बतौर किराएदार अमोद कुमार रहते हैं। होली मनाने के लिए वह परिवार के साथ नालंदा गए हुए थे। फ्लैट में ताला बंद था। चोरों ने ताला तोड़कर दीवान पलंग के अंदर रखे सोने-चांदी के जेवरात सहित अन्य सामान चोरी कर लिया। इस संबंध में मामला दर्ज कर पुलिस छानबीन कर रही है। वहीं आलमगंज थाना क्षेत्र के अजीमाबाद कॉलोनी में रहने वाले मुस्ताक अहमद ने अपनी पत्नी और दो साल की बेटी को अगवा किए जाने का आरोप लगाया है। इस संबंध में उन्होंने आलमगंज थाना में मामला दर्ज कराया है। इसमें अनेक लोगों को आरोपी बनाया गया है। पुलिस का कहना है कि उन्होंने नवीन नगर ससुराल के पड़ोसी मो फिरोज आलम सहित अन्य पर पत्नी व बेटी को साजिश के तहत अगवा किए जाने का आरोप लगाया है। पुलिस को बताया गया कि आरोपी फिरोज पत्नी को डरा-धमका कर और प्रलोभन देकर शादी के लिए दबाव बनाया करता था।

पर्वों को लेकर पुलिस प्रशासन रहेगा चौकस, आप सभी का मिले सहयोग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

● ईद, चैत्र नवरात्र, छठ व रामनवमी को ले शांति समिति की बैठक

ईद, चैती नवरात्र, छठ एवं रामनवमी को लेकर सुलतानगंज थाना परिसर में शांति समिति की बैठक रविवार को हुई। इसकी अध्यक्षता करते हुए थानाध्यक्ष अजय कुमार ने शांति समिति के सदस्यों को कहा कि लोकसभा चुनाव के कारण आचार संहिता लागू है। ऐसे में आयोजकों को किसी कार्यक्रम में राजनीतिक पोस्टर लगाना प्रतिबंधित रहेगा। ईद के मौके पर दो दिन पूर्व से एवं खासकर चांद रात के दिन गली-मोहल्ले की दुकान में खरीदारी को देखते हुए महिला एवं पुरुष पुलिस गश्ती रात भर रहेगी। शनिचरा ईदगाह, शाह अरजा मस्जिद दरगाह, नौघरवा मस्जिद, जमात ए इस्लामी मस्जिद एवं शिया समुदाय के पत्थर की मस्जिद आदि में विभिन्न समय पर नमाज अदा की जाएगी। सभी मस्जिदों के आसपास ब्लीचिंग पाउडर, चूना का छिड़काव एवं सफाई रहेगी। नमाजियों का ध्यान रखते हुए सभी चौक-चौराहे पर पुलिस बल की तैनाती रहेगी। चैती छठ को ध्यान रखते हुए लॉ कॉलेज घाट, घघा घाट, रौशन घाट, चौधरी टोला एवं बीएनआर घाट, पथरी घाट पर छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं का ध्यान रखते हुए सभी आने-जाने वाले रास्ते एवं घाटों की साफ-सफाई, लाइटिंग, गोताखोर के साथ पुलिस बल की विशेष व्यवस्था रहेगी।

रामनवमी में शोभायात्रा के लिए थाना स्तर से तीन अप्रैल तक लाइसेंस लेना आवश्यक है। बिना लाइसेंस के शोभायात्रा निकालना सख्त मना है। शोभायात्रा में डीजे बजाना सख्त मना है। डीजे बजते पाए जाने पर जब्त कर लिया जाएगा। चैती दुगार्पूजा को देखते हुए सप्तमी, अष्ठमी एवं नवमी को सभी मंदिरों के नजदीक पुलिस की तैनाती एवं गश्ती रहेगी तथा दशमी के दिन विर्सजन में पुलिस की स्कॉट पार्टी साथ रहेगी। बैठक में वार्ड पार्षद बैजू लाल दास, आरजू बेगम, शांति समिति के सदस्यो में गणेश कुमार, रमेश रजक, बसी अख्तर, विश्वनाथ पाण्डेय, अंजुम आलम, अरुण सिन्हा, मो इरशाद बहादुर, मो गुलाब, नीरज मेहता आदि शामिल थे।

केस थाने से वापस नहीं लेने से नाराज एक बदमाश ने व्यक्ती को गोली मारी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। थाना क्षेत्र अंतर्गत इमलीतल इलाके में एक व्यक्ति द्वारा छेड़खानी का केस थाने से वापस नहीं लेने से नाराज बदमाश ने व्यक्ती को गोली मारकर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। बदमाश उस समय वारदात को अंजाम दिया जब वह अपने प्रतिष्ठान में आराम कर रहे थे। मामला रविवार की दोपहर इमलीतल इलाके की है। जख्मी इमलीतल का रहने वाला विनोद राय है जिन्हे बांह में गोली लगी है, परिजनों ने पटना के पीएमसीएच में इलाज के लिए भर्ती कराया है। वहीं वरदात के बाद राहुल कुमार नामक बदमाश फरार होने में कामयाब हो गया। जख्मी विनोद कुमार ने बताया कि उनका विशाल रथ नामक प्रतिष्ठान है जिसे वह शादी विवाह के मौके पर चलाते है। रविवार की दोपहर वह खाना खाकर अपने प्रतिष्ठान में लेटे हुए थे तभी इमलीतल इलाके का रहने वाला राहुल कुमार हाथ में कट्टा लेकर आया और उनपर गोली चला दी। गोली उनके बाएं बांह में जा लगी। दूसरी गोली मारने के लिए वह कट्टा में गोली लोड करने लगा वह जोर जोर से शोर मचाने लगे। आसपास के लोग शोर सुनकर वहां पहुंचने लगे तो लोगों को देख वह फरार हो गया। जख्मी ने बताया कि आरोपी राहुल अपराधी किस्म का है वह उनकी पुत्री के साथ छेड़खानी करता था। जिसको लेकर उसके खिलाफ दानापुर थाने में मामला दर्ज कराया था। उस मामले में वह जेल भी गया था। जेल से छूटने के बाद वह केस उठाने की लगातार धमकी दे रहा था। इस संबंध में दानापुर थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भारद्वाज ने बताया कि थाना क्षेत्र के इमलीतल इलाके में रहने वाले विनोद राय पर राहुल कुमार नामक बदमाश ने गोली मार दी है। गोली विनोद के बाह में लगी है। जख्मी को इलाज के लिए दानापुर अनुमंडल अस्पताल भेजा गया जहा से उसे पीएमसीएच रेफर कर दिया गया है।

ट्रेन के बोगी से एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। खगौल रेल पुलिस ने सिकंदराबाद डाउन ट्रेन के बोगी से एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया। इसके साथ ही दानापुर-नेउरा के किलोमीटर संख्या 557/ 29- 30 के बीच एक वृद्ध का शव बरामद किया। जिसकी उम्र करीब 70 वर्ष प्रतित होती है। किसी चलती ट्रेन के चपेट में आने से मौत होना लगता है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया। इस संबंध मे यूडी कांड दर्ज किया गया है। वही सिकंदराबाद डाउन ट्रेन के जनरल बोगी सीट के नीचे से एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया है। जिसकी छानबीन में रेल पुलिस लगी है। दानापुर। रात भर विधुत आपूर्ति बाधित रहने से परेशान खगौल के आदमपुर के लोगो ने विद्युत उप केंद्र के गाड़ी खाना कार्यालय के समक्ष विरोध प्रदर्शन किया। लोग विधुत आपूर्ति बहाल करने की मांग की। बताया जाता है कि शनिवार को लखनीबीघा पंचायत के आदमपुर गांव में रात भर विद्युत की आपूर्ति बंद रहा। जिससे ग्रामीणों में नाराजगी व्याप्त हो गया। विरोध प्रकट करते हुए ग्रामीण गजेंद्र कुमार, राजू कुमार आदि ने बताया कि करीब एक पखवाड़ा पूर्व बिजली विभाग द्वारा इलाके में केबल लगाने का काम चल रहा था। घर से केबल खींचने को लेकर ग्रामीण ने विरोध किया था। जिस पर केबल लगाने वाला ठेकेदार और उसके मिस्त्र द्वारा दूसरे ग्रामीण के छत पर केबल रख कर वही से विद्युत की अपूर्ति गाँव मे शुरू कर दिया था। रात में उस केबल में स्पार्क किया।

विपक्षी दलों ने दिल्ली में भरी हुंकार, भाजपा व जदयू ने कसा तंज

मोदी की आंधी से डरे-सहमे हैं इंडी गठबंधन के नेता : सम्राट

उपमुख्यमंत्री ने कहा- राजद का बिहार में नहीं खुलने वाला है खाता

पटना। उपमुख्यमंत्री सह बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने रविवार को दिल्ली में आयोजित इंडी गठबंधन की महारैली को सुपर फ्लॉप बताते हुए कहा कि इंडी गठबंधन के भ्रष्टाचारियों ने दिल्ली में जमावड़ा लगा कर चुनाव से पहले ही अपनी हार स्वीकार कर ली है। पूरे देश में चल रही मोदी की आंधी से इंडी गठबंधन के तमाम नेता डरे-सहमे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में जुटे नेताओं का एक मात्र मकसद भ्रष्टाचार के खिलाफ हो रही कार्रवाई से अपने और अपने परिवार को बचाना है। देश की जनता सब कुछ समझ रही है और वह पूरी मजबूती के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ है। मोदी की गारंटी है कि चाहे वह कोई भी भ्रष्टाचारी हो, कानूनी कार्रवाई से बच नहीं सकता है। तेजस्वी यादव का डरना स्वाभाविक है। कानून की गिरफ्त से सोरेन और केजरीवाल की तरह वह भी बचने वाले नहीं है। श्री चौधरी ने कहा कि भ्रष्टाचार के अनेक मामलों में सजायाफ्ता लालू यादव के कुनबे में बेचैनी स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार जनित बेशुमार बेनामी सम्पत्ति इकट्ठा करने के आरोपी तेजस्वी यादव की रुदाली का जनता पर कोई असर नहीं होने वाला है। पिछली बार की तरह इसबार भी बिहार में राजद का खाता नहीं खुलने वाला है।उन्होंने कहा कि अबकी बार एनडीए 400 पार का जनता संकल्प ले चुकी है। एनडीए बिहार की सभी 40 सीटें जीत कर नरेंद्र मोदी को तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाएगा। भाजपा भी पूरे देश में 370 सीटों का आंकड़ा पार करेगी।

देश में लागू हो चुका है अघोषित आपातकाल : तेजस्वी

कहा- नागपुरिया कानून लागू करना चाहते हैं भाजपा के लोग

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल राजद के नेता तेजस्वी यादव ने रविवार को केंद्र सरकार पर अघोषित आपातकाल लागू करने का आरोप लगाया और दावा किया कि मोदी की गारंटी चाइनीज माल वाली गारंटी है जो सिर्फ चुनाव तक रहेगी। उन्होंने इंडिया गठबंधन की लोकतंत्र बचाओ महारैली में 1990 के दशक की फिल्म साजन चले ससुराल के गाने तुम तो धोखेबाज हो का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तंज कसा। बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री ने कहा, तुम तो धोखेबाज हो, वादा करके भूल जाते हो, रोज-रोज मोदी जी ऐसा करोगे, जनता रूठ जाएगी तो हाथ मलोगे। तेजस्वी यादव ने कहा, रैली में जुटी भीड़ से पता चलता है कि मोदी जी जिस तरह से आंधी की तरह आए थे, उसी तरह तूफान की तरह चले जाएंगे हम जहां जा रहे हैं, जनता का साथ मिल रहा है हम लोकतंत्र, संविधान और भाईचारे को बचाने के लिए एकत्र हुए हैं। उन्होंने कहा, देश को बांटा जा रहा है, भाई को भाई से लड़ाया जा रहा है। इसलिए हम आपकी लड़ाई लड़ रहे हैं। यादव ने कहा, लोग 400 पार का नारा लगाते हैं, वे कुछ भी बोल सकते हैं। लेकिन जनता मालिक है और जनता को तय करना है कि कौन शासन करेगा। उन्होंने दावा किया कि 400 पार का नारा ऐसे लगाया जा रहा है कि जैसे ईवीएम में पहले ही सेटिंग हो चुकी है। राजद नेता ने आरोप लगाया, देश में अघोषित आपातकाल लागू हो चुका है। सत्ता में बैठे लोग तानाशाहीपूर्ण रवैया अपना रहे हैं, घमंडी हो गए हैं देश में सबसे बड़ी दुश्मन बेरोजगारी और महंगाई है। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा, मोदी जी प्रियंका चोपड़ा से मिलेंगे, किसानों से नहीं मिलेंगे। मोदी जी अब बिल गेट्स को बुलाकर साक्षात्कार दे रहे हैं। यादव ने कहा, हम लोग डरने वाले नहीं हैं। पिंजरे में शेर को कैद किया जाता है। कंस के राज में जब तकलीफ होती थी तो लोगों को जेल में डाल दिया जाता था। उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा, ये लोग यूरिया को चीनी बना देते हैं, गोबर को हलवा बना देते हैं और आंख फोड़कर चश्मा देते हैं। तेजस्वी यादव ने दावा किया, मोदी जी की गारंटी चाइनीज माल वाली गारंटी है। जब तक चुनाव है तभी तक यह गारंटी है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा के लोग नागपुरिया कानून और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एजेंडे को लागू करना चाहते हैं।

रैली के जरिये भ्रष्टाचारियों की वकालत कर रहा इंडी गठबंधन : मंगल

कहा- मुंगेरीलाल के हसीन सपने देख रहा विपक्ष

पटना। दिल्ली के रामलीला मैदान में विपक्षी पार्टियों के जुटान को स्वास्थ्य एवं कृषि मंत्री मंगल पांडेय ने चोरी और सीनाजोरी बताया है। श्री पांडेय ने कहा कि एक ओर जहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भ्रष्टाचार मिटाने में लगे हुए हैं, वहीं आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा कुनबा भ्रष्टाचारियों को बचाने की वकालत कर रहा है। यह रैली कोई विकास के लिए नहीं है, या फिर चुनावी सभा नहीं, बल्कि हाल ही में जेल गए दो मुख्यमंत्री और चहेतों के प्रति सहानुभूति है। भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई से इंडी गठबंधन के नेता बौखला गये हैं। यही कारण है कभी एक-दूसरे के धुर विरोधी रहे नेता मंच साझा करने से गुरेज नहीं कर रहे हैं। श्री पांडेय ने कहा कि 2024 में देश की जनता इंडी गठबंधन की गलतियों को कतई माफ नहीं करेगी। आरदणीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है और नित नये आयाम गढ रहा है। भ्रष्टाचारियों और विपक्षियों को छोड़ देश और दुनिया भी प्रधानमंत्री का गुणगान कर रहा है। दुनिया के एक चर्चित पत्रिका में छपे एक लेख में प्रधानमंत्री की लोकप्रियता का जिक्र करते हुए कहा है कि भारत के शिक्षित मतदाताओं के साथ-साथ दुनियाभर के नेताओं के बीच उनकी स्वीकार्यता काफी ज्यादा है। इसमें उनकी लोकप्रियता की एक वजह भारत की अर्थव्यवस्था का बेहतरीन प्रदर्शन है। श्री पांडेय ने कहा कि इंडी गठबंधन का अब कोई औचित्य नहीं रह गया है। जाहिर है कि इसमें शामिल घटक दलों ने गठबंधन धर्म का पालन नहीं किया है। स्वार्थ के लिए बना यह गठबंधन बनने के बाद से ही बिखरना शुरू हो गया था और आज भी इनके रिश्तो में खटास है। यह अलग बात है कि मंच साझा कर मोदी हटाओ का मुंगेरीलाल के हसीन सपने देख रहे हैं, लेकिन स्थिति यह है कि इनके दल मिले हैं। दिल कभी नहीं मिल सकता। इस बार देश की जनता प्रधानमंत्री के संकल्प अबकी बार, चार सौ पार को पूरा कर एक बार फिर एनडीए की सरकार बना नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनायेगी।

सत्ता की लालच में लोकतंत्र को रौंद रहा विपक्ष : उमेश

कहा- रामलीला मैदान में एकजुट हुए सारे भ्रष्टाचारी

पटना। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित विपक्ष की रैली पर करारा हमला बोला। उन्होंने रविवार को तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि जनता की गाढ़ी कमाई लूटने वालों के खिलाफ कार्रवाई होने से देश का विपक्ष बौखलाया हुआ है इसलिए एक भ्रष्टाचारी को बचाने के लिए सारे भ्रष्टाचारी रामलीला मैदान में एकजुट हुए हैं। श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि रामलीला मैदान के मंच पर बैठे विपक्ष के ज्यादातर नेताओं पर भ्रष्टाचार के संगीन आरोप हैं और कई नेता जमानत पर बाहर घूम रहें हैं। ईडी ने अरविन्द केजरीवाल को पूछताछ के लिए नौ समन जारी किए थे लेकिन उन्होंने कानून की धज्जियां उड़ाते हुए सारे समन को नजरअंदाज किया और जांच में सहयोग नहीं की। माननीय उच्च न्यायालय ने अरविन्द केजरीवाल की गिरफ्तारी पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। चुकी सारा विपक्ष भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है इसलिए ये लोग भ्रष्टाचारी का समर्थन में उतर गए हैं। हमारा स्पष्ट रूप से मानना है कि जिन लोगों ने भी जनता को लूटने का काम किया है उसके खिलाफ जांच एजेंसियों को कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों में जेल में बंद श्री अरविन्द केजरीवाल ने अब तक अपने पद से इस्तीफा नहीं दिया है, यह स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत नहीं है। सत्ता की लौलुपता में विपक्ष लोकतंत्र की मूल्यों को रौंद रहा है। इस तरह की निम्नस्तरीय राजनीति से भारत का महान लोकतंत्र कलंकित होगा।

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनिल शर्मा ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा ने रविवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। शर्मा ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन कर कहा कि उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को अपना इस्तीफा भेज दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने बिहार में राजद के साथ सोनिया-लालू और राहुल-तेजस्वी के जीवनकाल तक के लिए स्थाई समझौता कर लिया है। बिहार में राजद कांग्रेस पार्टी को एक साथी या सहयोगी के तौर पर नहीं बल्कि एक परजीवी भिखारी के रूप में देखता है । इसलिए अब बिहार में पार्टी का कोई भविष्य नहीं रह गया है। कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि सीट बंटवारे की वजह से बिहार में पार्टी के कार्यकर्ताओं में निराशा है। कांग्रेस को ऐसी सीटें दी गई हैं, जहां जीतना मुश्किल है जबकि आसानी से जीतने वाली सीटें पार्टी से छीन ली गई हैं। उन्होंने कहा कि राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने कांग्रेस को सोची-समझी रणनीति के तहत कमजोर सीटें दी हैं ताकि बिहार में कांग्रेस हाशिये पर ही रहे। दसअसल, बिहार में सीट शेयरिंग के बाद से ही यह पार्टी से नाराज चल रहे थे। सीट बंटवारे में कांग्रेस को अधिकतर परंपरागत सीटें ही मिली है। वहीं औरंगाबाद और पूर्णिया की सीट ना मिलने से कांग्रेस कार्यकर्ता नाराज चल रहे हैं। जानकारी अनुसार अनिल शर्मा ने प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को लेटर भेज दिया है। वहीं अनिल शर्मा ने अपने इस्तीफे की वजह भी बताई है। उन्होंने कहा कि, पप्पू यादव को कांग्रेस में शामिल करना मेरे इस्तीफा देने की सबसे बड़ी वजह है। साथ ही उन्होंने कहा कि, राजद और कांग्रेस का गठबंधन सही नहीं है। उन्होंने कहा कि 1998 से गठबंधन का विरोधी रहा हूं। उसी समय से कांग्रेस वोटकटवा पार्टी के रूप में जानी गई।

वंचितों के विकास से घबराहट में हैं महागठबंधन के नेता : जनक

- बोलें- खास जाति को अपमानित कर गौरवान्वित महसूस करते हैं राजद के लोग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के मंत्री और भाजपा के मुख्य प्रवक्ता जनक राम ने रविवार को कहा कि महागठबंधन के नेता हाल के वर्षों में कमजोर वर्ग के लोगों के हो रहे विकास से घबराहट में हैं, यही कारण है कि एससी, एसटी और कमजोर वर्ग,खास कर एक खास जाति को अपमानित कर रहे है।

श्री राम ने कहा कि राजद के नेता पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के घर से निकलते वक्त जिस तरह एक खास जाति के अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया उससे प्रदेश का रविदास समाज मर्माहत है। भाजपा के मीडिया सेंटर में एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए मंत्री श्री राम ने कहा कि इसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद, राबड़ी देवी और पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को देश के रविदास समाज के लोगों से माफी मांगनी चाहिए। राजद को बिहार जलाओ पार्टी बताते हुए उन्होंने कहा कि इस पार्टी के लोगों को एक जाति के लोगों को अपमानित करना इनकी आदत बन गई है। उन्होंने यह भी कहा कि वे भूल जाते है कि अब यह 90 का दशक नहीं है। आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी संविधान निमार्ता आंबेडकर जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के सपने को पूरा कर रहे हैं। श्री राम ने कहा कि राजद के लोग खास जाति को अपमानित कर गौरवान्वित महसूस करते है। उन्होंने कहा कि जिस तरह तेजस्वी को पूर्व मुख्यमंत्री के पुत्र होने पर गर्व है, उसी तरह मुझे भी इस समाज में, जाति में पैदा होने पर गर्व है। आज प्रदेश में सुशासन की सरकार चल रही है। आज बिहार के सर्वमान्य नेता नीतीश कुमार और केंद्र में सर्वमान्य नेता नरेंद्र मोदी की सरकार कमजोर वर्ग के लोगों के विकास में लगे हैं तो इन्हें घबराहट हो रही है। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि अब तक राजद के नेता के बयान का लालू प्रसाद, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव ने खंडन क्यों नहीं किया। उन्होंने पत्रकारों के एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि दिल्ली के रामलीला मैदान में जो रैली हो रही है, वह परिवार बचाओ रैली है। प्रदेश भाजपा के मुख्य प्रवक्ता श्री राम ने दावा करते हुए कहा कि जनता सब देख रही है और बिहार के लोग प्रदेश की 40 की 40 सीटें एनडीए की झोली में देंगे और देशभर में एनडीए 400 से ज्यादा सीटें जीतेगी। इस प्रेस वार्ता में प्रदेश मीडिया संयोजक दानिश इकबाल, प्रवक्ता सुहेली मेहता, उपेंद्र सिंह, प्रभात मालाकार भी उपस्थित रहे।

मुद्दों के आधार पर जनता के बीच जायेंगे : मीसा

- कहा-केन्द्र की जनविरोधी नीतियों के बारे में जनता को कराएंगे अवगत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राज्यसभा सांसद सह राजद नेत्री डॉ मीसा भारती ने कहा कि शोषितों, वंचितों, पिछड़ों, अतिपिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों और समाज के सभी वर्गों के मान-सम्मान और उनको भागीदारी देने में आरजेडी हमेशा आगे रही है। और इन वर्गों के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने अपने सत्रह महीने कार्यकाल में जो काम किये हैं उससे आम लोगों का विश्वास महागठबंधन और राष्ट्रीय जनता दल के प्रति मजबूत हुआ है। इस बार केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों, महंगाई, गरीबों के साथ अन्याय, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार में भाजपा नेताओं की संलिप्ता तथा उनके साथ न्याय नहीं होने के कारण महिलाओं में जो गुस्सा है वो स्पष्ट रूप से दिख रहा है। कहा कि केन्द्र सरकार गरीबों तथा किसानों के साथ न्याय नहीं कर रही है और उन्हें सड़कों पर खड़ा कर दी है। केन्द्र सरकार विपक्षी दलों की आवाज को बंद करने के लिए लगातार साजिश कर रही है, जबकि इलेक्ट्राल बांड के माध्यम से भ्रष्टाचार को किस तरह से बढ़ावा दिया जा रहा है इस पर चुप्पी साध ली है। इस बार मुद्दों के आधार पर जनता के बीच जायेंगे और जनता को केन्द्र सरकार की जनविरोधी और आम लोगों को परेशान करने वाली नीतियों से अवगत करायेंगे। इस अवसर पर विधायक रेखा देवी, पूर्व मंत्री कार्तिकेय कुमार सिंह, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, पूर्व विधान पार्षद आजाद गांधी, प्रदेश महासचिव संजीव राय, गुलाम रब्बानी, पटना जिला प्रधान महासचिव मो अफरोज आलम, पिन्कु यादव, ई संजय यादव, राजदेव प्रसाद यादव, दिलीप सिंह, ललन कुमार, अरूण कुमार सिंह, वकिल यादव, मुश्ताक अहमद, कौसर खान, राणा प्रताप सिंह, सुनील यादव, सत्यानंद सिंह, श्रवण कुमार, बबलू कुमार, धर्मवीर सिंह, दिलीप सिंह यादव, कामेश्वर यादव, रामबाबू सिंह, करण कुमार, कामता पासवान, संजय राय, सुनील यादव, मनोज कुमार, भोला सिंह, अविनाश कुमार, विपिन कुमार सिंह, अरूण कुमार यादव, नरेन्द्र कुमार, रजनीश कुमार कुशवाहा, रंजीत यादव, मीना राय, बेबी कुमारी, मुन्नी माधवी, राकेश कुमार पंडित, पप्पू कुमार पासवान, निशा उर्फ गुड़िया, मेजर चन्द्रवंशी, प्रेमराज कुमार, संजय ठाकुर, रामलखन सिंह यादव, उमेश यादव, शंकर यादव, निरंजन सिंह, मुकेश कुमार सिंह, सुनील यादव, साकेत यादव, रामानुज सिंह सहित सैंकड़ों की संख्या में राष्ट्रीय जनता दल के नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

देश में 83 फीसदी युवा बेरोजगार है :भाकपा

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की भारत रोजगार रिपोर्ट ने मोदी की तथाकथित गारंटी और वादों की पोल खोलकर रख दी है। देश के 83 फीसदी युवा बेरोजगार हैं। मोदी की गारंटी झूठ और जुमला है। भाजपा सरकार के पिछले दस वर्षों के कार्यकाल में बेरोजगारी बढ़ी है। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रति वर्ष 2 करोड़ नौकरियां देने का वादा किया। उनके शासन में 20 करोड़ नौकरियां कहां हैं? आईएलओ की रिपोर्ट कहती है कि देश के बेरोजगार कार्यबल में 83 फीसदी युवा हैं ! भाजपा के कुशासन के कारण एक पूरी युवा पीढ़ी अवसरों से वंचित हो गई है। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में लाखों पद रिक्त पड़े हुए हैं। दस वर्षों में युवाओं को नौकरी देने के बजाए विभिन्न मंत्रालयों में छटनी की गई है। लाखों पद समाप्त कर दिए गए हैं। इसका जवाब देश के युवा मतदाता लोकसभा चुनाव में लेंगे। युवा मतदाता 2024 में भाजपा को सबक सिखाएंगे।

400 पार का लक्ष्य हासिल करेगा एनडीए : चिराग

बोलें- 4 अप्रैल को पीएम मोदी जमुई में करेंगे सभा

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ना सिर्फ बिहार की सभी 40 सीटें जीतकर प्रधानमंत्री जी की झोली में डालेगी, बल्कि देश में 400 पार का लक्ष्य भी हासिल करेगी। साथ ही श्री चिराग ने कहा कि पार्टी कार्यकताओं के लिए यह गर्व की बात है कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 4 अप्रैल को बिहार में लोकसभा चुनाव प्रचार अभियान की शुरूआत जमुई से करने जा रहे हैं। इसके लिए मैं जमुई की समस्त देवतुल्य जनता की ओर से प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करता हूं। प्रधानमंत्री जी के इस निश्चय से हम सभी अभिभूत हैं। पीएम मोदी के बिहार आगमन को लेकर रविवार को लोजपा (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान ने पुष्टि की। उन्होंने कहा, मेरे लिए सौभाग्य और गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री मोदी मेरे राज्य में चुनावी अभियान की शुरूआत मेरी ही कर्मभूमि जमुई से करने जा रहे हैं, अब यहां से अरुण भारती चुनावी मैदान में हैं। प्रधानमंत्री 4 अप्रैल को जमुई आएंगे और बिहार में चुनाव प्रचार अभियान की शुरूआत करेंगे। दरअसल, जमुई संसदीय सीट से चिराग पासवान ने पिछले दो लोकसभा चुनाव जीते हैं। वहीं इस बार भी यह सीट उनकी ही पार्टी के खाते में गई है। यहां चिराग ने अपने बहनोई अरुण भारती को उम्मीदवार बनाया है। चिराग पासवान ने उनकी जीत दिलाने के लिए बड़े स्तर पर लगे हैं। अब यही से पीएम मोदी इस बार के लोकसभा चुनाव में प्रचार की शुरूआत करने जा रहे हैं।

व्यक्तिगत स्वार्थ में रणछोड़ बन गए अनिल शर्मा: कांग्रेस

- लगाया आरोप-पार्टी विरोधी गतिविधियों को देते रहें हैं हवा

पटना। प्रदेश कांगेस ने पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार शर्मा पर व्यक्तिगत स्वार्थ में पार्टी को कमजोर करने का का आरोप लगाया है। रविवार को बिहार कांग्रेस के तरफ से बयान जारी कर कहा है कि अनिल शर्मा ने शुरू से पार्टी के नीतियों के खिलाफ व्यक्तिगत स्वार्थ में दल को कमजोर करने का कुत्सित प्रयास करते रहें। महीनों से कोप भवन में बैठकर वें दल के खिलाफ काम कर रहे थे और ऐसे समय में वें हमारे नेता राहुल गांधी और सोनिया गांधी के खिलाफ बयानबाजी कर रहे हैं जब वें सबसे ज्यादा भाजपा के तानाशाही के खिलाफ मुखर होकर संघर्ष कर रहे हैं। वें भाजपा के गोद में बैठकर बयानबाजी कर रहे हैं। उन्होंने दल के साथ गद्दारी पूर्व में भी की है जबकि कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने उनको प्रदेश महासचिव से लेकर प्रदेश अध्यक्ष तक बनाया। दो बार विधान सभा का चुनाव लड़ाया और हर बार उन्होंने 2 से 3500 वोट पाकर पार्टी की भद्द पिटवाई। जब 2009 में उन्हें प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर टिकट बांटने का मौका मिला तो उन्होंने कार्यकताओं को छोड़कर पूरे बिहार से दूसरे दलों से लाकर दर्जन भर माफियाओं को पार्टी में पैसों पर टिकट बेचा और मूल कार्यकर्ताओ को उनके हक से वंचित रखा। इस कृत्य से पार्टी की गांधीवादी छवि को नुकसान भी पहुंचाया। इसीलिए विधान सभा चुनाव से पूर्व पार्टी ने उन्हें अध्यक्ष पद से हटा दिया। खुद को राज्यसभा व विधान परिषद का उम्मीदवार नहीं बनाएं और पार्टी के दूसरे राज्यों में प्रभारी नहीं बनाएं जाने से बौखलाहट में उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दिया है और वर्तमान संघर्ष के दौर में रणछोड़ बनकर भाजपा से मिलकर कांग्रेस पार्टी के नीतियों को कमजोर करने का प्रयास किया है।

पिछड़े-अतिपिछड़ों के सच्चे हितैषी हैं नमो-नीतीश : राजीव

- कांग्रेस ने हमेशा ही देश के महापुरुषों को इतिहास को नकारने का किया है काम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जननायक कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न मिलने पर प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का आभार प्रकट करते हुए जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने आज कहा कि कपूर्री ठाकुर देश के उन चुनिन्दा नेताओं में से एक थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गरीबों, वंचितों की सेवा में अर्पित कर दिया। उनके सेवाभाव के कारण ही समाज के हर जाति, हर वर्ग में आज भी उनके प्रशंसक विद्यमान हैं। इसीलिए उन्हें जननायक भी कहा जाता है। उनके कामों और उनकी महानता को देखते हुए उन्हें काफी पहले ही भारत रत्न मिल जाना चाहिए था, लेकिन राजद-कांग्रेस की काली राजनीति के कारण यह अभी से पहले मुमकिन नही हो पाया। उन्होंने कहा कि यह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही थे जिन्होंने कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न देने के लिए केंद्र सरकार से मांग की थी, जिसे प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी ने पूरा कर दिया. इसके लिए बिहार की तमाम जनता उनकी आभारी है। कपूर्री ठाकुर की ही तरह नमो-नीतीश को पिछड़े-अतिपिछड़ों का सच्चा हितैषी बताते हुए उन्होंने कहा कि कपूर्री ठाकुर जी के बाद नमो-नीतीश ही ऐसे राजनेता हुए हैं जिन्होंने सही मायनों में गरीबों व अतिपिछड़ों की सुध ली है। नीतीश कुमार ने अतिपिछड़े समाज के तेज विकास के लिए कपूर्री ठाकुर जी द्वारा दिए गये आरक्षण को बढ़ाकर पहले 18 प्रतिशत किया और अब जातिगत गणना के बाद इसे बढ़ाकर 25 प्रतिशत कर दिया। उन्होंने ही अतिपिछड़ा समाज की नेतृत्व क्षमता को निखारने के लिए उन्हें नगर निकाय चुनावों में में 20 प्रतिशत आरक्षण का लाभ भी दिया हुआ है। नीतीश सरकार के कारण महिलाओं को उनकी आधी आबादी के अनुरूप पंचायत चुनावों में 50 प्रतिशत आरक्षण मिल रहा है। उन्होंने कहा कि गाँधी परिवार के तीन-तीन सदस्यों को भारत रत्न देने वाली कांग्रेस ने हमेशा ही देश के महापुरुषों को इतिहास को नकारने का काम किया है। इसीलिए इन्होने सरदार पटेल और बाबा साहब अम्बेदकर को भी भारत रत्न नहीं दिया। उन्हें भी 1991 में जनता पार्टी की सरकार में यह सम्मान मिला। यह दिखाता है कि कांग्रेस की संस्कृति में वह संवेदनशीलता नहीं जो दूसरों को सम्मान दे सके और दूसरों की संवेदनाओं का सम्मान करे।

जयंती पर साहित्य सम्मेलन में स्मृति-पुस्तकालय का हुआ लोकार्पण, प्रो केसरी भी किए गए याद

चिंतक साहित्यकार थे डा मुरलीधर श्रीवास्तव शेखर : नंदकिशोर

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

संस्कृत, हिन्दी, बँग्ला और अंग्रेजी समेत अनेक भाषाओं के उद्भट विद्वान तथा महान शिक्षाविद डा मुरलीधर श्रीवास्तव शेखर की जयंती पर, रविवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उनकी स्मृति को समर्पित नए पुस्तकालय का लोकार्पण किया गया। अपने लोकार्पण-उद्गार में बिहार विधान सभा के अध्यक्ष नंद किशोर यादव ने कहा कि शेखर एक चिंतक साहित्यकार थे। वे समाज के अन्य अनेक विषयों पर अपना स्वतंत्र चिंतक रखते थे। श्री यादव ने कहा कि शेखर जी के निधन पर अटल बिहारी बाजपेयी ने अपने शोक संदेश में यही बात कही थी। उन्होंने कहा कि जो पूर्वजों की थाती है, उसे समाज तक, अगली पीढ़ियों तक फैलाना हमारा कर्तव्य है। साहित्य सम्मेलन ने यह कर प्रशंसा का कार्य किया है। समारोह के मुख्यअतिथि और पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि जिस प्रकार विचारों की मृत्यु नहीं होती, उसी प्रकार साहित्य और साहित्यकारों की मृत्यु नहीं होती। शेखर जी के नाम से स्थापित हुआ पुस्तकालय उनकी स्मृति को सदा जीवित बनाए रखेगा। पीयू के कुलपति डा के सी सिन्हा ने कहा कि किसी भी समाज का मूल्यांकन उसके साहित्यकारों को देखकर किया जाता है, क्योंकि साहित्य ही समाज का निर्माण करता है। एक पुस्तकालय, शिक्षा और साहित्य को आमजन तक पहुँचाता है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए, सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कहा कि शेखर जी एक वरेण्य कवि ही नहीं महान भाषा-वैज्ञानिक थे। हिन्दी धातु कोश का सृजन कर भाषा-परिष्कार के लिए उन्होंने जो कार्य किया, वह दुर्लभ है। वे विद्वता के पर्याय और वाग्मिता के दृष्टांत थे। उनकी वाग्मिता सुधी श्रोताओं के मन का हरण कर लेती थी। उनकी कविताएँ तो ललिता देवी की कृपाओं से अलंकृत होती ही थी, उनके व्याख्यान और गद्य भी काव्य-लालित्य से परिपूर्ण होते थे। हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन और प्रचार में उनका अवदान अतुल्य और नमनीय है। उन्होंने देशरत्न डा राजेंद्र प्रसाद के साथ अनेक प्रांतों में जाकर हिन्दी का प्रचार किया। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष प्रो केसरी कुमार को भी उनकी जयंती पर स्मरण किया तथा उन्हें एक समर्थ आलोचक और प्रयोगधर्मी कवि बताया। सम्मेलन की उपाध्यक्ष और शेखर जी की छोटी पुत्रवधु डा मधु वर्मा ने कहा कि हिन्दी साहित्य की गरिमा-वृद्धि में पिताजी का बहुत बड़ा योगदान था। पहली बार दिनकर जी पर उन्होंने ही लिखा था। दिनकर जी ने स्वयं ये कहते हुए, उनके प्रति आभार प्रकट किया। दूरदर्शन, बिहार के कार्यक्रम-प्रमुख डा राज कुमार नाहर, सम्मेलन के उपाध्यक्ष डा शंकर प्रसाद, शेखर जी के पौत्र पारिजात सौरभ, भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी बच्चा ठाकुर, डा पुष्पा जमुआर, डा मेहता नगेंद्र सिंह, डा ध्रुब कुमार, डा मनोज गोवर्द्धनपुरी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में वरिष्ठ कवयित्री विभारानी श्रीवास्तव, डा पंकज वासिनी, रानी पाण्डेय, प्रभा कुमारी, मधु रानी लाल, डा अर्चना त्रिपाठी, डा विद्या चौधरी, डा रेणु मिश्र, सागरिका राय, डा मीना कुमारी परिहार, ई अशोक कुमार, डा एम के मधु, ऋचा वर्मा, डा प्रतिभा रानी, डा पंकज कुमार सिंह, जय प्रकाश पुजारी, डा शालिनी पाण्डेय, अनिता मिश्र सिद्धि, प्रो सुनील कुमार उपाध्याय, सिद्धेश्वर, डा मौसमी सिन्हा, डा सुषमा कुमारी, डा रेखा भारती, चितरंजन लाल भारती, नीरव समदर्शी, गोपाल विद्यार्थी, इंदु शुभंकरी, अरविंद अकेला, अश्विनी कुमार, बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता, भास्कर त्रिपाठी आदि कवियों और कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं से काव्य-रसिकों का हृदय जीत लिया। मंच का संचालन कुमार अनुपम ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

संक्षिप्त खबरें

नशे की हालत में पीआरएस को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कल्याणपुर, समस्तीपुर। चकमेहसी थाना क्षेत्र के गोराई गांव से पुलिस ने गस्ती के दौरान सड़क पर बाइक स्टार्ट नहीं होने के क्रम में पूछताछ के दौरान उक्त युवक के द्वारा संतोष परत जवाब न देने के कारण पुलिस ने उसे पकड़ कर जांच के लिए कल्याणपुर पीएससी में भर्ती कराया। जहां चिकित्सा डॉ बीके ठाकुर मेडिकल जांच के उपरांत उक्त युवक को शराब पीने की पुष्टि पाई गई। पुलिस ने जांच के उपरांत थाना ले गई। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान हसनपुर थाना क्षेत्र के मालदह गांव निवासी गंगा प्रसाद सिंह के पुत्र संजीत कुमार के रूप में हुई है। लोगों का बताना है कि उक्त युवक गोराई पंचायत के मनरेगा में पंचायत रोजगार सेवक के रूप में कार्यरत था। वहीं चकमेहसी पुलिस ने उत्पाद अधिनियम के तहत कार्रवाई करने की बात कही है। वहीं प्रखंड मनरेगा पदाधिकारी महेश कुमार भगत ने बताया कि शराब पीने की सत्यता होने के बाद विभागीय स्तर पर कारवाई होने की संभावना व्यक्त किया है।

अज्ञात वाहन की ठोकर से एक व्यक्ति गंभीर रूप से हुआ जख्मी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के परतापुर गांव के समीप रविवार की शाम अज्ञात वाहन की ठोकर से 65 वर्षीय व्यक्ति गंभीर रूप से जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों के प्रयास से जख्मी व्यक्ति को इलाज के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर में भर्ती कराया। जहां उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए पटना के लिए रेफर करने की बात बताई गई। जख्मी व्यक्ति की पहचान वासुदेवपुर गांव के 65 वर्षीय बैजनाथ महतो के रूप में हुई है। जख्मी व्यक्ति मथुरापुर बाजार समिति से अपने घर पैदल लौट रहा था की अज्ञात वाहन की ठोकर से गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वहीं अज्ञात वाहन भागने में सफल रहा। वहीं थानाध्यक्ष नीतीश चन्द्र धारियां ने बताया कि जख्मी व्यक्ति के परिजन द्वारा आवेदन मिलने पर आगे कार्रवाई किया जाएगा।

कुत्तों के झुंड ने महिला को नोंच-नोंचकर मार डाला

समस्तीपुर में इन दिनों आवारा कुत्ते का आतंक देखने को मिल रहा है। ताजा मामला दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के पांड पंचायत के पांडव स्थान वार्ड संख्या 8 की है जहां शौच के लिए गई एक महिला पर कुत्तों के झुण्ड ने हमला कर दिया। कुत्तों ने बुरी तरह उसके शरीर को नोंच लिया। जब तक कोई देखता वृद्ध महिला को कुत्तो ने जख्मी कर दिया। बाद में शौच के लिए जा रहे दूसरे ग्रामीणों ने घटना की सूचना परिजनों को दिया। जिसके बाद गंभीर रूप से जख्मी महिला को इलाज के लिए अनुमंडलयी अस्पताल में भर्ती करवाया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक महिला की पहचान स्व. जदू महतो की पत्नी देवकी देवी के रुप में हुई है। वहीं सुचना पर पहुंची पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। बतातें चले कि 23 मार्च को मोहनपुर प्रखंड के डीह माधोपुर गांव में भी आवारा कुत्तों ने लगभग 16 बच्चों को काट कर जख्मी कर दिया था। जिसमें तीन बच्चे की स्थिति काफी चिंताजनक थी। जिसे बेहतर इलाज के लिए पीएमसीएच रेफर किया गया था।

हिंदू महिला ने लगाया जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर मारपीट का आरोप

दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में आधा दर्जन से अधिक लोग घायल

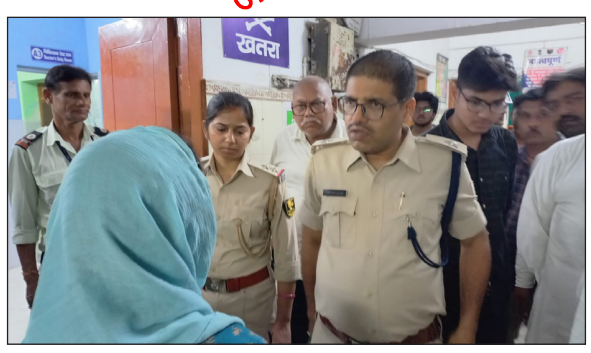

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के मोहनपुर रोड वार्ड 38 पावर हॉउस के पास रविवार की शाम कथित तौर पर जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर कुछ लोगों के द्वारा एक हिंदू महिला को मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिए जाने का मामला सामने आया है। जिसे इलाज के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर में भर्ती कराया गया। महिला की पहचान धरमपुर मोहल्ले के सरफराज अहमद की पत्नी कुमारी दिव्या 30 वर्ष के रूप में हुई है। घटना के संबंध में कुमारी दिव्या का बताना है कि उसने एक मुस्लिम लड़के सरफराज अहमद से शादी की थी और उसके हिंदू होने से उसके पति को कोई एतराज नहीं है, लेकिन कुछ लोग जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर उनके व उनके पति के ऊपर काफी समय पहले से दवाब बन रहे थे। हालांकि उनके पति सरफराज अहमद धर्म परिवर्तन के बिलकुल खिलाफ हैं। इसी सब बात को लेकर उन लोगों ने मारपीट कर उन्हें घायल कर दिया। वहीं घायल महिला कुमारी दिव्या के पति सरफराज अहमद का बताना है कि लगभग 12 वर्ष पूर्व उन दोनों की शादी हुई है और तीन बच्चे भी हैं। उन्हें उनकी पत्नी के हिंदू होने से कोई एतराज नहीं है, लेकिन कुछ लोग शादी के बाद से ही उनकी पत्नी के धर्म परिवर्तन को लेकर उनके ऊपर दबाव बना रहे थे। जिसमें धरमपुर के एक सफेदपोश नेता भी शामिल हैं। जिसके बाद उन्होंने अपने पत्नी को लेकर मोहनपुर रोड में किराए के मकान में रहना शुरू कर दिया। उन्होंने मारपीट के लिए मोहनपुर के ही परवेज आलम और उनके पुत्र आतिफ व ताबिश और एजाज नाम के एक व्यक्ति के ऊपर आरोप लगाया है। वहीं सदर अस्पताल में अपना इलाज कराने पहुंचे परवेज आलम का बताना है कि सरफराज अहमद और कुमारी दिव्या उनके छोटे भाई इफ्तेखार आलम के मकान में किराया लेकर रहते हैं। घटना पूर्व के जमीनी विवाद का है। वह महिला हिंदू है या मुसलमान इससे उन्हें कोई एतराज नहीं है। जो भी आरोप लगाया जा रहा हैं सरासर गलत है। उन्होंने बताया कि उनके भाई इफ्तेखार आलम के साथ उनका दो कट्ठा जमीन का विवाद पहले से चल रहा है और उसी को लेकर उनके भाई इफ्तिखार आलम व अन्य लोगों ने उनके साथ मारपीट की है। घटना दो पक्षों के बीच के विवाद का बताया जा रहा है। जिसमें एक पक्ष से एक महिला सहित तीन लोग व दूसरे पक्ष से चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, जिनका इलाज समस्तीपुर सदर अस्पताल में कराया जा रहा है। वहीं इस संबंध में नगर थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार का बताना है कि दो पक्षों के बीच मारपीट होने की सूचना मिली है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आवेदन मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अश्लील वीडियो वायरल होने के कारण युवती के खुदकुशी मामले का हुआ उद्भेदन, 2 गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले में पिछले साल सितंबर में एक घटना हुई थी, जिसमें एक युवक ने फेसबुक पर फर्जी अकाउंट बनाकर पड़ोस के एक युवती के साथ अश्लील वीडियो वायरल किया था। इसके बाद युवक ने डिप्रेशन में आकर खुदकुशी कर ली। इस मामले में बड़ी कार्रवाई की गई है और दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि वे युवक का वीडियो बनाकर उसे ब्लैकमेल कर रहे थे। यह पूरा मामला मुजफ्फरपुर जिले के पियर थाना क्षेत्र के हत्था टोला कल्याण नगर में हुआ था। मृतक के पिता संतोष कुमार ने 3 सितंबर 2023 को साइबर थाने में एक आवेदन दिया था। उन्होंने अपने आवेदन में बताया कि उनके पुत्र विवेक कुमार के नाम से फर्जी फेसबुक अकाउंट बनाया गया था और उस अकाउंट से पड़ोस के एक युवती के साथ उनके पुत्र का अश्लील वीडियो वायरल किया गया था। इसके बाद उनका पुत्र विवेक कुमार डिप्रेशन में आकर 9 अगस्त 2023 को खुदकुशी कर लिया। एसएसपी राकेश कुमार के निर्देशन में एक विशेष टीम गठित की गई जिसने फर्जी फेसबुक अकाउंट का विश्लेषण किया। जांच के दौरान विशेष टीम ने मृतक विवेक कुमार के गांव के ही रहने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया और मामले की सफलतापूर्वक उद्वेदन किया। दोनों आरोपियों ने इस कांड में अपनी संलिप्तता स्वीकार किया है। गिरफ्तार हुए आरोपियों की पहचान हत्था कल्याण गांव के निवासी कुमोद राय के पुत्र मनीष कुमार, सुरेश राय के पुत्र गुलशन कुमार बताया गया है। दोनों आरोपितों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

सारामोहनपुर पंचयात के छपकी में होगा भव्य राम मंदिर का निर्माण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा सारामोहनपुर पंचयात अंतर्गत छपकी में राम मंदिर निर्माण का कार्य पूर्ण करने को लेकर बैठक किया गया इस बैठक का अगुवाई सत्तो महतो ने किया जिसमें अर्जुन कुमार दास चंदन कुमार दीपक कुमार अमन सक्सेना योगेश्वर पासवान मुख्य रूप से सक्रिय रहे बैठक में शामिल लोगो ने कहा पिछले कई सालो से गुम्बज निर्माण नहीं होने के कारण मंदिर का कार्य अधूरा पड़ा हुआ हैं एक तरफ अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण पुरे देश को संदेश देने का काम किया हैं की इक्षा शक्ति होने पर सब कुछ संभव हैं अब इस मंदिर का निर्माण भी भव्य तरीके से करने का निर्णय लिया गया हैं बुधवार को मंदिर परिसर में ही बड़े स्तर पर बैठक करने का घोषणा किया गया हैं जिसके बाद मंदिर निर्माण के कार्य में हाथ लगाया जाएगा कहा यह मंदिर इस पंचयात का शोभा बढ़ाने का काम करेगा किसी इलाका में स्वच्छ और सुंदर मंदिर होना उस इलाका के संपन्नता का गवाह बनता हैं जिसके निर्माण के लिए सभी लोगो ने तन मन और धन से योगदान देने की बात कही हैं काफी संख्या में स्थानीय युवा और बुजुर्ग इस बैठक में शामिल रहे सभी ने एक स्वर में कहा इस मंदिर के निर्माण तक सभी लोग साथ मिलकर काम करेंगे और इस राम मंदिर का भव्य तरीका से मंदिर निर्माण करने का काम करेंगे इस बैठक में छोटू कुमार संजीव कुमार राजकुमार पासवान रंजीत पासवान अमित पासवान अशोक पासवान- रामलोचन पासवान मोहन पासवान रामजी पासवान शम्भू पासवान जगदीश पासवान रामदेव महतो रामशंकर पासवान शत्रुधन पासवान समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे

दो साइबर ठग गिरफ्तार, ठगी का 30 हजार बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। पुलिस ने महज 24 घंटे के भीतर फ्लिपकार्ट डिलीवरी बॉय बनकर साइबर ठगी करने वाले सरगना को गिरोह के अन्य सदस्यों के साथ गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार मास्टरमाइंड उत्कर्ष स्मॉल फाईनेंस बैंक का कर्मी बताया गया है।इस सम्बंध में वादिनी इन्दु देवी पति- बासदेव सहनी ग्राम गेहुमा चक थाना मोतीपुर जिला मुजफ्फरपुर के समर्पित आवेदन के आधार पर साइबर थाना कांड सं0 31/24 दिनांक 28.03.2024 दर्ज किया गया था।वादिनी अपने लिखित आवेदन में दिनांक 26.03.2024 को किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा एक अंजान नंबर से फोन करके पार्सल आने की बात एवं पुनः उसी व्यक्ति द्वारा घर पर आकर ऑर्डर कैंसिल करने के लिए वादिनी का मोबाईल लेने तथा उसी दिन वादिनी के उत्कर्ष बैंक के खाते से करीब 75,247/- रुपए कटने का जिक्र किया गया था।उक्त कांड की गंभीरता को देखते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक, मुजफ्फरपुर के निर्देशन व नगर पुलिस अधीक्षक, मुजफ्फरपुर के अनुश्रवण तथा पुलिस उपाधीक्षक-सह-थानाध्यक्ष, साइबर थाना की नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा तकनीकी बिंदुओं पर विश्लेषण किया गया। तकनीकी बिदुओं के आधार वादिनी के रूपयों का विभिन्न बैंको में स्थानांतरण का विश्लेषण उपरांत विशेष टीम द्वारा उक्त साइबर अपराध की घटना में संलिप्त अभियुक्त 1. अविनाश कुमार पे० दीपन प्रसाद सा० कर्मवारी, 2. चंदन कुमार पे० शिवशंकर प्रसाद गुप्ता सा० राम नगर दोनों थाना सिवाईपट्टी जिला मुजफ्फरपुर को साइबर अपराध में प्रयुक्त 02 मोबाईल फोन के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अपराधकर्मियों के निशानदेही पर घटना का मास्टरमाइंड व गिरोह का सरगना 3. प्रशांत किशोर मुजफ्फरपुर को बोचहां थाना क्षेत्र से ठगी की गई 30,000/- रुपए नगद, घटना में प्रयुक्त मोटरसाईकिल एवं मोबाईल के साथ गिरफ्तार किया गया।गिरफ्तार अभियुक्तों ने अपने स्वीकारोक्ति बयान में उक्त घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। उल्लेखनीय है कि इस घटना का मास्टरमाइंड व गिरोह का सरगना प्रशांत किशोर उत्कर्ष स्मॉल फाईनेंस बैंक, बोचहां, मुजफ्फरपुर में कैशियर के पद पर कार्यरत है।

भाकपा(माले) जिला कार्यालय में कॉमरेड चंद्रशेखर व श्याम नारायण का शहादत दिवस मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा इस अवसर पर मुख्य वक्ता के बतौर भाकपा(माले) जिला सचिव बैद्यनाथ यादव ने कहा की कॉमरेड चंद्रशेखर ने सिवान के अंदर फासीवादी ताकतों से लड़ते हुए अपनी शहादत दी थी। और आज वैसे ही फासीवादी ताकत देश के सत्ता पर काबिज है। और देश के संविधान और लोकतंत्र को खत्म कर रहे है। वैसे दौर में हम कॉमरेड चंद्रशेखर को याद करते हुए पुन फासीवादी ताकतों को शिकस्त देने का संकल्प लेते है। श्री यादव ने आगे कहा की आज भाजपा पूरे विपक्षी पार्टी को भारष्टाचार के नामपर बदनाम कर रही है। लेकिन चुनावी चंदा घोटाला पर भाजपा चुप है। उन्होंने कहा की आज देश के अंदर सबसे बड़ा घोटाला चुनावी चंदा घोटाला है। और सबसे ज्यादा चंदा पूरे देश में भाजपा को मिला है। इसका जवाब भाजपा को देना होगा। उन्होंने कहा की जब देश के अंदर भाजपा ने जे एन यू को बदनाम करने की कोशिश की, छात्र संघ चुनाव को 4 साल रोक दिया गया उसी दौर में आइसा के साथियों ने कॉमरेड चंद्रशेखर के आदर्शो से प्रेरणा लेते हुए पुन जे एन यू के अंदर लाल झंडा का परचम लहराने का काम वहा के छात्र छात्राओं ने किया है। अंत में उन्होंने कहा की आज जरूरत है की गांव - गांव में चुनावी चंदा घोटाला का पदार्फाश करने का आवाहन उपस्थित छात्र युवाओं से किया गया। वही इस अवसर पर छात्र युवा नेता ने कहा की आज देश के बाबा साहेब द्वारा लिखे गए संविधान को खत्म करना चाह रही है। वैसे दौर हम छात्र नौजवानों को संकल्प लेना होगा की ऐसे सरकार को गांव - गांव से उखाड़ फेंकने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम से आवाहन किया गया की 14 अप्रैल को डॉ भीम राव अंबेडकर की जयंती गांव गांव में मनाया जायेगा। इस अवसर परआर वाईए के प्रदेश उपाध्यक्ष रंजित राम, आइसा जिला सचिव मयंक कुमार यादव, जिला अध्यक्ष शम्स तबरेज, आर वाई ए नेता राजू कर्ण, ओणम सिंह, आइसा नेत्री सब रौशनी, सुभाष कुमार पासवान, मिथलेश कुमार यादव, साजन दास, हरिश्चंद्र पासवान, विनोद सिंह, जय नारायण यादव, सुनील कुमार, प्रिंस कुमार, जीवछ राम, संजय कुमार, मो सद्दाम हुसैन, आशीष कुमार, मोहम्मद इरफान, अवधेश कुमार सिंह, पंकज कुमार सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड के भरपुरा पटपरा पंचायत निवासी सह कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष एवं पूर्व प्रखंड उप प्रमुख रामधार चौधरी के निधन उपरांत श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता विभूतिपुर प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कपिलेश्वर कुंवर व संचालन रमन शर्मा कर रहे थे। सर्वप्रथम उपस्थित लोगों ने उनके तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। वहीं वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभा को रामस्वरूप सिंह, राधाकांत चौधरी, विश्वनाथ चौधरी उर्फ तूफान जी, पूर्व जिला परिषद कृष्णदेव प्रसाद सिंह, मुकेश कुमार निराला, शैलेंद्र बाबू, सिया प्रसाद यादव, नंदकुमार चौधरी, गंगा प्रसाद यादव, नंदन चौधरी, जयराम चौधरी, आलोक कुमार, सुनील कुमार सिंह, फुलेश्वर महतो, विष्णु देव सिंह, मनोज चौधरी, शंभू मिश्र, मनोरंजन प्रसाद, मनोज कुमार, राजेंद्र चौधरी, विनोद कुमार, डोमन राय, चंद्रभूषण सिंह, अंजनी कुमार मिश्र, संजीव कुमार, मनोज भारद्वाज, बच्चा बाबू गिरी, राम बहादुर सिंह आदि ने संबोधित किया। मौके पर सैकड़ों की संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मजदूर का पुत्र मैट्रिक बोर्ड रिजल्ट में राज्य स्तर पर प्राप्त किया दसवां स्थान

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड के विभूतिपुर पूरब नरहन निवासी मजदूर प्रभू राय व गृहिणी प्रमिला देवी के पुत्र सावन कुमार माध्यमिक परीक्षा में शामिल होकर बिहार में दसवें स्थान प्राप्त किया है। सावन सिमुलतला आवासीय विद्यालय जमुई से मैट्रिक परीक्षा में शामिल होकर 479 अंक प्राप्त कर क्षेत्र का मान बढ़ाया। सावन अपनी सफलता का श्रेय अपनी खुद की मेहनत व अपने माता-पिता को देते हैं। बता दें कि सावन के बड़े भाई प्रभात कुमार इंडियन नेवी व बहन प्रीति कुमारी है। सावन बचपन में पोलियो का शिकार हो गया था। दोनों पैरों से विकलांग होने के बावजूद भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी मेहनत के बल पर अपनी मुकाम की ओर बढ़ रहे हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर नरहन में हुई। 2019 में उनका चयन सिमुलतला में हुई। जहां से इन्होंने मैट्रिक परीक्षा में शामिल होकर सफलता हासिल किया है। सावन की सफलता पर दादा श्रवण राय,चाचा प्रदीप राय,चाची रिंकु देवी आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी है।

भारत नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार चला रहा अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल 48 वीं वाहिनी द्वारा आगामी होने वाले लोकसभा चुनाव को मध्यनजर रखते हुए की जा रही लगातार कार्यवाही में 48वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के कार्यक्षेत्र भारत-नेपाल सीमा चौकी पिरौन के जिम्मेवारी के इलाके में सशस्त्र सीमा बल के जवानो को एक ओर सफलता मिली है, इलाके में लगातार हो रही शराब की तस्करी के क्रम को रोकने के लिए समवाय प्रभारी पीपरौन के निदेर्शानुसार विशेष नाका पार्टी सहायक उप निरीक्षक बसदेव की अगुवाई में अन्य जवानों के साथ की गई कार्यवाही में भारतीय-नेपाल सीमा स्तम्भ संख्या 284/7 से लगभग 100 मीटर भारतीय क्षेत्र की तरफ 01 साइकिल पर नेपाल से भारत लायी जा रही नेपाली शराब दिलवाले 300 एम. एल. 3316 बोतलों को जब्त किया गया है। शराब का तस्कर एस.एस.बी के जवानों को देखते ही साइकिल पर लदे शराब की बोतलों को छोड़कर नेपाल की तरफ भाग गया।जब्त की गई शराब की बोतलों एवं बरामद साइकिल को अग्रिम कार्यवाही हेतु हरलाखी थाने के सुपुर्द कर दिया गया है । भारत नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार अभियान चला रही है। आने वाले समय में भी इसी प्रकार अभियान चलाकर सीमा पर होने वाली अवैध गतिविधियों को रोका जाएगा ।गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वीं वाहिनी जयनगर ने बताया कि भारत नेपाल सीमा पर होने वाली तस्करी और अन्य अपराधों की रोकथाम के लिये विशेष अभियान के माध्यम से निरन्तर प्रयासरत है, अगामी लोकसभा चुनाव में किसी भी तरह की कोई अप्रिय घटना घटित नहीं हो इस लिए सशस्त्र सीमा बल द्वारा चुनावों को लेकर सीमावर्ती इलाकों में काफी सघन रूप से जांच पड़ताल की जा रही ताकि इस प्रकार की गतिविधियों पर पूर्णरूप से प्रतिबंधित लगाया जा सके ।

प्रातः किरण में छपी खबर का असर जब्त हुआ अवैध आरा मिल का मशीन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा कार्यालय प्रातः किरण हिंदी दैनिक समाचार पत्र में 31 मार्च को छपी खबर का असर देखने को मिला। प्रातः किरण दैनिक अखबार में जिले सहित हायाघाट के रसूलपुर गांव में दर्जनों अवैध आरा मिल संचालित शीर्षक खबर छपी थी। खबर छपने के बाद दरभंगा वन प्रमंडल विभाग के द्वारा संज्ञान लेते हुए दरभंगा वन विभाग के रेंज ऑफिसर अर्जुन प्रसाद गुप्ता की नेतृत्व में वन पाल तारकेश्वर प्रसाद,श्वेता कुमारी, प्रेम कुमार वनरक्षक राजकुमार, वन रक्षकी बेबी कुमारी,संध्या कुमारी,सहित अन्य कर्मी की धावा दल गठित की गयी। जो हायाघाट प्रखंड के रसूलपुर पंचायत के पेठिया गाछी स्थित पहुंचकर अवैध रूप से चल रहे राम सोगारथ राय के आरा मिल पहुंच कर जांच पड़ताल करने के बाद आरा मिल के सभी चिराई मशीन को खोलकर जप्त कर लिया। वन विभाग के इस कारवाई को लेकरक्षेत्र में अवैध आरा मिल मालिकों के बीच हड़कम्प मचा हुआ है।

राजमिस्त्री की पुत्री मैट्रिक रिजल्ट में राज्य स्तर पर नौवां स्थान प्राप्त की, बनेगी आईएएस

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड के महथी दक्षिण वार्ड 05 सिरसी निवासी राजमिस्त्री शिव शंकर महतो गृहिणी फूल कुमारी की पुत्री कुमारी रंजना मैट्रिक बोर्ड द्वारा प्रकाशित रिजल्ट में बिहार स्तर पर नौवां स्थान लाकर क्षेत्र का नाम रौशन कि है। लड्डू लाल उच्च विद्यालय सिरसी की छात्रा रंजना ने 480 अंक लाकर क्षेत्र का मान बढ़ाया। रंजना आगे आइएएस अफसर बनकर देश की सेवा करना चाहती है। रंजना अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता व गुरुजनों को दी हैं। बता दें कि रंजना की बड़ी बहन गुंजन कुमारी भी बारहवीं बोर्ड परीक्षा में 466 अंक प्राप्त की थी। रंजना की भाई आदित्य राज छठी वर्ग में पढ़ाई करता है। रंजना की सफलता पर नरेंद्र कुमार, संतोष रजक, राम सगुन सुमन, राम गुलाम महतो,मंटून रजक आदि ने बधाई दी है।

प्रो. अशोक बने संत कबीर इंटर कॉलेज के प्राचार्य

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर प्रखंड के जितवारपुर वीर टोल निवासी व वरीय प्रो अशोक कुमार मुन्ना ने शनिवार की शाम संत कबीर इंटर कॉलेज, समस्तीपुर के प्राचार्य का पदभार ग्रहण किया। प्राचार्य प्रो सीताराम राय ने एक सादे समारोह में उन्हें पदभार सौंपा। मौके पर कॉलेज के सभी शिक्षक व शिक्षेकत्तर कर्मचारी मौजूद थे। स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, पूर्व विधायक प्रो शील कुमार राय, पूर्व विधान पार्षद रोमा भारती, सकरा के पूर्व विधायक लाल बाबू राम, पूर्व विधायक अशोक प्रसाद वर्मा, बिहार संस्कृत बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डॉ. दुर्गेश राय, समस्तीपुर केन्द्रीय सहकारिता बैंक के अध्यक्ष विनोद कुमार राय, पूर्व जिला पार्षद संजीव कुमार राय, मोहिउद्दीननगर प्रमुख जवाहर लाल राय, स्थानीय विधायक के प्रेस प्रतिनिधि राकेश कुमार ठाकुर, सरपंच संघ के जिलाध्यक्ष महेश राय, मुखिया संघ के प्रखंड अध्यक्ष सुनील कुमार शोले, समस्तीपुर उप प्रमुख राजेश कुमार सिंह, पटना बीडी कॉलेज के सहायक प्रोफेसर डॉ. रजनीश कुशवाहा, जिला राजद महासचिव राकेश यादव, जिला महासचिव मो. परवेज आलम, उत्कर्ष बैंक के रीजनल मैनेजर रवि आनंद, ट्रेड यूनियन नेता एसके निराला, राजद प्रखंड अध्यक्ष संतोष यादव, पूर्व सरपंच विष्णु राय, पूर्व सरपंच बेबी साह, समाजसेवी ई. राजेश कुमार, ई. मनोज कुमार, ई. पंकज कुमार, ई. इंदु भूषण, प्रमोद राम, हरेन्द्र कुमार, रॉय सोनी सिंह, शशि यादव उर्फ शशि राज, ज्योतिष महतो, राकेश कुशवाहा, अरुण कुशवाहा, जित्तू कुशवाहा, मनोज पटेल, रविन्द्र कुमार रवि, प्रमोद कुमार पप्पू, मनोज कुमार राय, जयलाल राय, मो. ऐनुल हक, मौजे लाल सिंह, राम यतन राय, विधा भूषण यादव, रामकुमार राय, पूर्व मुखिया चन्दन कुमार, पूर्व मुखिया मुकेश कुमार, मुखिया राजीव कुमार राय, मुखिया लक्ष्मण पासवान, पूर्व मुखिया राजेन्द्र सिंह, मुखिया जागेश्वर बैठा, डा. सुनील कुमार मिश्रा, डॉ. रामपुकार सिंह, अधिवक्ता मो. शाहिद हुसैन, मो. रूहुल्लाह खान गुड्डू, कांग्रेस नगर अध्यक्ष डोमन राय, कांग्रेस नेता ठाकुर मनोज भारद्वाज, परमानन्द मिश्रा, उपेन्द्रनाथ तिवारी, विश्वनाथ हजारी, अरुण राय, सुशील राय, रामविलास राय, रामनारायण शर्मा, सूरज राम, कृष्णा कुमार राय, अनिल राय, सुरेश राय, अरविन्द राय, अशोक साह, सैयद फैसल आलम मन्नू, ज्ञान प्रकाश झा, दीपक यादव, मुकेश यादव,अंकित वर्धन, नंदन यादव, अखिलेश कुमार दास, रितेश कुमार पिंकू, बिट्टू रजक, राकेश पांडेय, राकेश मिश्रा, गुड्डू मिश्रा, मो. बशीर अहमद, मो. आसिफ इकबाल, संदीप सरकार, डॉ. अमरजीत कुशवाहा, अरविन्द शर्मा, विपीन कुमार यादव, विमल पासवान,सैयद शाहनवाज हसीब, केशव कुमार सोनू, चक्रधर सिंह, नीलू शर्मा, राधारमण सिंह आदि ने प्रोफेसर अशोक कुमार मुन्ना को बधाई दिया है।

शराब धंधेबाजों में सशस्त्र सीमा बल के जवानों को लेकर मचा हड़कंप

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल 48वीं वाहिनी द्वारा आगामी होने वाले लोकसभा चुनाव को मध्यनजर रखते हुए की जा रही लगातार कार्यवाही में 48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बलजयनगर के कार्यक्षेत्र भारत नेपाल सीमा चौकी अखराघाट के जिम्मेवारी के इलाके में सशस्त्र सीमा बल के जवानों को सफलता मिली है, इलाके में लगातार हो रही शराब की तस्करी के क्रम को रोकने के लिए निरीक्षक समान्य चंदन सिंह समवाय प्रभारी गंगौर के निदेर्शानुसार नाका पार्टी सहायक उप निरीक्षक प्रभात चंद घोस की अगुवाई में अन्य जवानों के साथ की गई कार्यवाही में भारतीय-नेपाल सीमा स्तम्भ संख्या 291/17 से लगभग 100 मीटर भारतीय क्षेत्र की तरफ 05 साइकिलों पर नेपाल से भारत लायी जा रही नेपाली शराब दिलवाले सौफी 300 एम. एल. 600बोतल एवं नेपाली शराब 300 एम. एल 870 बोतलों को जब्त किया गया है। शराब के तस्कर एस.एस.बी के जवानों को देखते ही साइकिलों पर लदे शराब की बोतलों को छोड़कर नेपाल की तरफ भागने में सफल रहे जब्त की गई शराब की बोतलों, एवं बरामद साइकिलों को अग्रिम कार्यवाही हेतु सहारघाट थाने के सुपुर्द कर दिया गया है । भारत नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार अभियान चला रही है। आने वाले समय में भी इसी प्रकार अभियान चलाकर सीमा पर होने वाली अवैध गतिविधियों को रोका जाएगा । गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वी वाहिनी जयनगर ने बताया कि भारत नेपाल सीमा पर होने वाली तस्करी और अन्य अपराधों की रोकथाम के लिये विशेष अभियान के माध्यम से निरन्तर प्रयासरत है, अगामी लोकसभा चुनाव में किसी भी तरह की कोई अप्रिय घटना घटित नहीं हो इस लिए सशस्त्र सीमा बल द्वारा चुनावों को लेकर सीमावर्ती इलाकों में काफी सघन रूप से जांच पड़ताल की जा रही ताकि इस प्रकार की गतिविधियो पर पूर्णरूप से प्रतिबंधित लगाया जा सके ।

मैट्रिक की परीक्षा परिणाम में सोनू प्रखंड में प्रथम तथा प्रीतेश दूसरे स्थान पर अव्वल

प्रात : किरण संवाददाता

राजापाकर। मैट्रिक की परीक्षा में राजापाकर भाथा दासी के सोनू कुमार ने 462 अंक लाकर प्रखंड में अव्वल बना है।वही राजापकर बाजार निवासी जितेंद्र कुमार वर्मा एवं विजयालक्ष्मी श्रीवास्तव के पुत्र प्रीतेश वर्मा ने दूसरा स्थान एवं उनके सगे भाई धर्मेंद्र कुमार वर्मा एवं राखी कुमारी की पुत्री अंकिता वर्मा ने अच्छे अंकों से सफलता पाई है। प्रीतेश ने 450 अंक अर्जित किया है जबकि अंकिता ने 438 अंक हासिल की है। दोनों स्थानीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्रा हैं। एक ही परिवार के दो बच्चे की सफलता से परिवार वालों के बीच खुशी की लहर है। ग्रामीणों ने भी दोनों की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की है। इन दोनों ने प्रखंड क्षेत्र का नाम रोशन किया है। दोनों अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता व गुरुजनों को दिया है। प्रीतेश ने अभियंता बनने की अपनी इच्छा व्यक्त की है। जबकि अंकिता ने आगे पढ़ाई जारी रखते हुए डाक्टर बनकर सेवा करने की इच्छा जाहिर की है।

संक्षिप्त खबरें

अग्निकांड में तीन घर राख

महनार - महनार थाना क्षेत्र के पहाड़पुर विशुनपुर पंचायत के वार्ड संख्या दो में शनिवार को बिजली के शार्ट सर्किट से आग लगने से तीन घर जलकर राख हो गया।इस अगलगी की घटना हजारों की संपत्ति जलकर राख हो गया।बताया गया कि इस अगलगी में घर मे रखा बर्तन,अनाज,कपड़ा आदि सहित अन्य सामान जलकर राख हो गया। रास्ता नही होने के कारण दमकल मौके पर नही पहुंच सका।जिसके बाद ग्रामीणों ने काफी मशक्कत कर आग पर पाया काबू। इस अगलगी की घटना में किशुन पासवान पिता विरेन्द्र पासवान,राम ईश्वर पासवान पिता स्व सुखदेव पासवान एवं दूर्गा पासवान पिता राम ईश्वर पासवान का घर पुरी तरह जल गया। घटना के बाद पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि राजू सिंह ने अंचलाधिकारी से बात कर सभी अग्निपिड़ितो को नियमानुसार सरकारी मुआवजा देने का मांग किया।

व्यवसायी से माँगी पाँच लाख की रंगदारी, 24 घण्टे के भीतर पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा जिले के उदाकिशुनगंज के आलमनगर रतवारा थाना क्षेत्र अंतर्गत एक व्यवसायी से अपराधियों ने मोबाइल से फोन कर पाँच लाख रुपये की रंगदारी माँगी।अपराधियों ने रंगदारी नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दी।फोन पर रंगदारी माँगते हुए अपराधियों ने रुपये लेकर बिहारीगंज आने को कहा।रंगदारी मांगने की सूचना व्यवसायी ने रतवारा पुलिस को दिया।जिसके बाद पुलिस ने अपराधियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार पुलिस मुख्यालय एवं पुलिस उप-महानिरीक्षक कोशी क्षेत्र सहरसा के निदेर्शानुसार मधेपुरा पुलिस द्वारा लगातार विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। इसी बीच पीड़ित मक्का व्यापारी विनोद पोद्दार उम्र-42 वर्ष पे०-कैलाश पोद्दार ग्राम+पो० खापुर वार्ड नं0-14 थाना-रतवारा जिला-मधेपुरा द्वारा 29 मार्च को रतवारा थाना में एक आवेदन दिया गया।दिए गए आवेदन में बताया गया कि 28 मार्च को उनके मो0 नं0-9534322468 पर समय 3:38 बजे अपराह्न बजे में मो0नं0-8900372127 से कॉल कर व्यवसायी से गाली-गलौज कर धमकी देते हुये (500000/-) पाँच लाख रुपए रंगदारी की मांग की गई।उसके बाद पुनः 29 मार्च को पूर्वाह्न में 4 बजे फोन कर रंगदारी में रूपया की मांग किया गया।आप्राधियों ने रंगदारी का रूपया लेकर बिहारीगंज पेट्रौल पम्प के पास बुलाया।रंगदारी नहीं देने पर अपराधियों ने व्यवसायी और उनके परिवार को जान से मारने का धमकी दी।जिससे व्यवसायी पूरी तरह से डर गया।इसके बाद इस संबंध में थानाध्यक्ष, रतवारा द्वारा तत्क्षण सूचना पुलिस अधीक्षक मधेपुरा एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार को दिया।व्यवसायी के आवेदन के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई।

उसके बाद पुलिस अधीक्षक मधेपुरा के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार के नेतृत्व में रतवारा थानाध्यक्ष त्रिलोकी नाथ शर्मा,आलमनगर थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार तथा टेक्निकल सेल के पुलिस कर्मी के साथ एक टीम का गठन किया गया। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार के नेतृत्व में टीम द्वारा बेहतर एवं सराहनीय कार्य करते हुये टेक्निकल सेल की मदद से घटना में संलिप्त पुरैनी थाना क्षेत्र के अपराधी मेघो कुमार,रतवारा थाना क्षेत्र के अपराधी रंजीत कुमार उर्फ झबरा, राजकुमार को पुलिस ने 24 घंटे के अन्दर घटना का सफल उद्भेदन करते हुये गिरफ्तार किया।जिस मोबाईल एवं सीम से धमकी दिया गया था उसे विधिवत जप्त किया गया हैं। इन सभी के द्वारा योजना बनाकर फर्जी सीम कार्ड का उपयोग कर मक्का व्यापारी विनोद पोद्दार से रंगदारी की मांग किया गया था। इन अपराधियों में मेघो कुमार का पूर्व का अपराधिक इतिहास भी रहा हैं वहीं रंजीत कुमार उर्फ झबरा एवं राज कुमार का अपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा हैं। इस कांड में अन्य अपेक्षित बिन्दुओं पर जॉच एवं अनुसंधान जारी हैं।

चचरी के भरोसे बच्चों का भविष्य

- सात दशक बाद भी पुल नहीं बनने से ग्रामीणों में पनप रहा है आक्रोश

प्रात: किरण, संवाददाता

आलमनगर,मधेपुरा बसनवाड़ा पंचायत स्थित पुरैनी बासा में नदी के दूसरे किनारे पर स्थित स्कूलों व आंगनबाड़ी केंद्र जाने के लिए चचरी पुल ही एकमात्र सहारा है। इस चचरी पुल के भी क्षतिग्रस्त होने के कारण अब उस पर से होकर आवाजाही करना खतरे से खाली नहीं है। तीन स्कूल व एक आंगनबाड़ी केंद्र के नदी के उस पर रहने के कारण उसमें पढ़ने जाने वाले बच्चों के पास केवल चचरी पुल का ही विकल्प है। इसके बावजूद सरकार द्वारा इस गंभीर समस्या को दूर करने के लिए कोई पहल नहीं किए जाने से लोगों में आक्रोश पनप रहा है। चचरी के क्षतिग्रस्त होने के कारण अक्सर दुर्घटनाएं होती रहती है। ढाई साल पहले एक बच्ची की इस चचरी पुल से नदी में गिर जाने से डूबने से मौत हो गई थी। बसनवाड़ा पंचायत स्थित पुरैनी बासा में नदी के एक किनारे गांव बसा है। दूसरे किनारे स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्र है। गांव की दूसरी ओर जाने के लिए स्थानीय लोगों को चचरी का पुल पार करना पड़ता है। क्षेत्र के कुंजौरी पंचायत स्थित बजरहा वार्ड सात प्राथमिक विद्यालय सुलेमान टोला, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय ब्रह्म ज्ञानी टोला व प्राथमिक विद्यालय पुरैनी बासा स्थित है। स्कूल जाने के लिए विद्यालय के बीच नदी है। नदी पर ग्रामीणों द्वारा बांस का चचरी पुल बनाया गया था। अब पूरी तरह जर्जर हो चुका है। इसको लेकर स्कूल के शिक्षक व ग्रामीणों द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, अंचला अधिकारी सहित अन्य वरीय अधिकारियों, सांसद व विधायक को पत्र लिखा गया है। लेकिन अब तक इस दिशा में कोई सकारात्मक पहल नहीं हो की गई है। छात्र छात्रों की संख्या प्राथमिक विद्यालय सुलेमान टोला में बच्चों की संख्या 227, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय ब्रह्म ज्ञानी टोला में बच्चों की संख्या 106, प्राथमिक विद्यालय पुरैनी बासा में नामांकित बच्चों की संख्या 158। क्या कहते हैं प्रखंड विकास पदाधिकारी ग्रामीण व स्कूल के शिक्षकों द्वारा जर्जर चचरी पुल के क्षतिग्रस्त होने व नए पुल निर्माण को लेकर आवेदन दिया गया है। आवेदन के आधार पर समस्या को वरीय पदाधिकारी के पास प्रेषित कर दिया गया है।

वैशाली की बेटी ने पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल कर जिले का किया नाम रौशन

प्रात: किरण, संवाददाता

वैशाली। वैशाली की बेटी ने पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल कर जिले का नाम रौशन कर दिया है।वैशाली प्रखंड क्षेत्र के मदरना पंचायत स्थित वार्ड नंबर-6 निवासी शिक्षक मोहम्मद साजिद की सबसे बड़ी बेटी साजिया प्रवीण ने 486 अंक लाकर पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल किया है जिससे पूरे परिवार में खुशी का माहौल है। साजिया ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता को दिया है और आगे चलकर डॉक्टर बनने की इच्छा जाहिर की है।खास बात यह है कि साजिया के पिता उसी विद्यालय में गणित के शिक्षक है जिस विद्यालय में साजिया पढ़ती है साथ साजिया की मां भी राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय मन्नीपुर में उर्दू शिक्षिका के पद पर तैनात है।साजिया परवीन ने बताया कि उसको बचपन से माता और पिता का साथ मिला इसलिए सफलता का श्रेय अपने माता पिता को देना चाहती हूं।साजिया ने बताया कि 6 से 7 घण्टे सेल्फ स्टडी के बाद यह सफलता मिली है और जो बच्चे मैट्रिक की परीक्षा देते है उन्हें 6 से 7 घण्टा पढ़ाई करनी चाहिए।वहीं साजिया के शिक्षक पिता मोहम्मद साजिद ने बताया कि बचपन से साजिया अपनी मां के साथ स्कूल जाती थी और बड़ी होने पर वह खुद अपने साथ उसे लेकर स्कूल जाते थे जहाँ अपनी देख रेख में ही साजिया की पढ़ाई होती थी और इस सफलता से वह काफी खुश है।उन्होंने बताया कि साजिया आगे चलकर डॉक्टर बनना चाहती है और अपनी बेटी के इस सपने को पूरा करने का वह प्रयास करेंगे और साजिया जितना पढ़ना चाहेगी उतना उसे पढ़ाएंगे।बहरहाल शिक्षक माता पिता की सबसे बड़ी संतान साजिया ने अपनी एक छोटी बहन और दो छोटे भाई के साथ साथ तमाम वैसे छात्राओ के लिए एक मिसाल बन गई है जो ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए कम संसाधन के कारण सफलता के मुकाम तक नहीं पहुंच पाते है।साजिया की इस सफलता से पूरे परिवार में खुशी का माहौल है क्योंकि उनकी बेटी ने ना सिर्फ उनका बल्कि जिले का नाम भी रौशन कर दिया है।

बदमाशों की गोली से घायल युवक की 17 दिन बाद मौत

बाईक छीनने के दौरान बदमाशों ने मारी थी गोली

- थाना क्षेत्र के कोल्हायपट्टी, रजनी प्रतापनगर रोड में हुई थी घटना

प्रात: किरण, संवाददाता

मुरलीगंज (मधेपुरा) बाइक छीनने के दौरान बदमाशो ने बाइक सवार युवक को गोली मारी थी। गोली लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद निजी नर्सिंग मे रखकर ईलाज करवाया जा रहा था। करीब 16 दिन बाद रविवार की दोपहर युवक की मौत हो गयी। मौत के बाद पीड़ि।त स्वजन का रो रोकर बुराहाल है। मृतक युवक रजनी पंचायत के प्रतापनगर वार्ड तीन निवासी लंबू मुखिया (38) वर्ष है। बता दे कि लंबू मुखिया अपने करीबी को मुरलीगंज रेलवे स्टेशन पर छोड़कर वापस घर लौट रहे थे। इस दौरान कोल्हायपट्टी चौक पर दो युवक गाड़ी रोकवाकर थोड़ी दूर छोड़ने की बात कहे। इसपर उक्त युवक अपने साथ दोनो युवको को बैठाकर आगे बढ़ गये। इसी बीच कोल्हायपट्टी नहर समीप पहुंचते ही दोनो युवक बाइक चालक को रोकवा दिया और रुपए की मांग करने लगा। रूपया नही देने के बाद बाइक की चाभी लेने लगे। जिसका लंबू मुखिया द्वारा विरोध करने के दौरान उक्त दोनो बदमाशों ने सामने से गोली मारकर जख्मी करते हुए बाइक लेकर फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते हीं क्षेत्र में पुलिस की दबिश बढ़ाई गई है। लेकिन इसके बावजूद बदमाश पुलिस पकड़ से बाहर है। और ना ही बाईक बरामद हो पाया है। थानाध्यक्ष मंजू कुमारी ने कहा कि मामले में अज्ञात पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी। बदमशों की गिरफ्तारी नही हुई है। छानबीन जारी है।

महनार का नाका बन्द रहने से व्यवसायियों में दहशत

प्रात: किरण संवाददाता

महनार। 31 मार्च। महनार नगर का एक मात्र पुलिस नाका पिछले बीस साल से बन्द रहने के कारण बाजार में अपराधियों के हौसले बुलन्द है और व्यवसायियों में दहशत है। विदित हो कि वर्ष 2003 में बल के आभाव में इस नाका को बन्द कर दिया गया था और तब से यह बन्द ही है । बढ़ती आबादी के मद्देनजर नगर में दो अन्य नाका की स्थापना करनी चाहिए थी तो इसके विपरीत एक नाका पूर्व से था उसको भी बन्द कर दिया गया । इस नाका के बन्द होने से नगर में साईकल, बाइक चोरी व सड़क पर झपटमार की वारदात बढ़ गई और यातायात व्यवस्था भी चरमरा गयी। रात में दुकान का ताला तोड़ने की भी घटना होने लगी जिस कारण व्यवसायियों में दहशत है। वर्तमान में कई नये थाना खोले गए व लालगंज में बन्द पड़े नाका को भी चालू किया गया एवं हाजीपुर में नाका को ओपी का दर्जा दे कर उसे उत्क्रमित किया गया किन्तु महनार अनुमंडल मुख्यालय है किंतु इसके बावजूद भी नगर के एक मात्र नाका में पुलिस बल पदस्थापित कर इसे चालू करने का कष्ट पुलिस अधीक्षक ने नही किया जो कि महनार के साथ सौतेला व्यवहार का नमूना है। यहां के जनप्रतिनिधि भी इतने निकम्मे है कि चुनाव लड़ने व वोट लेने के लिए दर्जनों लोग मैदान में आजाते है किंतु इस काम के लिए पुलिस अधीक्षक से भेंट करने की बात तो दूर एक पत्र भी यह लोग उनको नही लिखते है ।

सिमुलतला आवासीय विद्यालय ने बिहार बोर्ड मैट्रिक रिजल्ट में फिर जलवा दिखाया

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई बिहार बोर्ड के मैट्रिक रिजल्ट में सिमुलतला आवासीय विद्यालय का फिर से जलवा देखने को मिला है। इस स्कूल के 6 छात्र टॉप टेन में शामिल हैं। रविवार का दिन इस विद्यालय के लिए फिर से खास रहा. इस स्कूल के अदित्य कुमार को थर्ड रैंक मिला है जबकि विक्की कुमार ने छठा स्थान हासिल किया। सिमुलतला स्कूल के मित्तल कुमार और अमन कुमार मैट्रिक के नतीजों की मेरिट लिस्ट में 9 वें स्थान पर रहे, वहीं विक्की और सावन 10 वे रैंकर बने। जमुई जिले का सिमुलतला आवासीय विद्यालय जो कि सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट की स्थापना नेतरहाट की कमी को दूर करने के लिए 2010 में हुई थी। इस स्कूल में पढ़ने वाले छात्र पहली बार साल 2015 में मैट्रिक की परीक्षा में शामिल हुए थे। तब से परीक्षा परिणाम में यह स्कूल टॉप करते आ रहा है। यहां के छात्र मैट्रिक परीक्षा में टॉपर्स होते हैं और इसी कारण इस स्कूल को टॉपर्स की फैक्ट्री कहा जाता है। बात अगर 2015 के मैट्रिक परीक्षा परिणाम की करें तो इस स्कूल के 108 छात्र उस साल मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए थे जिसमें टॉप 10 में शामिल 31 छात्रों में 30 छात्र इसी स्कूल के थे. साल 2016 में इस स्कूल के 121 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए और टॉप 10 की लिस्ट में इस स्कूल के 42 छात्र शामिल रहे. 2017 में इस स्कूल के 113 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए जिसमें टॉप 10 की लिस्ट में इस स्कूल के 12 छात्र शामिल थे. साल 2018 में 112 छात्र परीक्षा में शामिल हुए टॉप 10 में उसी साल इस स्कूल के 17 छात्र शामिल थे। साल 2019 में सिमुलतला आवासीय विद्यालय के कुल 119 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए जिसमें टॉप 10 में इस स्कूल के 16 छात्रों ने अपनी जगह बनायी थी. ।

महुआ के ग्रामीण परिवेश में पढ़ी छात्रा ने मैट्रिक परीक्षा में राज्य में लाया नौवां स्थान

प्रात: किरण, संवाददाता

महुआ बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के द्वारा मैट्रिक परीक्षा का परिणाम जारी कर दिया जाने के बाद प्रखंड क्षेत्र में कहीं खुशी कहीं गम का माहौल बना हुआ है। रविवार के दोपहर जैसे ही मैट्रिक की परीक्षा देने वाले छात्राओं को रिजल्ट जारी होने का पता चला तो सभी ने साइबर कैफे के साथ-साथ मोबाइल नेट से ही अपना रिजल्ट चेक करना शुरू कर दिया। अपना अपना रिजल्ट देखते ही छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। वही बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं और उनके परिजनों के साथ-साथ उनके विद्यालय परिवार और कोचिंग संस्थानों में भी जश्न का माहौल बना हुआ है।इसी कड़ी में महुआ प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय रसूलपुर मुबारक की छात्रा स्मृति कुमारी ने पुरे बिहार में 9वा स्थान लाते हुए अपने परिजनों के साथ-साथ अपने विद्यालय परिवार और गांव समाज और जिले का भी नाम रौशन किया है। विद्यालय के शिक्षक विद्यालय के शिक्षक मनमोहन कुमार, अरविंद कुमार, शिक्षिका नीतू कुमारी आदि ने बताया कि स्मृति कुमारी गुड्डू राय की पुत्री है। स्मृति की मां स्मृति की मां प्रमिला देवी ग्रहणी है और स्मृति के पिता गुड्डू राय मेहनत मजदुरी करते है शिक्षक मनमोहन कुमार ने बताया कि हमे इस छात्रा को वर्ग प्रथम से ही लगातार दसवीं तक पढ़ने का मौका मिला। वह शुरू से ही मेधावी छात्रा थी और पूरे लगन के साथ अपनी पढ़ाई किया करती थी। हालांकि काफी निर्धन परिवार से होने के कारण उसे अपने पढ़ाई के दौरान काफी आर्थिक दिक्कतों का भी सामना करना पड़ा। जिसे समय-समय पर हमने भी उसकी पूरी सहायता की ।आज स्मृति की सफलता पर उसके परिजनों के साथ-साथ विद्यालय में भी उत्सवी माहौल बना हुआ है। उन सभी ने स्मृति के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उसके बेहतर भविष्य की कामना की है। वही स्मृति के पूरे बिहार में 9 वा स्थान लाने की खबर सुनते ही उसके ननिहाल हरपुर ओस्टी में भी खुशी से लोग उछल पड़े वही स्मृति को ननिहाल में पहुंचकर दर्जनों लोगों ने उसे मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार करते हुए उसके पूरे परिवार को बधाइयां दी है। स्मृति को बधाई देने वालों में विपिन कुमार, संजय चौधरी,संतोष कुमार रोशन कुमार प्रमोद कुमार शिवेंद्र कुमार सरोज कुमार राजेश कुमार गौरव कुमार आदि शामिल हैं।वही द हॉप कोचिंग संस्थान कन्हौली के निदेशक पंकज कुमार सुमन ने भी बताया की हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी उनके कोचिंग संस्थान के साथ छात्राओं ने बिस्तर प्रदर्शन करते हुए कोचिंग संस्थान के साथ-साथ अपने परिवार गांव समाज प्रखंड और जिले का नाम और आसान किया है बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं में कुणाल जयसवाल - 438,कुणाल पटेल 392, शिवम पटेल 374,साहिल जयसवाल 335,रूबी कुमारी 325,अनुराधा 313अंजली - 327रिया -318,सुरभि 312 पियूष 337,ऋतिक 300 रौशन ने 300 अंक ला कर बेहतर प्रदर्शन किया है।

ग्राम कचहरी रौन में दो वादों का किया गया सफलता पूर्वक निष्पादन

प्रात: किरण, संवाददाता

अलौली। ग्राम कचहरी रौन में दो वादों का निपटारा किया गया। ग्राम कचहरी में आए दो वादों में एक बड़तर सतघट्टा के पति पत्नी घरेलू विवाद संबंधित तथा दूसरा लदौड़ा का जमीन विवाद से संबंधित मामला को निष्पादन किया गया। विदित हो कि लदौड़ा का जमीन संबंधित विवाद काफी पुराना है। विगत तीन बार स्थल एवं ग्राम कचहरी में पंचायत हुई थी। आज सफलतापूर्वक पुराने विवादों का निपटारा किया गया। पंचायत में पंच सरपंच संघ के जिला अध्यक्ष किरण देव यादव, ग्राम कचहरी रौन के सरपंच श्रवण कुमार, पैक्स अध्यक्ष रविंद्र यादव, पूर्व सरपंच राजकुमार यादव, गणमान्य पंच रामशोभा यादव, पक्षरान राम उदगार यादव दिनेश यादव राम सागर यादव अरुण यादव गंगाराम यादव मुसहरु यादव धनंजय यादव महेश वर्मा शिवशंकर नीतीश कुमार, जयराम यादव, सुशीला देवी आदि मौजूद थे।

लोकसभा चुनाव : 2024 , नामांकन पत्रों की जांच का पहला चरण पूरा

- सात अभ्यर्थियों का पर्चा स्वीकृत , पांच किए गए निरस्त
- नाम वापसी के साथ प्रतीक वितरण 02 को , 19 अप्रैल को मतदान
- केकेएम कॉलेज में होगी 04 जून को वोटों की गिनती
- निष्पक्ष चुनाव के लिए जिला प्रशासन कटिबद्ध : डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के चुनाव के लिए दाखिल कुल बारह नामांकन पत्रों की जांच का काम पूरा हो गया। भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइंस के मुताबिक सात नामजदगी के पर्चे स्वीकृत किए गए वहीं विभिन्न वजहों से पांच नामांकन पत्रों को निरस्त कर दिया गया। संविक्षा कार्य को लेकर समाहरणालय में खास गहमा-गहमी देखी गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट राकेश कुमार ने बताया कि 40 जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के लिए निर्वाचन प्रक्रिया जारी है। भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइंस के मुताबिक इस क्षेत्र के लिए मतदान प्रथम चरण में 19 अप्रैल को कराया जाना है। इसके लिए शनिवार को दाखिल किए गए नामजदगी के पर्चों की जांच की गई। राजद उम्मीदवार अर्चना कुमारी , एसयूसीआई प्रत्याशी संतोष कुमार दास , बसपा उम्मीदवार सकलदेव दास , लोकतांत्रिक सामाजिक न्याय पार्टी के उम्मीदवार डॉ. जगदीश प्रसाद , लोजपा रामबिलास के उम्मीदवार अरुण कुमार भारती , राष्ट्रीय जन संभावना पार्टी के प्रत्याशी श्रवण कुमार और निर्दलीय सुभाष पासवान का पर्चा वैध पाए जाने के बाद इसे स्वीकृत कर दिया गया वहीं विभिन्न वजहों के चलते भारतीय लोक चेतना पार्टी के उम्मीदवार गुड़िया देवी , समझदार पार्टी के उम्मीदवार गौतम पासवान , भारतीय एकता पार्टी के उम्मीदवार अनिल चौधरी , निर्दलीय चंद्रशेखर कुमार और उपेंद्र रविदास के नामांकन पत्रों को निरस्त कर दिया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने आगे कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार अभ्यर्थी 02 अप्रैल तक नाम वापस ले सकेंगे। इसी दिन अपराह्न 03 : 00 बजे से सुपात्र अभ्यर्थियों के बीच प्रतीक का वितरण किया जाएगा। उन्होंने 40 जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के लिए 19 अप्रैल को सुबह 07 : 00 बजे से अपराह्न 04 : 00 बजे तक मतदान कराए जाने की बात बताते हुए कहा कि स्थानीय केकेएम कॉलेज में 04 जून को वोटों की गिनती कराई जाएगी और इसी दिन परिणाम घोषित कर दिए जाने की उम्मीद है। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने कहा कि लोकसभा का चुनाव किताबी ढंग से संपन्न कराना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सुपात्र वोटरों से अपील करते हुए कहा कि 19 अप्रैल को पहले मतदान फिर जलपान करें और प्रजातंत्र की जड़ों को और अधिक मजबूत करने में अहम भूमिका निभाएं। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने प्रजातंत्र के महापर्व को उल्लास के वातावरण में मनाए जाने की अपील की।

इस ब्रह्माण्ड में हर छठे मौत के लिए प्रदुषण जिम्मेदार- पर्यावरणविद् आनंद किशोर मिश्रा

- द बीएमजे के रिपोर्ट के अनुसार बाहरी वायु प्रदूषण भारत में प्रति वर्ष 21 लाख 80 हजार लोगों की जिंदगी छीन लेता है

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई। साईकिल यात्रा एक विचार, जमुई के बैनर तले आज अपने रविवारीय यात्रा के 430 वीं क्रम में श्री कृष्णा सिंह स्टेडियम से बाजार बुधवन तालाब चौंक होते हुए विट्ठलपुर ग्राम पहुंच कर लोगों को अपने आसपास पर्यावरण को सुरक्षित करने की अपील की गई। इस अवसर पर लवकिशोर मिश्रा के निजी जमीन पर पौधा रोपण किया गया एवं उनके द्वारा ही सभी पौधे को संरक्षण रखने का भी संकल्प लिया गया। मौके पर उपस्थित शिक्षक एवम पर्यावरणविद् आनंद किशोर मिश्रा द्वारा बताया गया की दुनिया भर में हर तरह के प्रदूषण का कहर बढ़ता ही जा रहा है। 2019 में विश्व के करीब 90 लाख लोगों की मौत के लिए प्रदूषण जिम्मेदार था। प्रकाशित अध्ययन के अनुसार बाहरी वायु प्रदूषण भारत में प्रति वर्ष 21 लाख 80 हजार लोगों की जिंदगी छीन लेता है। जो की हर छठा मौत का जिम्मेदार है। यह आंकड़े हर साल बढ़ता जाता है। जो भविष्य के लिए खतरनाक साबित होता जा रहा है। इसके बचाव के लिए जहां भी संभव हो पौधा रोपण करना चाहिए ताकि हमारा वातावरण स्वच्छ रह सकें। सदस्य विवेक कुमार ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण के बचाव के लिए अपने आसपास जितना भी संभव हो हरा भरा क्षेत्र बनाने का प्रयास करें प्राकृतिक संसाधनों को बचाव के लिए सामूहिक रूप से जागरूक होकर कार्य करना चाहिए। ताकि अपने भविष्य को सुरक्षित वातावरण दें सकें। इस अवसर पर आनंद किशोर मिश्रा, राहुल सिंह, धीरज कुमार सिंह, शैलेश भारद्वाज, विवेक कुमार, मोहित कुमार, लड्डू मिश्रा, हर्ष कुमार सिन्हा, लव किशोर मिश्रा, रवि मिश्रा, डबलु पासवान सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे।

सेवानिवृति पर सम्मान समारोह आयोजित

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर।शिक्षक को समयनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ एवं ज्ञाननिष्ठ होना चाहिए।शिक्षक ही ऐसा प्राणी है जिसके हाथों से निर्माण एवं प्रलय दोनों संभव है। शिक्षा रुपी प्रकाश से वह अज्ञान रुपी अंधकार को भगाकर अपने छात्रों में एक जिम्मेदार नागरिक होने का संस्कार देता है। मध्य विद्यालय कुतुबपुर हाजीपुर में शिक्षिका सुमन सिन्हा की सेवा निवृत्ति के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में वक्ताओं ने उक्त बातें कही। विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ पंकज कुमार ने कहा कि शिक्षक को शालीन होने के साथ ही अपने ज्ञान कौशल को हमेशा अपडेट करते रहना चाहिए। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले गरीब बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है। शिक्षकों को सरकार एवं समाज दोनों की कसौटी पर खड़ा उतरना होगा।इस अवसर पर शिक्षिका डॉ सुधा कुमारी शर्मा ने कहा कि महिलाओं के लिए प्रारंभिक शिक्षा में अवसर बढ़े हैं। क्योंकि शिक्षा शास्त्र भी महिलाओं को प्रारंभिक शिक्षा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानता है। इसलिए हम महिलाओं को अपेक्षाओं पर खरा उतरने हेतु सचेष्ट रहना होगा। मोहम्मद मुमताज ने भी आदर्श शिक्षक की व्याख्या की और कहा कि सुमन सिन्हा में आदर्श शिक्षक में पाए जाने सभी गुण थे। अमरेंद्र कुमार ने बताया कि अपने ही समाज के बच्चों को हम शिक्षित करते हैं।हमारा समाज हमसे अपेक्षा भी करता है और सामाजिक चेतना का हमें केंद्र बिंदु भी मानता है। इसलिए हमें सजग,सहज एवं शिष्ट रहते हुए बच्चों के ज्ञान ,कौशल में वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। समारोह को मधु कुमारी,अरबिंद कुमार, सरोज सिन्हा, अनीता कुमारी, विद्याभूषण,रंजीत झा, रानी विभा,सौरभ कुमार, रंजन कुमार, रेखा कुमारी, सुप्रिया, नलिनी एवं अनामिका आदि ने भी संबोधित किया एवं सेवानिवृत्त शिक्षिका सुमन सिन्हा को भावभीनी बिदाई दी।

हथियार के बल पर लोजल मैन से लूट लिए हजारों रुपए

प्रात: किरण, संवाददाता

महुआ। महुआ थाना क्षेत्र के हकीमपुर पेट्रोल पंप पर एक बाइक सवार अपराधियों ने हथियार के बल पर 60 हजार रुपए लूट कर फरार हो गए। घटना शनिवार की रात आठ बजे के आसपास की बताई जाती हैं।वहीं घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचीं और मामले की छानबीन में जुट गई। मिली जानकारी के अनुसार शनिवार की रात के लगभग 8 बजे के आसपास महुआ मुजफ्फरपुर मुख्य सड़क मार्ग के हकीमपुर गांव स्थित मां पेट्रोल पंप पर एक बाइक पर सवार दो युवक पहुंचे और पहुंचते ही हथियार निकाल कर नोजल मैन को अपने कब्जे में ले लिया और उससे लगभग 60 हजार लुटकर हथियार लहराते हुए आराम से वहां से भाग निकलने में कामयाब रहे। घटना के बाद लोगों ने इसकी सूचना महुआ थाने की पुलिस को दी। सूचना मिलते ही महुआ पुलिस मौके पर पहुंचीं और मामले की छानबीन में जुट गई। बताया जाता है।

सम्पादकीय

मजबूत बैंकिंग जरूरी

तकरीबन एक दशक तक फंसे कर्ज यानी गैर निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) में इजाफा होने तथा जोखिम आंकने, खासकर कॉर्पोरेट ऋण के जोखिम के अंकन में शिथिलता के बाद अब देश का बैंकिंग क्षेत्र अच्छी स्थिति में नजर आ रहा है। उसका मुनाफा बढ़ रहा है और निवेशकों का विश्वास नए सिरे से बहाल हो रहा है। हाल ही में फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री तथा इंडिया बैंक्स एसोसिएशन के एक सर्वेक्षण में इसकी पुष्टि हुई है। सर्वेक्षण में 23 बैंकों को शामिल किया गया था और उसने दिखाया कि बैंकिंग क्षेत्र कई मानकों पर बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। इसमें परिसंपत्ति की गुणवत्ता तथा ऋण वृद्धि शामिल थी। सर्वे के निष्कर्षों में यह भी कहा गया कि बैंक अपेक्षित ऋण हानि (ईसीएल) व्यवस्था को अपनाने को भी तैयार हैं और वे जलवायु अनुकूलन तथा उत्सर्जन में कमी की दिशा में भी कदम उठा रहे हैं। इसमें पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियां अपनाने को आर्थिक मदद देने, कागज का इस्तेमाल कम करने तथा तटीय इलाकों में जैव ईंधन का इस्तेमाल रोकने जैसे कदम शामिल हैं। ये पर्यावरण, सामाजिक और संचालन (ईएसजी) पहलों का हिस्सा हैं। सर्वेक्षण में शामिल बैंकों में से 83 फीसदी ने कहा कि उनके ऋण मानक आसान हुए हैं या अपरिवर्तित रहे हैं। उन्होंने अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक वृद्धि का अनुमान दशार्या, एनपीए में कमी आने की बात कही और कहा कि क्षेत्रवार जोखिम में कमी आने की उम्मीद है। चुनिंदा क्षेत्रों के लिए दीर्घकालिक ऋण वितरण में इजाफा हुआ है। इसमें अधोसंरचना, लौह और इस्पात, खाद्य प्रसंस्करण तथा औषधि क्षेत्र शामिल हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि ये वही क्षेत्र हैं जहां एनपीए का स्तर भी अधिक है। अगर इन क्षेत्रों की पहुंच आसान ऋण तक बनी रहती है तो इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। बैंकों को एक बार फिर फंसे हुए कर्ज के चक्र में फंसने से बचना चाहिए। आमतौर पर बैंक अपने बही खातों में संकटग्रस्त परिसंपत्तियों को लेकर संतुष्ट हैं। सर्वेक्षण में शामिल 77 फीसदी बैंकों ने कहा कि बीते छह महीनों में उनके एनपीए में कमी आई है। आधे से अधिक बैंकों का मानना है कि अगले छह महीनों में सकल एनपीए 3-3.5 फीसदी के दायरे में रहेगा। यह आशावाद बेवजह नहीं है क्योंकि सकल एनपीए वित्त वर्ष 2018 के अंत के 11.6 फीसदी से कम होकर गत वर्ष सितंबर में 3.2 फीसदी रह गया था।

क्या है आचार संहिता?

संजय गोस्वामी

लोकतांत्रिक प्रणाली में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र के आधार हैं। इसमें मतदाताओं के बीच अपनी नीतियों तथा कार्यक्रमों को रखने के लिए सभी उम्मीदवारों तथा सभी राजनीतिक दलों को समान अवसर और बराबरी का स्तर प्रदान किया आचार संहिता के तहत बताया गया कि क्या करें और क्या न करें। 1962 के लोकसभा आम चुनाव में पहली बार चुनाव आयोग ने इस संहिता को सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों में वितरित किया। इसके बाद 1967 के लोकसभा और विधानसभा के चुनावों में पहली बार राज्य सरकारों से आग्रह किया गया कि वे राजनीतिक दलों से इसका अनुपालन करने को कहें और कमोबेष ऐसा हुआ भी। इसके बाद से लगभग सभी चुनावों में आदर्ष आचार संहिता का पालन कमोबेष होता रहा है। गौरतलब यह भी है कि चुनाव आयोग समय-समय पर आदर्ष आचार संहिता को लेकर राजनीतिक होते ही राज्य सरकारों और प्रशासन पर कई तरह के अंकुश लग जाते हैं। सरकारी कर्मचारी चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक निर्वाचन आयोग के तहत आ जाते हैं। आचार संहिता में सभी दलों के लिये कुछ खास दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इनमें सरकारी मषीनरी और सुविधाओं का उपयोग चुनाव के लिये न करने और मंत्रियों तथा अन्य अधिकारियों द्वारा अनुदानों, नई योजनाओं आदि का ऐलान करने की मनाही है। मंत्रियों तथा सरकारी पदों पर तैनात लोगों को सरकारी दौरे में चुनाव प्रचार करने की इजाजत भी नहीं होती। सरकारी पैसे का इस्तेमाल कर विज्ञापन जारी नहीं किये जा सकते हैं। दलों से चर्चा करता रहता है, ताकि इसमें सुधार की प्रक्रिया बराबर चलती रहे। भारत में होने वाले चुनावों में अपनी बात मतदाता तक पहुंचाने के लिये चुनाव सभाओं, जुलूसों, भाषणों, नारेबाजी और पोस्टरों आदि का इस्तेमाल किया जाता है। इसी के मद्देनजर आदर्ष आचार संहिता के तहत क्या करें और क्या न करें की एक लंबी-चौड़ी फेहरिस्त है, लेकिन हम बात उन्हीं मुद्दों पर करेंगे, जो आदर्ष आचार संहिता को इतना अहम बना देते हैं। वर्तमान में प्रचलित आदर्ष आचार संहिता में राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के सामान्य आचरण के लिये दिशा -निर्देष दिये गए हैं। सबसे पहले तो आदर्श आचार संहिता लागू इनके अलावा चुनाव प्रचार के दौरान किसी की प्राइवेट लाइफ का जिक्र करने और सांप्रदायिक भावनाएं भड़काने वाली कोई अपील करने पर भी पाबंदी लगाई गई है। यदि कोई सरकारी अधिकारी या पुलिस अधिकारी किसी राजनीतिक दल का पक्ष लेता है तो चुनाव आयोग को उसके खिलाफ कार्रवाई करने का अधिकार है। इसके अलावा चुनाव सभाओं में अनुषासन और शिस्टाचार कायम रखने तथा जुलूस निकालने के लिये भी दिशा-निर्देश बनाए गए हैं। किसी उम्मीदवार या पार्टी को जुलूस निकालने या रैली और बैठक करने के लिये चुनाव आयोग से अनुमति लेनी पड़ती है और इसकी जानकारी निकटतम थाने में देनी होती है। आचार संहिता की नवीन तकनीकें जब डिजिटलीकरण और हाई-टेक होने का दौर चल रहा हो तो भला चुनाव आयोग क्यों पीछे रहता। आदर्ष आचार संहिता को और यूजर-फ्रेंडली बनाने के लिये कुछ समय पहले चुनाव आयोग ने ह्यबटप्ळप्स्ह्ल एप लॉन्च किया। तेलंगाना, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेष, मिजोरम और राजस्थान के हालिया विधानसभा चुनावों में इसका इस्तेमाल हो रहा है। ईविम के जरिये चुनाव वाले राज्यों में कोई भी व्यक्ति आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की रिपोर्ट कर सकता है। इसके लिये उल्लंघन के दृष्य वाली केवल एक फोटो या अधिकतम दो मिनट की अवधि का वीडियो रिकॉर्ड करके अपलोड करना होता है। उल्लंघन कहां हुआ है, इसकी जानकारी जरिये ऑटोमेटिकली संबंधित अधिकारियों को मिल जाती है। शिकायत करने वाला का पहचान गोपनीय रखते हुए रिपोर्ट के लिये यूनीक आईडी दी जाती है। यदि षिकायत सही पाई जाती है तो एक निष्चित समय के भीतर कार्रवाई की जाती है। यह तो बात हुई इस एप के फायदों की, लेकिन हम सब यह भी जानते हैं कि नफे के साथ नुकसान भी जुड़ा होता है। इसी के मद्देनजर इस एप के गलत इस्तेमाल को रोकने के भी इंतजाम किये गए हैं। यह एप केवल आदर्ष आचार संहिता के उल्लंघन के बारे में काम करता है। तस्वीर लेने या वीडियो बनाने के बाद यूजर्स को रिपोर्ट करने के लिये केवल पाँच मिनट का समय मिलता है और इसमें पहले से ली गई फोटोज या वीडियो अपलोड नहीं किये जा सकते। हाई-टेक होने की दौड़ में सीविजिल एप के अलावा चुनाव आयोग ने और कई एडवांस तकनीकों को भी अपनाया है। इनमें नेषनल कंप्लेंट सर्विस, इंटीग्रेटेड कॉन्टैक्ट सेंटर, सुविधा सुगम, इलेक्षन मॉनिटरिंग डैषबोर्ड और वन वे इलेक्ट्रॉनिकली ट्रांसमिटेड पोस्टल बैलट आदि शामिल हैं। चुनाव आयोग आदर्श आचार संहिता तथा अन्य उपायों के जरिये चुनावों को निश्पक्ष और साफ-सुथरा बनाने के प्रयास लगातार करता रहता है और इसके लिये उसे अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर सराहा भी गया है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि भारत जैसे बड़े देष में चुनावों को केवल आदर्ष आचार संहिता के रहमो-करम पर नहीं छोड़ा जा सकता है। हैलीपैड, मीटिंग ग्राउंड, सरकारी बंगले, सरकारी गेस्ट हाउस जैसी सार्वजनिक जगहों पर कुछ उम्मीदवारों का कब्जा नहीं होना चाहिये। इन्हें सभी उम्मीदवारों को समान रूप से मुहैया कराना चाहिये। इन सारी कवायदों का मकसद सत्ता के गलत इस्तेमाल पर रोक लगाकर सभी उम्मीदवारों को बराबरी का मौका देना है। आचार संहिता को लेकर सर्वाच्च न्यायालय का नजरिया इस मुद्दे पर देष की आला अदालत भी अपनी मुहर लगा चुकी है। सर्वाच्च न्यायालय इस बाबत 2001 में दिये गए अपने एक फैसले में कह चुका है कि चुनाव आयोग का नोटिफिकेषन जारी होने की तारीख से आदर्ष आचार संहिता को लागू माना जाएगा। इस फैसले के बाद आदर्ष आचार संहिता के लागू होने की तारीख से जुड़ा विवाद हमेषा के लिये समाप्त हो गया। अब चुनाव अधिसूचना जारी होने के तुरंत बाद जहां चुनाव होने हैं, वहां आदर्ष आचार संहिता लागू हो जाती है। यह सभी उम्मीदवारों, राजनीतिक दलों तथा संबंधित राज्य सरकारों पर तो लागू होती ही है, साथ ही संबंधित राज्य के लिये केंद्र सरकार पर भी लागू होती है। संबंधी मामलों को तेजी से निपटाने का जाता है। इस संदर्भ में आदर्श आचार संहिता का उद्देश्य सभी राजनीतिक दलों के लिए बराबरी का समान स्तर उपलब्ध कराना प्रचार, अभियान को निष्पक्ष तथा स्वस्थ्य रखना, दलों के बीच झगड़ों तथा विवादों को टालना है।

छपास और दिखास के स्वगढ़ित मापदंड

जिन चर्चित परन्तु विवादित सांसदों को इसबार पार्टी ने प्रयाशी नहीं बनाया है उनमें भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर, उत्तरा कन्नड़ा के सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार हेगड़े, दक्षिणी दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी तथा पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा जैसे नाम शामिल हैं। जबकि गाजियाबाद से सांसद केन्द्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, बाराबंकी के सांसद उपेन्द्र रावत, बदायूं से स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा मौर्य, कानपुर नगर सीट से सत्यदेव पचौरी केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, गुजरात के वडोदरा से बीजेपी सांसद रंजनबेन भट्ट, साबरकांठा से भीखाजी दुधाजी ठाकोर, हजारी बाग के सांसद जयंत सिन्हा जैसे और भी कई नेता हैं जो किसी न किसी कारणवश स्वयं चुनाव लड़ना ही नहीं चाहते। जिन सांसदों के टिकट काटे गए हैं उनमें कई विवादित चेहरों पर यह चर्चा छिड़ी है कि खांटी हिंदुत्ववाद की राजनीति पर विश्वास करने वाली तथा इसी एजेंडे पर चलते हुये सफलता की मंजिलें तय करने वाली भाजपा ने आखिर उन सांसदों का टिकट क्यों काट दिया जो पार्टी के ही एजेंडे को समय समय पर आगे बढ़ाते हुये मुखरित होकर अपनी बात कहते रहे हैं ? उदाहरण के तौर पर प्रज्ञा ठाकुर को 2019 में जिस समय भाजपा ने मध्यप्रदेश के भोपाल की सीहोर लोकसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया था उससे पूर्व वे मालेगांव आतंकी घटनाओं के लिए जेल जा चुकी थीं तथा चुनाव के समय जमानत पर थीं। उनकी यही उपलब्धि उनकी लोकप्रियता का कारन बनी। चुनाव जीतने के बाद एक के बाद एक कर उन्होंने कई ऐसे बयान दिये जिससे पार्टी की किरकिरी होने लगी। कभी गांधी के विरुद्ध बोलना तो कभी गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताना, कभी शहीद हेमंत करकरे को श्राप देने जैसी शर्मनाक बात कहना तो कभी हिन्दू समाज के लोगों को चाकू तेज करवाकर घरों में रखने की सलाह देना

तनवीर जाफरी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

आगामी लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने अपने कई पूर्व सांसदों को पुनः पार्टी प्रत्याशी नहीं बनाया। यदि आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो बीजेपी ने अभी तक लगभग 34 प्रतिशत वर्तमान सांसदों के टिकट काटे हैं। कहा जा रहा है बीजेपी ने यह कदम सत्ता विरोधी लहर से बचने के लिए उठाया है। जिन चर्चित परन्तु विवादित सांसदों को इसबार पार्टी ने प्रयाशी नहीं बनाया है उनमें भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर, उत्तरा कन्नड़ा के सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार हेगड़े, दक्षिणी दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी तथा पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा जैसे नाम शामिल हैं। जबकि गाजियाबाद से सांसद केन्द्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, बाराबंकी के सांसद उपेन्द्र रावत, बदायूं से स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा मौर्य, कानपुर नगर सीट से सत्यदेव पचौरी केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, गुजरात के वडोदरा से बीजेपी सांसद रंजनबेन भट्ट, साबरकांठा से भीखाजी दुधाजी ठाकोर, हजारी बाग के सांसद जयंत सिन्हा जैसे और भी कई नेता हैं जो किसी न किसी कारणवश स्वयं चुनाव लड़ना ही नहीं चाहते। जिन सांसदों के टिकट काटे गए हैं उनमें कई विवादित चेहरों पर यह चर्चा छिड़ी है कि खांटी हिंदुत्ववाद की राजनीति पर विश्वास करने वाली तथा इसी एजेंडे पर चलते हुये सफलता की मंजिलें तय करने वाली भाजपा ने आखिर उन सांसदों का टिकट क्यों काट दिया जो पार्टी के ही एजेंडे को समय समय पर आगे बढ़ाते हुये मुखरित होकर अपनी बात कहते रहे हैं ?

उदाहरण के तौर पर प्रज्ञा ठाकुर को 2019 में जिस समय भाजपा ने मध्यप्रदेश के भोपाल की सीहोर लोकसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया था उससे पूर्व वे मालेगांव आतंकी घटनाओं के लिए जेल जा चुकी थीं तथा चुनाव के समय जमानत पर थीं। उनकी यही उपलब्धि उनकी लोकप्रियता का कारन बनी। चुनाव जीतने के बाद एक के बाद एक कर उन्होंने कई ऐसे बयान दिये जिससे पार्टी की किरकिरी होने लगी। कभी गांधी के विरुद्ध बोलना तो कभी गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताना, कभी शहीद हेमंत करकरे को श्राप देने जैसी शर्मनाक बात कहना तो कभी हिन्दू समाज के लोगों को चाकू तेज करवाकर घरों में रखने की सलाह देना, ऐसी कई बातें थीं जो विवादित व आपत्तिजनक तो जरूर होती थीं परन्तु देश में बढ़ते वर्तमान साम्प्रदायिक वैमनस्यपूर्ण वातावरण में प्रज्ञा ठाकुर जैसे कट्टरवादी लोगों को लोकप्रियता व प्रसिद्धि भी दिलाती थीं। ऐसा ही एक नाम अनंत कुमार हेगड़े का भी है। जन्म से ही यह संघ संस्कारी हैं लिहाजा यह माना जा सकता है कि इनके मुंह से निकले हर बोल संघ की विचारधारा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। यह मनुस्मृति लागू करने की बात खुलकर करते रहे हैं। संविधान से धर्मनिरपेक्ष शब्द हटाने के लिए संविधान में संशोधन की बात करते हैं। हेगड़े ताज महल को मूल रूप से एक शिव मंदिर और ताज महल को तेजो महालय बताते फिरते हैं। हेगड़े न केवल राहुल गांधी को कांग्रेस प्रयोगशाला में पाया जाने वाला हाइब्रिड उत्पाद बता चुके हैं बल्कि राहुल को यह भी कह चुके हैं कि राहुल गांधी मुस्लिम पिता और ईसाई मां से पैदा होने के बावजूद ब्राह्मण होने का दावा करते हैं। सत्ता के अहंकार के नशे में चूर हेगड़े ने एक पूर्व आईएएस अधिकारी एस. शशिकांत सेंथिल को केवल गद्दार ही नहीं कहा था बल्कि उन्हें पाकिस्तान जाने की सलाह भी दे डाली थी। हेगड़े की बदजुबानी व उनके संघी संस्कार का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वे महात्मा गांधी के नेतृत्व वाली आजादी की लड़ाई को महज एक नाटक मानते हैं। वे गांधी को महात्मा भी नहीं मानते साथ ही यह संगीन आरोप भी लगाते हैं कि भारत में स्वतंत्रता आंदोलन अंग्रेजों की सहमति और समर्थन से चलाया गया था। कुछ समय पूर्व ही हेगड़े भाजपा द्वारा 400 सीटें जितने के दावे की वजह संविधान संशोधन कर मनुस्मृति लागू करना बता चुके हैं। इसी तरह दक्षिणी दिल्ली के जिस सांसद रमेश बिधूड़ी का टिकट कटा है ये वही हैं जिन्होंने लोकसभा में अमरोहा के संसद दानिश अली के विरुद्ध धर्म आधारित अपमानजनक टिप्पणी भी की थी और उन्हें धमकाया भी था। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में देश को बदनाम करने वाली इस घटना ने सुर्खियां बटोरी थीं। जबकि पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा भी वह नेता हैं जिन्होंने शाहीन बाग आंदोलन के समय बेहद घटिया व अपमानजनक बातें की थीं। परन्तु मौजूदा बढ़ते साम्प्रदायिक राजनैतिक रुझान के अनुसार इन सभी नेताओं का कद इनकी विवादित टिप्पणियों से जरूर ऊंचा हुआ भले ही इनकी पार्टी को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शर्मिन्दिगी का सामना क्यों न करना पड़ा हो। उपरोक्त नेताओं के विवादित बोल और इसके चलते इन्हें मिलने वाली शोहरत के सन्दर्भ में अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 25 मई 2019 को दूसरी बार चुनकर आने के बाद अपने नवनिर्वाचित सांसदों को दिया गया सफलता का मोदी मंत्र जरूर याद करिये जब उन्होंने कहा था कि यदि कुछ करना है तो छपास और दिखास से बचें। अखबार में छपने और टीवी पर दिखने से बचें। नेता कम, शिक्षक अधिक नजर आयें। केवल सांसदों को ही नहीं बल्कि 2020 में सिविल सर्विसेज प्रोबेशनर्स को भी प्रधानमंत्री मोदी दिखास और छपास रोगों से दूर रहने की सलाह दे चुके हैं।

सवाल यह है कि क्या प्रज्ञा ठाकुर, अनंत कुमार हेगड़े, रमेश बिधूड़ी, व परवेश सिंह वर्मा जैसे लोगों का टिकट उनके अनर्गल बयानों की वजह से काटा गया ? यदि इसे मापदंड माना जाये तो अनुराग ठाकुर का टिकट क्यों नहीं काटा गया जिसने ह्यगोली मारो सालो को जैसा नारा दिया था ? फिर बेंगलुरु दक्षिणी से तेजस्वी सूर्या का टिकट क्यों नहीं काटा गया जिनके विवादित बयानों से मध्य एशिया के कई अरब देश भारत को अपना विरोध दर्ज करा चुके हैं? दरअसल किसी को पार्टी प्रत्याशी बनाने या न बनाने का यह कोई निर्धारित फामूर्ला है ही नहीं। स्वयं नरेंद्र मोदी भी कई अवसरों पर अत्यंत अमर्यादित व स्तरहीन टिप्पणियां करते सुने जा चुके हैं। कभी मोदी 50 करोड़ की गर्ल फ्रेंड कहते सुने गये तो कभी कांग्रेस की विधवा कभी ह्यशमशान कब्रिस्तान तो कभी दीदी ओ दीदी तो कभी ह्यइनकी पहचान कपड़ों से होती है ह्य, और न जाने क्या क्या। प्रधानमंत्री के स्तर की कोई भाषा नहीं है फिर भी उनके इन विवादित बयानों से उन्हें दिखास और छपास दोनों खूब मिली। तो क्या प्रधानमंत्री मोदी ने दिखास और छपास को केवल अपने लिये सर्वाधिकार सुरक्षित कर लिया है या विवादित बयान देने वाले अपने कई नेताओं के टिकट काट कर शेष नेताओं को यह सन्देश देने की कोशिश है कि दिखास और छपास की रेस में वे आगे न रहें बल्कि इसपर पहला अधिकार केवल उन्हीं का है और यह भी कि विवादित बयान देने वाले किस नेता को मुआफ करना है और किसे नहीं यह निर्धारित करना भी उन्हीं का काम है? छपास और दिखास के इस तरह के स्वगढ़ित मापदंड देखकर तो यही कहा जा सकता है।

भाजपा में शामिल होने वालों की हुयी किरकिरी

भाजपा से निष्कासित नेताओं की घर वापसी मजाक का पात्र बन रही है। गत दिनो इसी तरह का नजारा भाजपा कार्यालय में देखने को मिला। जहां सीकर, झुंझुनू से आए नेता और कार्यकताओं को चार घंटे इंतजार के बाद भी भाजपा में ज्वाइनिंग नहीं हो पाई। उन्हे बैरंग ही अपने घर लौटना पड़ा। सीकर जिले के फतेहपुर से पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा टिकट नहीं मिलने पर निर्दलिय चुनाव लड़ने वाने पूर्व विधायक नन्दकिशोर महरिया अपने समथकों को लेकर भाजपा कार्यालय में घर वापसी करने आये थे। उन्ही की तरह फतेहपुर नगर पालिका के पूर्व चैयरमैन मधूसुदन भिंडा, झुंझुनू से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले राजेन्द्र भाम्भू, पिलानी से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले कैलाश मेघवाल अपने काफी समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होने आये थे। भाजपा कार्यालय में चार घंटे तक इंतजार करवाने के बाद भी उनको किसी ने पार्टी की सदस्यता नहीं दिलवायी तो मजबूरन उन्हे भाजपा में शामिल हुये बिना ही बैरंग अपने घर लौटना पड़ा। इस घटना पर कई नेताओं ने अपने अपमान पर भाजपा नेताओं को खरी-खरी भी सुनाई। चर्चा है कि इस घटनाक्रम से पहले सभी नेताओ ने चार घंटे तक नरेन्द्र मोदी के जयकारे भी लगवाये गये। मगर फिर भी इन्हे भाजपा में शामिल नहीं किया गया। मीडिया से बात करते हुए नंदकिशोर महरिया ने कहा कि छात्र जीवन से ही वह एबीवीपी से जुड़े रहें हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं

इन दिनो बीजेपी में कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दलों से आने वाले नेताओं को शामिल करने का सिलसिला लगातार जारी है। दूसरे दलों के दागी नेताओं को भी भाजपा में दनादन शामिल कर उन्हे दाग मुक्त किया जा रहा है। लेकिन हाल ही में भाजपा के जयपुर मुख्यालय पर एक अजीब ही नजारा देखने को मिला जिसे देखकर भाजपा में शामिल होने वाले नेताओं की किरकिरी हो रही है। भाजपा से निष्कासित नेताओं की घर वापसी मजाक का पात्र बन रही है। गत दिनो इसी तरह का नजारा भाजपा कार्यालय में देखने को मिला। जहां सीकर, झुंझुनू से आए नेता और कार्यकताओं को चार घंटे इंतजार के बाद भी भाजपा में ज्वाइनिंग नहीं हो पाई। उन्हे बैरंग ही अपने घर लौटना पड़ा। सीकर जिले के फतेहपुर से पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा टिकट नहीं मिलने पर निर्दलिय चुनाव लड़ने वाने पूर्व विधायक नन्दकिशोर महरिया अपने समथकों को लेकर भाजपा कार्यालय में घर वापसी करने आये थे। उन्ही की तरह फतेहपुर नगर पालिका के पूर्व चैयरमैन मधूसुदन भिंडा, झुंझुनू से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले राजेन्द्र भाम्भू, पिलानी से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले कैलाश मेघवाल अपने काफी समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होने आये थे। भाजपा कार्यालय में चार घंटे तक इंतजार करवाने के बाद भी उनको किसी ने पार्टी की सदस्यता नहीं दिलवायी तो मजबूरन उन्हे भाजपा में शामिल हुये बिना ही बैरंग अपने घर लौटना पड़ा। इस घटना पर कई नेताओं ने अपने अपमान पर भाजपा नेताओं को खरी-खरी भी सुनाई। चर्चा है कि इस घटनाक्रम से पहले सभी नेताओ ने चार घंटे तक नरेन्द्र मोदी के जयकारे भी लगवाये गये। मगर फिर भी इन्हे भाजपा में शामिल नहीं किया गया। मीडिया से बात करते हुए नंदकिशोर महरिया ने कहा कि छात्र जीवन से ही वह एबीवीपी से जुड़े रहें हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी भाजपा की रही है। उनके बड़े भाई सुभाष महरिया भी तीन बार भारतीय जनता पार्टी से सांसद व बाजपेयी सरकार में मंत्री रहे हैं। वो खुद भी 2013 में फतेहपुर से निर्दलीय विधायक बने और उसके बाद भी विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी की नीति के साथ रहे। उन्होंने बताया कि 2018 व 2023 में पार्टी से टिकट मांगा था लेकिन किसी कारण से नहीं मिला। भावनाओं में आकर निर्दलीय चुनाव लड़ा लेकिन अब भी पार्टी से जुड़ाव है। ऐसे में भाजपा का दमन थामने आए हैं। 2023 विधानसभा चुनाव में फतेहपुर सीट से नन्द किशोर महरिया ने जेजेपी पार्टी से ताल ठोकी थी। उनके प्रचार अभियान में जेजेपी और हरियाणा के चौटाला परिवार के दिग्गज नेता भी शामिल हुए थे। लेकिन चुनाव नतीजों में वे तीसरे नंबर पर रहे थे। इससे पहले नन्द किशोर महरिया 2003 और 2008 में फतेहपुर से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं। 2013 में टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़कर विधायक बने थे। झुंझुनू के राजेंद्र भांभू ने कहा कि विचारधारा से हम शुरू से ही संघ पृष्ठभूमि के लोग हैं। राष्ट्रवाद हमारे अंदर कूट-कूट कर भरा हुआ है.। विधानसभा चुनाव में कुछ बातों को लेकर पार्टी से बगावत की थी। एक व्यक्ति विशेष को हमने स्वीकार नहीं किया। इसलिए निर्दलीय चुनाव लड़ने का कदम उठाना पड़ा। हालांकि वैचारिक रूप से भारतीय जनता पार्टी से रंगे बसे हैं इसलिए घर वापसी के लिए आए हैं। भाम्भू 2018 में भाजपा टिकट पर झुंझुनू से विधानसभा चुनाव लड़ कर हार चुके थे। वहीं पिलानी के कैलाश मेघवाल ने कहा कि वो पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता रहे हैं। काफी सालों से पार्टी से जुड़े हुए हैं। लेकिन किसी परिस्थितियों के चलते 2023 में विधानसभा से टिकट कट गया। इसके चलते निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़ा लेकिन इस गलती को मैंने भी एहसास किया। अब फिर से पार्टी के साथ जुड़ने का फैसला किया। इस बात की खुशी है कि पार्टी ने 6 साल की बजाय 3 महीने में ही घर वापसी का मौका दिया है। कैलाश मेघवाल भाजपा से प्रधान रह चुके हैं तथा 2018 में भाजपा टिकट पर पिलानी सीट से चुनाव लड़ कर हार चुके हैं। इनके पिता सुन्दरलाल सूरजगढ़ व पिलानी से आठ बार विधायक व मंत्री रह चुके हैं। फतेहपुर से मधूसुदन भिंडा के पिता फूलचंद भिंडा भाजपा से विधायक रह चुके हैं। दरअसल, राजेंद्र भांभू, कैलाश मेघवाल, मधूसुदन भिंडा और नंदकिशोर महरिया को 2023 के राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा से टिकट नहीं मिला था। इस पर चारों ने बगावती तेवर अपनाते हुए निर्दलीय चुनाव लड़ा। नंदकिशोर महरिया व मधूसुदन भिंडा ने फतेहपुर से राजेंद्र भांभू ने झुंझुनू और कैलाश मेघवाल ने पिलानी सीट से भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ा। पार्टी के खिलाफ जाकर चुनाव लड़ने वाले राजेंद्र भांभू और कैलाश मेघवाल को पार्टी ने 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया था।

भाजपा में शामिल होने वाले नेताओं को पार्टी में शामिल नहीं किये जाने के अलग-अलग कारण बताये जा रहें हैं। लोगों का कहना है कि जिन्होने पार्टी टिकट पर चुनाव लड़ा था उनके विरोध के चलते इनकी घर वापसी नहीं हो पायी। वहीं कुछ लोगों का मानना है कि भाजपा हर किसी को शामिल कर रही है। ऐसे में इनको इंतजार करवा कर खाली हाथ घर भेजने के पीछे पार्टी से जुड़े किसी बड़े नेता का हाथ बताया जा रहा है। बहरहाल इनके साथ चैबे जी छब्बे जी बनने के चक्कर में दुबे जी बन गये वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। इस घटना के बाद भाजपा में शामिल होने वाले विशेष सतर्कता बरतने लगे हैं कि कहीं उनके साथ भी ऐसा खेला ना हो जाये।

सरकार रूपी रोटी को उलटते-पलटते रहें

रघु ठाकुर

2024 के लोकसभा चुनाव देश के लिये विशेष महत्व और चिंता के चुनाव है। जहां एक तरफ देश का एक बौद्धिक हिस्सा चुनाव के बाद की संभावनाओं को लेकर आशंका व्यक्त कर रहा है तो वहीं दूसरी ओर देश के ग्रामीण और आम आदमी प्रधानमंत्री के प्रति उत्साह से सराबोर है। विशेषतरू राम मंदिर के निर्माण, फिर प्राण प्रतिष्ठा, फिर अबूधावी में स्वामी नारायण मंदिर का शिलान्यास और अब बनारस की ज्ञानव्यापी और मथुरा के श्रीकृष्ण मंदिर को लेकर एक जुनूनी वातावरण जैसा है। देश के बौद्धिक जगत के एक बड़े हिस्से में जो आशंकायें हैं वह हो सकता है कुछ कि राजनैतिक प्रतिद्वंदिता की वजह से भी हों या सत्ता हासिल करने के लिये पिछले कुछ समय से जिस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप चुनावी बहस का आधार बनाये जाते हैं उन्हें देखते हुए इन आशंकाओं के पूर्वाग्रह होने के आरोप को भी एकदम नकारा नहीं जा सकता। परंतु कुछ समय से और विशेषतरू मप्र, छग और राजस्थान के विधानसभा चुनाव में भाजपा की कार्य पद्धति में जो परिवर्तन दिख रहे हैं वे कुछ आशंकाओं को सिद्ध तो करते हैं। वैसे तो पिछले लगभग आजादी के बाद से ही राज्यों के मुख्यमंत्रियों के चयन में देश के सत्ताधारी दल के केंद्रीय नेतृत्व और प्रधानमंत्री का निर्णायक हस्तक्षेप रहा है। परंतु पिछले 55 वर्षों से यानि 1971 में श्रीमती इंदिरा गांधी के बहुमत से जीत जाने के बाद श्हाईकमान्य के नाम से मुख्यमंत्री नामजदगी की परंपरा शुरू हुई और यह बीमारी यहां तक पहुंची कि चुनाव के बाद पार्टियों के विधायक दल चाहे मुख्यमंत्री के पद का चुनाव हो या नेता प्रतिपक्ष का चयन हो, चयन करने के लिये स्वतंत्र नहीं होते तथा एक लाइन का प्रस्ताव पारित करते हैं कि हाईकमान को अधिकार दिया जाता है। यह एक प्रकार से दलों में लोकतांत्रिक प्रणाली का समापन और चरम व्यक्तिवाद और केंद्रीयकरण का उदभव था। यह चलन कांग्रेस के अलावा क्षेत्रीय पार्टियों में भी रहा क्योंकि क्षेत्रीय पार्टियों के राज्य प्रमुख जो होते हैं वे स्वयंभू सर्वेसर्वा होते हैं। हालांकि भाजपा में यह चलन एकदम उस रूप में शुरू नहीं हुआ था जिस रूप में कांग्रेस में आया था। और वहाँ एक स्तर पर विधायकों की राय को भी जाना जाता था, जो संघ के लोग संगठन मंत्री होते थे वे भी अघोषित रायसुमारी विधायकों में करते थे और इन सब सूचनाओं के आधार पर केंद्रीय नेतृत्व मुख्यमंत्री के पद का चयन करता था। परंतु इन तीन राज्यों के चुनाव में अप्रत्याशित और विशाल बहुमत की जीत ने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और विशेषतरू प्रधानमंत्री को एक छत्र शक्तिशाली बना दिया है। तथा केंद्रीयकरण का चरम रूप देखने को मिल रहा है। इन तीनों राज्यों में मुख्यमंत्रियों की नामजदगियाँ बगैर किसी रायशुमारी के सीधे केंद्रीय नेतृत्व ने की है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को दिखाने का प्रयास भी नहीं किया। विधायक दलों की बैठक में जो केंद्रीय पर्यवेक्षक भेजे गये उन्होंने विधायकों को एक पर्ची दिखाकर बता दिया कि यह केंद्र का निर्णय है और विधायकों ने बिना चू-चपड़ के पर्ची के आदेश को शिरोधार्य किया। पर्ची से मुख्यमंत्री के जन्म की यह नई परिपाटी जो भाजपा में शुरू हुई है यह लोकतांत्रिक तो नहीं ही है इसके साथ ही एक खतरनाक केंद्रीयकरण की भी शुरूआत है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक और उनकी टीम की क्या भूमिका है मैं नहीं जानता, परंतु इसके पहले तक विधायक दलों के चुनाव में जो भूमिका संगठन मंत्रियों के माध्यम से संघ की सुनने या जानकारी में आती थी वह इस बार नहीं लग रही है। हालांकि संघ का शिक्षण व संस्कार भी एक अंधानुकरण का है, याने जिस प्रकार एक गड़रिया समूचे भेड़ों के समूह को हाँकता है और वे उसका आदेश मानकर चलती हैं वही अनुशासन की परिपाटी संघ की रही है। एक राजनैतिक दल के रूप में जनसंघ व भाजपा इस परिपाटी से अभी तक कम से कम दिखावे में मुक्त थी परंतु अब वह दिखावे का हिस्सा भी भाजपा ने छोड़ दिया। हालांकि इसका एक अच्छा भी परिणाम हुआ है कि लंबे समय तक मुख्यमंत्रियों के पदों पर बैठे रहे जो अपना गुट या समर्थकों अथवा कृपा वालों का गुट बनाकर स्थाई जैसे हो गये थे, उनके हाथ से सत्ता छिन गई।

संक्षिप्त खबरें

बिना चालन के ओवरलोड बालू ले जा रहे तीन हाइवा जब्त, चालक गिरफ्तार

परसा। शीतलपुर-परसा मुख्य मार्ग पर हाइस्कूल चौक से जिला खान निरिक्षक पदाधिकारी अंजनी कुमार के द्वारा परसा पुलिस सहयोग से बिना चलना ओवरलोड बालू ले जा रहे तीन हाइवा ट्रक को जब्त कर लिया.इस दौरान तीन चालक को भी गिरफ्तार कर लिया.खान निरिक्षक पदाधिकारी अंजनी कुमार खनन विभाग के तहत गाड़ी मालिक व चालक पर प्राथमिकी दर्ज की गईं.इस संबंध में थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने बताया की बिना चालन व ओवरलोड बालू जाया जा रहा था. इसी क्रम में परसा हाई स्कूल चौक से तीन हाइवा ट्रक को जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर लिया गया. एवं खान निरिक्षक पदाधिकारी द्वारा चालक व ट्रक मालिक पर प्राथमिकी कर ली गईं है .तीनो चालक को रविवार को जेल भेजा जाएगा।

माँझी के मटियार में तीन घरों में लगी आग, बकरी समेत अन्य सामग्री जलकर राख

प्रात : किरण, संवाददाता

माँझी। माँझी थाना क्षेत्र के मटियार गाँव में रविवार को गति आगलगी की घटना में तीन घरों में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया जबकि उक्त घटना में एक बकरी जिन्दा जल गई। मौके पर बड़ी संख्या में पहुँचे ग्रामीणों के अलावा चार अग्निशमन वाहन लगभग दो घण्टे में पूरी तरह आग बुझाने में कामयाब हुई। सूचना पाकर पहुँचे माँझी के सीओ सौरभ रंजन, बीडीओ रंजीत सिंह व थानाध्यक्ष अमित कुमार राम ने आग बुझाने में जुटे ग्रामीणों का आभार जताया। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस बल के जवान आदि भी मौजूद रहे। घटना के सम्बन्ध में ग्रामीणों ने बताया कि अचानक एक झोपड़ी में आग लगी और देखते ही देखते आस पास के तीनों घरों में आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। लोगों ने बताया कि घर के अंदर रखे साइकिल, सिलाई मशीन, गहने, बैंक के कागजात व नगद आदि भी जलकर राख हो गए। बताते चलें कि अग्नि पीड़ित परिवार के लोग सुबह नाश्ता करके सरयु नदी के उस पार खेत की कटनी करने गए हुए थे तथा सूचना पाकर परिजन वापस लौट कर आग बुझाने में जुट गए। ग्रामीणों ने बताया कि पीड़ितों के पास जीवन बसर करने के लिए तक कुछ नही बचा है। घर में रखे अनाज पानी कपड़े व जेवर आदि सब कुछ जल कर राख हो गए। पीड़ित त्रिलोकी बीन, धनेश बीन, रमेश बीन, नारद साह, नन्हे साह, बाबू साह, केवनचन साह, निर्मल माली समेत उनके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है। आग बुझाने में लगे लोगों ने बताया कि बगल में खड़ा पम्पिंग सेट तथा नलजल की टँकी का मशीन भी धोखा दे गया। पास में मौजूद महज एक चापाकल के सहारे ही लोग आग बुझाने में जुटे रहे। मौके पर पहुँचे सीओ सौरभ रंजन ने बताया कि सोमवार को पीड़ितों के बीच सरकारी सहायता राशि वितरित की जाएगी।

बाजितपुर में आधी रात को एक घर से लाखों की चोरी, परिवार वालों को नहीं लगी भनक

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा : थाना क्षेत्र के सगुनी पंचायत स्थित बाजितपुर गांव में शुक्रवार की देर रात एक घर में बेखौफ चोरों ने घर से लाखों की चोरी कर ली है। चोर सारी कीमती सामान ले कर चंपत हो गए। पीड़ित बाजितपुर गांव निवासी स्व दिनेश सिंह के पुत्र हैप्पी कुमार सिंह के घर से लाखों की चोरी हुई है । दिए आवेदन में हैप्पी कुमार सिंह ने कहा कि शुक्रवार की रात हम सभी परिवार घर में खाना खाकर सोए गए थे जब सुबह 4 बजे उठा तो देखा कि घर के सभी चार कमरे का ताला खुला हुआ है और घर के अंदर रखा सारा सामान बिखरा पड़ा हुआ है। गोदरेज में रखे सोने और चांदी के जेवरात गायब है। त्वरित करवाई करते हुए पुलिस दो लोगो को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ कर रही है ।

खैरा पुलिस ने वाहन जांच के दौरान अपाची बाइक के साथ दो युवक को किया गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

नगरा। खैरा थाना क्षेत्र के कृष्णा चौक एसएसटी प्वाइंट से खैरा पुलिस ने वाहन जांच के दौरान चोरी की अपाची बाइक के साथ दो युवकों को गिरफ्तार कर लिया.उक्त गिरफ्तार युवक भोजपुर जिला के अगियाव थाना क्षेत्र के लहरपा गांव निवासी अभय सिंह का पुत्र अंकित कुमार तथा स्व. राम प्रवेश सिंह का पुत्र रणबीर राज बताया जाता है.वहीं इस संबंध में खैरा थानाध्यक्ष अनिमा राणा ने जानकारी देते हुए बताया की लोकसभा चुनाव को लेकर सघन वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा है,वाहन जांच के दौरान दोनो युवक उक्त अपाची बाइक पर सवार होकर आ रहे थे ,दोनो युवकों से पूछ ताछ कर अपाची बाइक की कागजात की मांग की गई ,लेकिन उक्त युवकों द्वारा कोई भी बाइक की कागजात प्रस्तुत नही किया गया,जिसके बाद बाइक को जब्त कर दोनो युवक को जेल भेज दिया गया.तथा गिरफ्तार युवकों की जिला में अन्य इतिहास खंगाली जा रही है. की इन दोनो युवकों पर अपराधिक इतिहास है या नही,दोनो युवक द्वारा कोई भी स्पष्ट जवाब नही दिया गया की भोजपुर जिले से खैरा होकर किस जगह जा रहे थे। खैरा थाना के पीटीसी से एएसआई बनाए गए बबलू कुमार नगरा ।खैरा थाना के एक पीटीसी को एएसआई के पद पर प्रोन्नति मिली है. खैरा थानाध्यक्ष अनिमा राणा ने बताया कि बबलू कुमार पहले पीटीसी थे. अब उनका प्रमोशन एएसआई यानि सहायक अवर निरीक्षक पद पर किया गया है.उन्होंने कहा की अब उक्त एएसआई की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ ड्यूटी निभाये,वहीं पीटीसी से प्रमोशन हुए एएसआई बनाए जाने पर खैरा थाना के पुलिस पदाधिकारी व कर्मियों ने बधाई दी है।

लोकसभा चुनाव को लेकर एसडीओ ने मढ़ौरा के कई बूथो का किया निरीक्षण

प्रात : किरण, संवाददाता

मढ़ौरा विधानसभा क्षेत्र के आधा दर्जन से अधिक संवेदनशील बूथों का एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह ने किया निरीक्षण। इस दौरान एसडीओ के नेतृत्व में नगरा प्रखंड के तुजारपुर स्थित बूथ संख्या 225 उत्क्रमित मध्य विद्यालय पटेरा बूथ संख्या 226 यादव टोला उच्च विद्यालय खुदाईबाग बूथ संख्या 279 व 280 और उत्क्रमित मध्य विद्यालय जगदीशपुर उत्तर भाग और दक्षिण भाग बूथ संख्या 285 और 286 का भी लिया जाएजा। एसडीओ के साथ सभी पदाधिकारीयो ने स्थानीय लोगों से पूर्व चुनाव से संबंधित स्थिति को जाना और बूथ पर होने वाली घटनाओं से अवगत करते हुए कई सारी जानकारियां भी दी। इस मौके पर मढ़ौरा एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह के अलावे खैरा थाना अध्यक्ष एनिमा राणा वीडियो प्रशांत कुमार इमो सीडीपीओ सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

एसडीएस गर्ल्स स्कूल की तनुश्री 445अंको के साथ बनी टापर

प्रात : किरण, संवाददाता

जलालपुरे स्थानीय शंकर दयाल सिंह बालिका उच्च विद्यालय के छात्रा व संवरी पूरी टोला निवासी रिटायर्ड आर्मी जवान अमर कुमार राय एवं गीता देवी की पुत्री तनुश्री ने मैट्रिक बोर्ड परीक्षा मे 445अंक लाकर संयुक्त रूप से प्रखंड टापर बनकर सभी को गौरवान्वित किया है विदित हो कि उसकी दो जुड़वा बहने भी मैट्रिक और इंटरमीडिएट में टॉपर हुई थी आज दोनो बड़ी बहनें अनु और अंजली दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कररही हैं अपनी छात्रा की सफलता पर शंकर दयाल सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य दिलीप कुमार सिंह ने उसे बधाई देते हुए कुशाग्र बुद्धि का बताया `विद्यालय के सभी शिक्षकों ने उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और बताया कि तीनों बहनें एक दिन हमारे जिले के साथ-साथ इस देश का नाम रोशन करेंगीवही कोपा स्थित गांधी स्मारक उच्च विद्यालय की छात्रा व कोपा निवासी सुनील प्रसाद व रानी कुमारी की पुत्री आराध्या कुमारी ने भी 445 अंक प्राप्तकर अपने विद्यालय को गौरवान्वित किया हैआराध्या आई आई टी से इंजीनियर बनना चाहती हैवहीं समृध्दि कुमारी पिता प्रभाकर शर्मा ने गांधी स्मारक विद्यालय कोपा से 424अंक प्राप्त किया हैजलालपुर हाई स्कूल के राहुल कुमार पिता मैनेजर राय ने 446 अंक प्राप्त किया हैउसकी उपलब्धि पर विद्यालय की प्राचार्य रीता पाल ने उसे बधाई दी हैवही कोपा स्थित गांधी स्मारक से दीपक यादव पिता रणजीत यादव ने 433अंक प्राप्त किया हैं

मशरक में लगने के साथ बुझ रही है स्ट्रीट लाइटें

प्रात : किरण, संवाददाता

मशरक (सारण)।मशरक नगर पंचायत क्षेत्र में पिछले महीने ही 16 वार्डो में प्रकाश के लिए करोड़ों की लागत से 2 हजार से ज्यादा स्ट्रीट लाइट लगाई गई थी। नगर पंचायत द्वारा लगाए गए स्ट्रीट लाइट लगने को अभी महीने ही बीते हैं कि कुछ लाइटें लगने के कुछ ही दिन बाद खराब होने शुरू हो गए हैं। अधिकांश स्ट्रीट लाइटों के खराब होने से वार्डों में अंधेरा पसर गया है, स्ट्रीट लाइट की खराबी ठीक करने की मांग को लेकर कई वार्डवासी वार्ड पार्षद से शिकायत दर्ज कराते हैं पर कोई भी सुनवाई नहीं हो पाती है। ग्रामीणों ने बताया कि शुरूआत में वार्डों में एक साथ वार्डों में बिजली के पोल पर लाइटे लगीं तो नगर पंचायत का इलाका रात होते ही रौशनी से गुलजार हो जाता था। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि लगता है कि लाईटे लगाने मे घोर अनियमितता बरती गई है, जिसके चलते गारंटी पीरियड में ही लाइटें खराब हो गई। वही वार्ड पार्षदों ने दबी जुबान से बताया कि स्ट्रीट लाईटे लगाने में जबरदस्त धांधली की गई है । जिसकी जांच पड़ताल कर दी जाए तब अनियमितता का खुलासा हो सकता है। बताया गया कि जब से टेंडर की प्रकिया हुई तब से कौन ठेकेदार इसका टेंडर लिया है पता ही नहीं चल पाया। जबकि नियमानुसार टेंडर में ठेकेदार का नाम और मोबाइल नम्बर स्पष्ट होना चाहिए, वही यदि बिजली के पोल पर ठेकेदार का नम्बर सार्वजनिक रूप से अंकित रहता तो फोन कर मरम्मत कार्य कराया जा सकता है।

न्यायालय कर्मी आज मनाएंगे ब्लैक डे

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कोर्ट।बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ की कार्यकारिणी की बैठक बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राजेश्वर तिवारी एवं महामंत्री सत्यार्थ सिंह के संयुक्त अध्यक्षता में हुई। जिसमें बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ द्वारा पुरे बिहार में 1 अप्रैल 2024 को ब्लैक डे के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। अध्यक्ष तिवारी ने कहा कि पूर्व में कितने बार माननीय मुख्य न्यायाधीश , उच्च न्यायालय पटना और पटना महानिबंधक को बिहार सरकार के द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय एवं माननीय उच्च न्यायालय पटना के आदेश का अनुपालन नहीं करने को लेकर पत्र दिया गया है। परंतु आज तक कोई सरकार के द्वारा व्यवहार न्यायालय के कर्मचारियों के हित में फैसला नहीं दिया गया। जिसको लेकर यह निर्णय लिया गया है। आगे बताया कि 1 अप्रैल 2003 के पूर्व वेतनमान व संगति को छोड़कर अन्य मामलों में जैसे व्यवहार न्यायालय में नियमित समय पर नियुक्ति, पदोन्नति एवं अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति नही करने जो पूर्व में नियमित होता था। जिसके कारण असमानता की स्थिति उत्पन्न हो गई है। आज एक कर्मचारी को 4 से 5 पदों का प्रभारी बनाया जा रहा है और समय पर कार्य संपादित नहीं होने पर उन्हें प्रशासनिक दंडित किया जा रहा है। जिसके कारण कर्मचारी मानसिक तनाव मे रह रहे हैं । कुछ कर्मचारी तो कार्य के अधिकता और प्रतिष्ठा बचाने के कारण आत्महत्या करने को भी विवश हो जा रहे है अपने पूर्व के मांगों को को पुर्ण कराने को लेकर बिहार के संपूर्ण व्यवहार न्यायालय के कर्मचारी कल ब्लैक डे मनाएंगे।

सारण रसूलपुर की बेटी पलक बनी बालिका वर्ग की टॉपर

प्रात : किरण, संवाददाता

रसूलपुर। सारण जिले की एकमा प्रखंड की रसूलपुर थाना व पंचायत के धानाडीह गांव की पलक ने 486 अंक लाकर बिहार बोर्ड 2024 की परीक्षा में टॉप श्री में स्थान बना जिला को गौरवान्वित किया है।पलक के पिता राजेश सिंह कोलकाकता में टैक्सी ड्राइवर हैं तो मां सरोज देवी गृहणी हैं।पलक ने सफलता का श्रेय अपने विद्यालय हुस्सेपुर हाइस्कूल,मां भारती सेंट्रल स्कूल संचालक उमाशकर चौबे ,बड़ा भाई छोटू सिंह की प्रेरणा बताया है।पलक के बड़े पापा पत्रकार देवेन्द्र सिंह ,बड़ी मां प्रमिला देवी ,ग्रामीण परशुराम सिंह कहते हैं कि पलक बचपन से ही मेघावी रही है इसकी प्रतिभा से हमारा क्षेत्र का नाम रौशन हो गया है।

सामूहिक जन्मोत्सव और नवनिर्मित वर्ग कक्षा का सारण कमिश्नर ने किया उद्घाटन

मायाजाल से आध्यात्मिक गुरु ही मुक्ति दिला सकते हैं : डॉ एच के वर्मा

● हम जो भी कार्य करते हैं वह ठाकुर की इच्छा से ही कर पाते हैं : श्री सरवणन एम

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर : स्वामी विवेकानंद संघ कोहबरावां आर्य नगर में रविवार को श्री रामकृष्ण देव, मां शारदा ,स्वामी विवेकानंद एवं स्वामी अद्भुतानंद महाराज की सामूहिक जयंती मनाने के साथ-साथ संघ परिसर में नवनिर्मित वर्ग कक्षा का उद्घाटन रविवार को उद्घाटन सारण कमिश्नरी के कमिश्नर सारणन एम के द्वारा किया गया । वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रोफेसर एच के वर्मा ने कहा कि माया जाल से मुक्ति दिलाने का कार्य आध्यात्मिक गुरु का होता है और गुरु को जांच करके ही गुरु बनाना चाहिए। इस वाक्य पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि विवेकानंद जी भी अपने गुरु श्री रामकृष्ण देव की जांच उनके आसन के नीचे रुपए रख करके किए थे । श्री रामकृष्ण देव जी ने ही यह बात विवेकानंद को बताया था कि जब भी गुरु किसी को बनाएं तो गुरु की जांच कर लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज का शिष्य यदि गुरु का जांच करें तो गुरु नाराज भी हो जाते हैं। लेकिन पहले के गुरुओं में यह बात नहीं थी। वहीं डॉ उषा वर्मा ने ठाकुर जी पर बोलते हुए कहा कि ठाकुर जी ही सब कुछ हैं और उन्होंने यह भी बताया कि जब रामकृष्ण देव जी समाज सुधार में लगे हुए थे तो उस समय सनातन के लोग विभिन्न देवी देवताओं के पूजा में बटे थे और वे दुर्गा के उपासना करने वाले शिव के उपासक की शिकायत करते थे। इसी तरह अन्य देवी देवता के उपासना करने वाले अन्य देवी देवताओं के उपासक की शिकायत करते थे तो इन सबों को एक करने का कार्य रामकृष्ण देव ने किया।

वहीं मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सारण के कमिश्नर सरवणन एम ने कहा कि कोई भी कार्य ठाकुर की कृपा से ही होती है। हम कोई काम करते हैं सोते हैं, जागते हैं, गाड़ी में सफर करते हैं तो उन्हीं की कृपा से हो पाती है । मां की भूमिका का महत्व जीवन में बताते हुए श्री सरवणन ने कहा कि लाख मजबूरी हो मुसीबत हो लेकिन यदि मैं यह बात करता हूं कि मेरे पास मेरी मां है तो एक बहुत बड़ी शक्ति मिलती है। उन्होंने यह बात मां शारदा पर बोलते हुए कहा । स्वामी विवेकानंद आश्रम, छपरा के सचिव अतिदेवानंद महाराज ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि इस ग्रामीण क्षेत्र में संघ के द्वारा पाठशाला खोलकर गरीब एवं असहाय बच्चों को शिक्षा देने का काम किया जा रहा है लेकिन यहां तक पहुंचाने के रास्ते नहीं है। यह गांव आज भी मुख्य सड़क से कटा हुआ है। इस पर सारण कमिश्नर ने आश्वासन दिया कि विकास के जितने भी कार्य हैं बैठकर वार्ता कर इसको किया जाएगा। वहीं संघ के अध्यक्ष हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ राजीव रंजन ने ठाकुर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। स्वामी विवेकानंद संघ, कोहबरावां के पदाधिकारियों के द्वारा आगत अतिथियों को अंग वस्त्र तथा प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। वहीं स्वामी विवेकानंद संघ, कोहबरावां के द्वारा दिसंबर 2023 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सारण कमिश्नर द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत होने वालों में अनुष्का कुमारी, नैंसी कुमारी, स्वीटी कुमारी सहित दर्जनों प्रतिभागी सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सदर एस डी ओ संजय कुमार राय, सदर बीडीओ विनोद आनंद,पूर्व शिक्षा उप निदेशक सह हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष ब्रजेंद्र कुमार सिन्हा,डॉक्टर सत्यनारायण प्रसाद स्वामी विवेकानंद संघ आश्रम के अध्यक्ष हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर राजीव रंजन ,सचिव अजीत कुमार, उपाध्यक्ष ऋषिकेश पांडेय, उप सचिव विशाल कुमार,कोषाध्यक्ष रोहित कुमार,राधे कृष्ण सिंह, नीरज कुमार सहित आश्रम के सभी पदाधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे मंच का संचालन अनुष्का कुमारी,मनीषा,अंशु,स्वाति ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन संघ के उपाध्यक्ष ऋषिकेश पांडेय के द्वारा किया गया।

पत्रकार के पुत्र ने मैट्रिक में 446 अंक लाकर लहराया परचम

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा। बिहार मैट्रिक की परीक्षा की परिणाम जारी होते ही छात्र छात्राओं के बीच कही खुशी कही गम का महौल मन गया।मैट्रिक परीक्षा में परसा थाना क्षेत्र के जमलकी गांव निवासी पत्रकार दीपक कुमार का पुत्र अमन आनंद ने 446 अंक प्राप्त कर माता पिता के साथ प्रखंड तथा विद्यालय का नाम रौशन किया है।वंशी लाल संत लाल हाई स्कूल कोहरा मठिया प्रखंड परसा से पढ़ाई कर सफलता हासिल किया।मैट्रिक की परिणाम मिलते ही पिता दीपक कुमार,माता रेखा देवी,बहन कृति कुमारी,भाई अनुज आनंद ने मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया।अमन आनंद ने अपनी सफलता का श्रेय माता,पिता तथा शिक्षकों को दिया।आगे बीपीएससी की तैयारी कर यूपीएससी उतीर्ण कर देश की सेवा करने की बातें कही।अमन आनंद की सफलता पर शंभु साह,नंदकिशोर साह,सोहन ठाकुर,मो यूसुफ,पप्पू मिश्रा नरेश सिंह,सनोज साह समेत सैकड़ो लोगो ने बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना किया।वही सोनहो संचालित हाई इम्पैक्ट एकेडमी में सबसे ज्यादा अंक लाने पर सभी शिक्षकों द्वारा बधाई दिया तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना किया। सर मेरा पुत्र का खबर है।लगा दीजिए गा।

शारदा इंग्लिश क्लासेज ने छात्रों को मेडल व स्मृति चिह्न देकर किया सम्मानित

● इंटर परीक्षा में शारदा इंग्लिश क्लासेज के छात्र-छात्राओं ने लहराया परचम

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा:-नगर पंचायत परसा बाजार क्षेत्र के बस स्टैंड के समीप संचलित शारदा इंग्लिश क्लासेज द्वारा रविवार को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें इंटर परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को संस्थान के निदेशक विपिन भरद्वाज द्वारा मेडल,स्मृति चिन्ह देकर और मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया गया।संस्थान मे 456 अंको के साथ शीर्ष पे रहे सोनहो निवासी नंदकुमार तिवारी के पुत्र प्रिंस कुमार, 431 अंको के साथ बाजितपुर निवासी ओमप्रकाश सिंह के पुत्र आकाश कुमार साथ मे अनेकों छात्र- छात्रा अच्छे अंकों से सफल हुए जिसमे आदित्य,गोलू,आरती, खुशी इत्यादि शामिल है।सफल छात्र छात्राओं का कहना है की अंग्रेजी और हिंदी मे अच्छे अंकों के कारण उन्हे ज्यादा नंबरों के साथ सफलता मिली है।वही छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए विपिन भरद्वाज सर ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिये ईमानदारी पूर्वक कठिन परिश्रम की जरूरत होती हैं। पढ़ाई को गम्भीरता से लेने वाले छात्र छात्राएं ही शिक्षा के क्षेत्र में देश दुनिया मे परचम लहराते हैं।

अपराधियों के खिलाफ चलाए गए अभियान में कल 53 अपराधी हुए गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। विधि व्यवस्था को लेकर सारण पुलिस द्वारा जिला भर में की गई कार्रवाई में कुल 53 अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सारण पुलिस को कामयाबी मिली है। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार गिरफ्तार अभियुक्त में लूट कांड के एक,आर्म्स एक्ट के दो,एसटीएससी एक्ट के दो, हत्या के प्रयास का दो,खनन के 17, उत्पादन के 25,फरार वारंटी एक तथा अन्य कांड के तीन अभियुक्त शामिल है। इसके अलावा 36 वारंट का भी निष्पादन भी किया गया है। पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई में देसी शराब 255.6 लीटर, विदेशी शराब 629.57 लीटर जप्त किया गया है। इस अभियान में वाहन चेकिंग के दौरान 108500 नगद जुमार्ना स्वरूप वसुला गया है। इसके अतिरिक्त देसी कट्टा एक, जिंदा कारतूस एक, ट्रक 35, ट्रैक्टर 9, मोटरसाईकिल 5, पिकअप 1, मोबाईल सेट तीन, नाव एक, लोडर वाहन एक, एक-एक चांदी एवं सोना का लॉकेट, चांदी का अंगूठी एक तथा नगद 9010 रुपए भी बरामद किया गया है।

रिविलगंज थाना कांड का फरार अभियुक्त गोलू तिवारी गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। रिविलगंज थाना कांड के फरार चल रहे अभियुक्त गोलू तिवारी को सारण पुलिस ने गिरफ्तार पर जेल भेज दिया है। गोलू तिवारी रिविलगंज थाना कांड संख्या 192/23 का मुख्य अभियुक्त है, जो पिता अशोक तिवारी टेकनिवास गांव का निवासी बताया गया है। गिरफ्तार अभियुक्त का आपराधिक रिकार्ड रहा है, रिविलगंज थाना कांड संख्या 200/23, 185 /21/एवं 189/ 21 का अभियुक्त है। इस आशय की जानकारी पुलिस अधीक्षक कार्यालय के द्वारा दी गई।

अंबेडकर जयंती मानने को लेकर हुई बैठक

प्रात : किरण, संवाददाता

तरैया डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह मनाने को लेकर अंबेडकर विचार मंच के तत्वाधान में एक बैठक चैनपुर खराटी बाजार पर किया गया।बैठक में 14 अप्रैल को संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाने की तैयारी पर चर्चा की गई।बैठक में अंबेडकर विचार मंच के अध्यक्ष, सचिव और प्रखंड के सभी पंचायत अध्यक्ष शामिल हुए।जिसमे अंबेडकर विचार मंच के अध्यक्ष देवनाथ राम,सचिव तरैया व्यापार मंडल अध्यक्ष ललन प्रसाद यादव,तरैया मुखिया संघ के अध्यक्ष मुकेश यादव,मुखिया ओम प्रकाश कुमार,मुखिया प्रतिनिधि शैलेंद्र राम,सुभाष कुमार सिद्धार्थ,जितेंद्र कुमार, पंकज कुमार,शंकर राम,सुदेश महरा,लालजीत राम,आनंद मिलन,तेरस कुमार,राज बलम राम,विनय राम,बबलू राम,विनोद राम,शिक्षक कमलेश राम सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बाबा चौहरमल जयंती पर होगा अखंड अष्टयाम व सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रात : किरण, संवाददाता

डोरीगंज। धार्मिक नगरी चिरांद के बाबा चौहरमल मंदिर में रविवार को राष्ट्रीय बाबा चौहरमल संघर्ष मोर्चा की बैठक आयोजित कर 12मइ को जयन्ति मनाने का निर्णय लिया गया इस संबंध मे संगठ के संयोजक जंग बहादुर माझी ने बताया कि आयोजन के तहत 10 मई को जलभरी 11मई से 24घंटे का अखंड अष्टयाम तथा 12मई को दोपहर से बाबा चौहरमल की पुजा अर्चना तथा रात्री मे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित की जाएगी। बैठक की अध्यक्षता संगठन के अध्यक्ष बीगन माझी,सचिव रामनाथ माझी, शिवलाल माझी चिरांद के सरपंच अजय माझी,मोहन पासवान,शंकर पासवान,शत्रुघ्न पासवान,अम्बीका माझी सहित जिले के कई सदस्य उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला में मुख्य बिंदुओं पर हुई चर्चा

नावानगर (बक्सर) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर सोनवर्षा के परिसर में तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ साह, भोजपुर विभाग के विभाग प्रमुख वीरेंद्र कुमार, समिति सदस्य विश्वकर्मा शर्मा, भूमि दात्री परिवार के आशुतोष कुमार पाण्डेय द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया। कार्यशाला की प्रस्तावना एवं अतिथि परिचय प्रधानाचार्य प्रकाश चंद्र राय राय के द्वारा किया गया। जिसके प्रथम दिन विभाग प्रमुख वीरेन्द्र कुमार की गरिमामय उपस्थिति रही। जबकि विभाग प्रमुख के द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य की चर्चा विस्तार से की गयी। इसके साथ ही विद्यालय के सर्वांगीण विकास में सहायक अनेक बिंदुओं पर चर्चा वार्ता हुई। साथ ही भाई बहनों के लिए अध्यापन के समय ध्यान में रखने वाले महत्वपूर्ण तथ्यों को आचार्यों के समक्ष प्रस्तुत कर प्रांत द्वारा निर्धारित आज के सभी विषयों को कार्यशाला में संपादित किया।

अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नावानगर (बक्सर) बिहार सरकार के दिबीशा निर्देश के आलोक में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन विद्यालय किया गया। उक्त संगोष्ठी मध्य विद्यालय रामनगर और मध्य विद्यालय बिक्रम इंग्लिश समेत प्रखण्ड के सभी विद्यालयों में हुआ। जिसमेशिक्षा समिति केसदस्यों, विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तथा विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की उपस्थित रहे सगोष्टि में वर्ग 5 एवं 8 के विद्यार्थियों को प्रगति-पत्रक वितरण किया गया। अवसर पर संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापक ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं तहत मिशन दक्ष, एफएलएन स्टूडेंट्स बैग वितरण, बेंच-डेस्क आपूर्ति, टीएलएम किट आपूर्ति, पाठ्य पुस्तक के बारे में बताया गया। साथ ही संगोष्ठी के अंत में वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा अच्छे अंक एवं ग्रेड लाने पर प्रधानाध्यापक द्वारा उन्हें बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान की गयी।

ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत

सासाराम (रोहतास) रेलवे जंक्शन सासाराम ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। जिस घटना में व्यक्ति का सिर धड़ से अलग हो गया। जिसकी घटना स्थल पर ही मौत गई। मृतक की पहचान सासाराम वार्ड 24 के बड़का शेखपुरा निवासी गोपाल प्रसाद के रूप में बताया जा रहा है। इस घटना की रेलवे पुलिस ने पुष्टि करते हुए बताया कि शव को कब्जे में लेते हुए सदर अस्पताल सासाराम में पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है। वही रेलवे पुलिस द्वारा अगली कार्रवाई जारी है। बताया गया कि सासाराम जंक्शन पर ट्रेन की चपेट में आने से गोपाल प्रसाद की मौत हो गई।

श्री रुद्र महायज्ञ शुभारंभ को लेकर हुआ झंडारोहण

नोखा (रोहतास) थाना क्षेत्र के खैरही गांव में बालक दास बाबा के द्वारा श्री श्री रुद्र महायज्ञ द्वारा रविवार को झंडारोहण किया गया। अवसर पर बालक दास बाबा ने बताया कि 20 अप्रैल से 5 मई तक श्री श्री रुद्रमा यज्ञ एवं महापुराण कथा का प्रत्येक दिन आयोजन भी किया जाएगा। इसकी जानकारी देते हुए महायज्ञ के संचालनकर्ता सुनील सिंह ने बताया कि यह यज्ञ 20 अप्रैल से 5 तक तक चलेगा बाल दास बाबा के नेतृत्व में यह महायज्ञ आयोजित होगी। जिस के कथावाचक अमित महाराज होंगे। इस झंडारोहण में उपस्थित अखिल भारतीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा के रोहतास जिलाध्यक्ष प्रकाश चंद्रवंशी, प्रेम प्रकाश सिंह, वकील साहब सहित सैकड़ो लोग मौजूद थे।

भोजपुर में कीटनाशक का सेवन करने से युवती की हालत बिगड़ी

आरा। भोजपुर भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव में रविवार की दोपहर कीटनाशक का सेवन करने से एक युवती की हालत काफी गंभीर हो गई। जिसके बाद पर परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरस सदर अस्पताल ले गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार उक्त युवती कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव निवासी लाल बहादुर प्रसाद की 26 वर्षीया पुत्री मंजू कुमारी है। घटना के संबंध में बताया जाता है कि रविवार की दोपहर जब घर के सभी लोग अपने काम में लगे हुए थे। उसी दौरान उक्त युवती ने कीटनाशक का सेवन कर लिया। जिससे उसकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। हालांकि उक्त युवती ने कीटनाशक का सेवन क्यों किया। इसका कारण स्पष्ट नहीं हो सका है।

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे एनडीए कार्यकर्ताओं का बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का बैठक आयोजित हुआ।उक्त बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज और धन्यवाद ज्ञापन जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह ने किया।कार्यक्रम का संचालन भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह आरा सांसद प्रतिनिधि ई. धीरेन्द्र सिंह ने किया।

बैठक मे केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी आर के सिंह मुख्य रुप से शामिल थे।इसके अलावा मंचासीन बड़हरा विधायक सह पूर्व मंत्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, विधानपार्षद जीवन कुमार, तरारी के पूर्व विधायक लोजपा नेता सुनील पांडेय, पूर्व मंत्री सह पूर्व विधायक जदयू नेता श्रीभगवान सिंह कुशवाहा, अगिआंव पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम, जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह, लोजपा(रा) जिलाध्यक्ष राजेश्वर पासवान, राष्ट्रीय लोक मोर्चा जिलाध्यक्ष रोहित कुशवाहा, हम जिलाध्यक्ष महेश्वर मिश्रा, भाजपा जिला प्रभारी संजय कुशवाहा को अंगवस्त्र के साथ सम्मानित किया गया। एनडीए कार्यकर्ता बैठक को संबोधित करते हुए केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह आरा लोकसभा से घोषित एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी आर के सिंह ने कहा कि भोजपुर जिला की जनता और एनडीए गठबंधन के कार्यकताओ के प्रेम और स्नेह से मुझे दस साल जनता की सेवा करने का मौका मिला और फिर से आपलोगो के स्नेह ने मुझे पार्टी द्वारा प्रत्याशी बनाया गया है। मै आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। आप लोगो का सहयोग हमे हमेशा से मिलता रहा है।मेरा इस जिले से 1975 से ही संबंध है।मै आप लोगो का बेटा, दामाद हूँ। सांसद बनने से पहले से ही इस जिला का विकास करता आ रहा हूँ।दस साल के काल मे मेरे द्वारा अपने विवेक से भोजपुर जिला का विकास किया गया है।आज लगभग सभी गाँवो मे मेरी योजनाएँ दिख जाएगी।जिले का विकास की यात्रा अभी पूरा नही हुआ है। जिले की जनता के सपनो को पूरा करना है।विकसित भारत के साथ-साथ विकसित भोजपुर भी बनेगा। पटना ग्रेटर के अंतर्गत भोजपुर जिला आएगा।बिहटा मे हवाई अड्डा होगा और आरा को रिंग रोड से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे को जोड़ा जाएगा। ये सभी तभी पूरा होगा जब आप सभी का सहयोग प्राप्त होगा और मुझे विश्वास है कि आप सभी मुझे इतना स्नेह देते है कि इस बार आरा लोकसभा से ढाई लाख से अधिक मतो से जीत मिलेगा। भारत मे एक ही गठबंधन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन है, जो सबसे अधिक मजबुत भी है।इस बार देश की जनता ने तय कर ली है कि चार सौ पार सीटे जीतकर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाएँगे। आज देश तेजी से विकास कर रहा है और विकसित भारत की ओर अग्रसर है। हम बहुत जल्द तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएँगे।बिहार की चालीस के चालीस सीट हम जीत रहे है।

बड़हरा विधायक सह पूर्व मंत्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कार्यकताओं मे बल भरते हुए कहा कि भोजपुर जिला की मिट्टी मे बहुत ताकत है और हमारे सांसद आर के सिंह हो तो फिर जिले को विकसित बनने से कोई रोक नही सकता।यहाँ की जनता ने पहले से ही इन्हे फिर से सांसद मान चुकी है।आजादी के बाद जिले मे विकास करने वाला पहला ऐसा सांसद मिला।इनका सामना किसी से नही है।ये जनता के प्रिय है और जनता द्वारा उन्हे पूर्ण आशीर्वाद मिल चुका है। आर के सिंह ने रेल, सड़क, जलमार्ग तीनो मे विकास किए है।इनका विकास कार्य पूरे देश मे चर्चित रहता है।इनके प्रयास से आरा मे मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज भी खुला। इस बार बड़हरा विधानसभा सहित पूरे जिला से अभूतपूर्व मत प्राप्त करेंगे।

वहीं तरारी के पूर्व विधामक सुनील पांडेय ने कहा कि आर के सिंह का पहचान एक साफ-सुथरा, इमानदारी का छवी का रहा हैं।उनका कार्य निःस्वार्थ होता है। एनडीए के सांसदो से रिपोर्ट कार्ड मांगने वाले को जनता रिपोर्ट कार्ड दिखाएगी।जो अपने क्षेत्र के रोड का डीपीआर नही बनवा सका, वह रिपोर्ट कांड मांगता है।जनता दिखा देगी। पूरा एनडीए एकजुट है।

पूर्व मंत्री जदयू के वरिष्ठ नेता श्रीभगवान सिंह ने कहा कि देश मे नरेन्द्र मोदीऔर बिहार मे नीतीश कुमार की डबल इंजन की सरकार देश और बिहार का विकास तेजी से कर रही है।आर के सिंह के बारे मे जितना कुछ कहा जाए कम ही होगा।वे इस बार रिकॉर्ड मतो से जीतेंगे। विधानपार्षद जीवन कुमार ने कहा कि आजादी के बाद देश मे जितना विकास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया अभी तक नही हुआ था।यह सरकार सबका साथ सबका विकास वाली सरकार है।महिला, युवा, किसान और गरीबों का विकास वाली सरकार है।बिहार मे एनडीए की सरकार अनवरत विकास की राह पर है और आर के सिंह का विकास जिले मे चारो तरफ दिख रहा है। अगिआंव के पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम ने कहा कि आरा लोकसभा के साथ-साथ अगिआंव विधानसभा का भी चुनाव हो रहा है और इस बार भोजपुर जिला देश मे ऐतिहासिक जीत का संदेश देने जा रहा है।पूरा एनडीए गठबंधन एकसाथ जुटकर विरोधियों को छठी का दूध याद दिलवाएगा।

भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज ने अध्यक्षता करते हुए सभी एनडीए घटक दलो के कार्यकताओ से एकजुटता के साथ आरा लोकसभा एनडीए प्रत्याशी को रिकार्ड मतो से जिताने की बात कही। जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह ने बैठक मे आए सभी कार्यकताओ को धन्यवाद देते हुए अबकी बार चार सौ पार के संकल्प को दुहराया। कार्यक्रम मे जदयू वरिष्ठ नेता भाई ब्रहमेश्वर, राष्ट्रीय लोक मोर्चा नेता संजय मेहता, भाजपा नेता परशुराम चौधरी, हरेन्द्र पांडेय, उदय प्रताप सिंह, वंदना राजवंशी, प्रेम पंकज ललन, मीरा यादव, कौशल यादव, रामदिनेश यादव, जदयू नेता प्रिंस सिंह बजरंगी, भाजपा महामंत्री राकेश सिंह, पुनम कुशवाहा, संतोष चंद्रवंशी, मधु मिश्रा, संजय कुमार सिंह, नवीन प्रकाश, धीरज सिंह, राजेश सिंह, संतोष तिवारी, निशांत सिंह सेंगर, संजय सिंह, राहुल सिंह, ममता सिंह, अजय गुप्ता, मनीष कुमार सहित एनडीए घटक दल भाजपा, जदयू, लोजपा, राष्ट्रीय लोक मोर्चा, हम के वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता शामिल थे।

भाजपा सरकार द्वार कांग्रेस पार्टी को परेशान व बदनाम करने के खिलाफ मे विशाल प्रदर्शन किया गया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा ईडी और अपने तमाम जांच एजेंसियों के माध्यम से कांग्रेस पार्टी को परेशान व बदनाम करने के खिलाफ भोजपुर जिला कांग्रेस किमिटी के अध्यक्ष अशोक राम के नेतृत्व में शहीद चौक, आरा पर विशाल प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए जिला अध्यक्ष अशोक राम ने कहा कि जिस तरह से भाजपा लगातार देश की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की हत्या कर रही हैं, अब यह खतरनाक रूप लेते जा रही है। देश की प्रमुख विपक्षी दल होने के बावजूद चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस पार्टी का खाता सील कर दिया गया और तुरन्त बाद आयकर विभाग की ओर से पार्टी को नया नोटिश दिया गया हैं, जिसमें 1823.08 करोड़ रूपया जमा करने के लिए कहा गया है, यह साजिश के तहत किया गया घिनौना कृत्य हैं। आगे उन्होंने कहा कि चुनाव के मध्य में जिस तरह से लोकतंत्र के ऊपर हमला कर देश में 'कर आतंक' का साम्राज्य स्थापित किया जा रहा है, अब यह बर्दास्त से बाहर है। देश की जनता इसे कभी माफ नही करने वाली है और चुनाव में भी इसका माकूल जबाब मिलने वाला हैं। प्रदर्शन में भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष अशोक राम, घनश्याम उपाध्याय, सत्य प्रकास राय, रजी अहमद, जितेंद्र शर्मा, प्रमोद राय, रतन धमालिया, लाल मोहर सिंह, सत्य नारायण लाल, चितरंजन सिंह मुन्ना, शिवशंकर चौबे, अब्दुल सलाम कुरैशी, सम्पत सिंह, राकेश कुमार त्रिपाठी, परमात्मा यादव, रवि कुमार रवि, सूरज प्रकाश, राकेश पाण्डेय, रविन्द्र तिवारी, उदय राम, तारकेश्वर यादव, संजय कुमार त्रिपाठी सहित दर्जनों पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल थे।

उर्जा मंत्री आरके सिंह अपने 10 वर्ष कार्यकाल का रिपोर्ट जारी करें : सुदामा प्रसाद

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। लोकसभा इंडिया महागठबंधन का प्रत्याशी बनाए जाने के बाद माले जिला कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए सुदामा प्रसाद ने कहा कि मोदी सरकार में पिछले 10 वर्षो के शासनकाल में देश के संविधान व लोकतंत्र को खत्म करने का पूरा प्रयास किया!उन्होंने आगे कि कहा मोदी सरकार देश के खेती, रोजगार, व्यवसाय और समाजिक सदभाव को लगातार कमजोर करने प्रयास कर रही है!इनके सांसद अनंत हेगड़े ने तो बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के संविधान को बदलने देश के लोगों से 400 सीट जीताने की बात कही!उन्होंने कहा कि उर्जा मंत्री आरके सिंह जब पहली बार आरा से चुनाव लड़ रहे थे उन्होंने जिले में सौर्य उर्जा प्लानंट लगाने की घोषणा किये थे!लेकिन आज तक प्लानट नहीं लग सका!बड़हरा प्रखंड के गुंडी गांव को भी गोद लेने की घोषणा किये लेकिन आज तक गुंडी गांव विकास के लिए तर्ज रहा है!जिले के बेरोजगार रोजगार के लिए दूसरे राज्य में प्लायन के लिए मजबूर हैं!उर्जा मंत्री जिस विभाग के मंत्री है उस विभाग में बिजली के नाम जनता के पैसों को लूटा जा रहा है गरीबों के घरों में लाखों रुपए का बिजली बिल आ रहा है! फर्जी बिजली बिल से जनता परेशान है!जिले के खेती की सिंचाई के लिए सोन नहर का आधुनिकीकरण की लंबित मांग आज तक पूरा नहीं हुआ!जिसके चलते खेती घाटे की सौदा बनकर रह गयी है! उन्होंने आगे कहा कि ऑनलाइन व्यापार के कारण फुटपाथी दुकानदार व छोटे-मोटे मझोले व्यवसायी बबार्दी के कगार पर है!उन्होंने कहा कि माननीय सांसद महोदय को अपने 10 वर्षो का शासनकाल का रिपोर्ट जारी करना चाहिए!

महागठबंधन प्रत्याशी सुदामा प्रसाद ने कहा कि जनता के इन बुनियादी मुद्दों को लेकर चुनावी एजेंडा बना कर चुनाव लड़ा जाएगा!प्रेस कॉन्फ्रेंस में माले राज्य कमेटी सदस्य विजय ओझा, क्यामुद्दीन अंसारी, आरा नगर सचिव दिलराज प्रीतम, जिला स्थाई समिति सदस्य जितेंद्र सिंह, अमित कुमार बंटी शामिल थे!

एमडीजे पब्लिक स्कूल का 15वां वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

नावानगर (बक्सर) प्रखंड क्षेत्र के एमडीजे पब्लिक स्कूल, अमरपुरी सोनवर्षा में रविवार को तीन दिवसीय 15वां वार्षिक खेलकूद के फाइनल प्रतियोगिता का आयोजन रंगारंग कार्यक्रम से हुई। जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि धनगाई सहायक थाना इंचार्ज रामयश आर्य व विद्यालय निदेशक डॉ. नंद कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों का निदेशक डॉ. नंद कुमार सिंह ने बुके भेट कर फुल माला पहना अंगवस्त्र से सम्मानित किया। आयोजित 15वां वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में कुल 36 तरह के खेलों को शामिल किया गया। जिसमें क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, वॉलीबॉल, लॉन्ग जंप, हाई जंप, 100 मीटर, 200 मीटर, 500 मीटर सहित1000 मीटर के दौड़ शामिल थें। साथ ही जलेबी रेस, स्पून रेस, स्लो साइकिल रेस, थ्री लेग रेस, चेयर रेस, मैथ रेस, सुई धागा रेस, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, शॉट पुट इत्यादि प्रमुख रहा क्रिकेट मैच का मुकाबला अंडर 12 में सेमीफाइनल जीत कर पहुंची। इमर्जिंग स्टार की टीम एवं राइजिंग टैलेंट टीम के मध्य हुई जिसमें इमर्जिंग स्टार की टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला किया कुल 8 ओवर के मैच में इमर्जिंग स्टार की टीम ने तीन विकेट खोकर 111 रन बनाए और जीत के लिए राइजिंग टैलेंट की टीम को 112 रनों का लक्ष्य दिया लक्ष्य का पीछा करने उतरी राइजिंग टैलेंट की टीम ने आठ ओवर में पांच विकेट खो कर महज 80 रन ही बना सकी। जिसमें इमर्जिंग स्टार की टीम 31 रनों से विजयी रही। इस मैच का मैन ऑफ द मैच आर्यन कुमार कक्षा 7बी को चुना गया। अंडर 14 में क्रिकेट का मुकाबला ब्लू हिल्स एंड येल्लो हिल्स के मध्य हुआ। जिसमें येल्लो हिल्स की टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करते हुए प्रतिद्वंदी टीम को 53 रनों का लक्ष्य दिया लक्ष्य का पीछा करने उतरी ब्लू हिल्स की टीम ने 7.3 ओवर में दो विकेट शेष रहते ही लक्ष्य को प्राप्त कर जीत दर्ज की। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार कक्षा 9 बी के छात्र सत्यम कुमार को मिला 100मीटर रेस के लड़का ग्रुप में कक्षा 5 ए के अनुराग बाबू ने प्रथम स्थान, शिवम कुमार गुप्ता कक्षा 3 बी ने द्वितीय एवं कक्षा 3 बी के अंकित कुमार राय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं गर्ल्स ग्रुप में प्रिया यादव कक्षा 4 ए ने प्रथम स्थान रूही कुमारी कक्षा 3 बी ने द्वितीय स्थान एवं कक्षा 1 की छात्रा कुमारी विद्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया 200 मी रेस के बॉयज ग्रुप में कक्षा सिक्स बी के छात्र सचिन कुमार ने प्रथम स्थान सिक्स बी के अंकेश कुमार ने द्वितीय स्थान एवं कक्षा 8 बी के रंजन कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया खेलों की समाप्ति के उपरांत पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सभी विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विद्यालय के निदेशक डॉ नंदकुमार सिंह ने कहा कि खेल भी पढ़ाई का एक अभिन्न हिस्सा है। खेलों से बच्चों का मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास तो होता ही है साथ ही साथ उनमें पढ़ने लिखने की प्रवृत्ति और भी प्रबल हो जाती है। यह विद्यालय का 15वां वार्षिक खेलकूद महोत्सव है। इसमें कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा 9 तक के कुल 730 छात्र छात्राओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के वरीय शिक्षक मुन्ना कुमार ने किया। जिस कार्यक्रम में खेल शिक्षक संतोष कुमार सिंह एवं रंजीत कुमार का सराहनीय योगदान रहा।

द डीपीएस के सफल एक्सीलेंट इलेवन परीक्षार्थियों हुए सम्मानित

प्रात: किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) लगातार छठे वर्ष समारोह आयोजित करके द डीपीएस विद्यालय प्रबंधन ने एक्सीलेंट इलेवन परीक्षा के विजेताओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का उद्घाटन बिक्रमगंज कोर्ट के न्यायाधीश संजीव कुमार ने दीप प्रज्वलित करके किया।उनके साथ द डीपीएस के सह निदेशक अखिलेश कुमार आईआईटीएन अमितेश्वर आनंद एवं प्रधानाचार्य डॉ बसंत दास ने मंच साझा किया। सभी ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरूआत की।विदित हो कि एक्सीलेंट इलेवन द डिवाइन पब्लिक स्कूल की एक वैसी कल्याणकारी योजना है जिसका उद्देश्य वैसे छात्र-छात्राओं का चयन करना है। जो अथार्भाव के कारण अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं।वर्ष 2016 में इस योजना की शुरूआत हुई तब से लेकर अब तक इस परीक्षा के माध्यम से 30 से ज्यादा बच्चे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।एक्सीलेंट इलेवन परीक्षा में पांचवी में पढ़नेवाले विद्यार्थी फॉर्म भरते हैं साथ ही अभ्यर्थी द डीपीएस का छात्र नहीं होना चाहिए। परीक्षा के बाद कॉपियों की सूक्ष्मता पूर्वक जांच करने के बाद सर्वश्रेष्ठ ग्यारह विद्यार्थियों का चयन किया जाता है।

चयनित छात्रों को पुरस्कार के साथ कक्षा छठी में नामांकन लिया जाता है। साथ ही कक्षा दशवीं तक उनको निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।योजना की शुरूआत के साथ ही यह परीक्षा लोकप्रिय हो गई थी। जो वर्तमान समय में अभिभावक वर्ष भर इसके आयोजन की प्रतीक्षा करते हैं। वही रोहतास जिले के अलावा, भोजपुर, बक्सर, जहानाबाद, औरंगाबाद, कैमूर, भभुआ इत्यादि जिलों से भी विद्यार्थी अब परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। जो एक्सीलेंट इलेवन में चयनित बच्चों में इस वर्ष दिव्या कुमारी पिता-ज्योतिष कुमार सिंह ग्राम, पोस्ट शिवपुर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। शुभम राज पिता मुन्ना लाल गुप्ता बिक्रमगंज को द्वितीय अर्पित राज पिता संजीव कुमार सिंह, ग्राम रामपुर को तृतीय रिषभ कुमार पिता-मंटू कुमार ग्राम-कातर को चतुर्थ अल्तमस रजा पिता-मो अमजद हुसैन ग्राम-श्रीकांतपुर को पांचवा राज राजेश्वर राज पिता-संतोष कुमार सिंह, ग्राम बिसुनपुरा को छठा गोविंद कुमार पांडेय, पिता रमून कुमार पांडेय ग्राम-सकलाबाजार को सातवां छोटू कुमार पिता-सुरेंद्र चौधरी, ग्राम पोस्ट आँछा, जिला औरंगाबाद को आठवां उत्कर्ष कुमार पिता-बिजेंद्र कुमार ग्राम-बेलवाई को नवां अर्चना कुमारी पिता-मिथलेश कुमार बिक्रमगंज को दसवां तथा जया कुमारी पिता-योगेश्वर चौधरी ग्राम-डीहरा को ग्यारहवां स्थान प्राप्त हुआ। इसके अलावा 12 से 22 रैंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सांत्वना पुरस्कार दिया गया।अपने संबोधन में न्यायाधीश संजीव कुमार ने कहा कि बच्चों के नवनिर्माण की दिशा में द डीपीएस का यह कार्य समाज के लिए आईना है।सभी सफल प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि जो पिछड़ गए उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है।सभी छात्र अपनी-अपनी रुचि के अनुसार श्रेष्ठ हैं। मार्क्स के लिए बच्चों को न डांटे। कागज के टुकड़ों से उनका आंकलन न करें। आईआईटियन अमितेश्वर आनंद ने विजेताओं को सलाह दी कि आप इसी परीक्षा को अंत न मान लें बल्कि पूरे जीवन की परीक्षाओं की सफलता के लिए पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखें। विद्यालय के सह निदेशक अखिलेश कुमार ने अपने संबोधन में बताया कि इस प्रतियोगिता की शुरूआत के पीछे एकमात्र यही चिंतन और लालसा रही है कि कोई भी बच्चा आर्थिक तंगी की वजह से शिक्षा विहीन न होने पाए।

आरा में बीवी पैट गोदाम के सुरक्षाकर्मी ने गार्ड रूम में खुद को गोली मार की आत्महत्या, सनसनी

नवादा थाना क्षेत्र के ब्लॉक रोड स्थित कृषि भवन में शनिवार की देर शाम घटी घटना

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। शहर के नवादा थाना क्षेत्र के ब्लॉक रोड स्थित कृषि भवन में शनिवार की देर शाम वीवी पैट गोदाम के एक सुरक्षा कर्मी ने अपने ही लाइसेंसी राइफल से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। सुरक्षा कर्मी ने अपने लाइसेंसी इंसास राइफल से ललाट के बीचो-बीच गोली मारी है। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना को लेकर आसपास के इलाके एवं पुलिस महकमे में हड़कंप मच गई है। उधर घटना की सूचना मिलते ही डीएम राज कुमार, एसपी प्रमोद कुमार, एएसपी परिचय कुमार एवं नवादा थानाध्यक्ष राकेश कुमार सिंह सहित पुलिस के कई अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच मामले की छानबीन में जुट गए हैं। जानकारी के अनुसार मृतक जवान मूल रूप से पटना जिला के घोषवारी थाना क्षेत्र के शहरी गांव निवासी शिव पासवान का 27 वर्षीय पुत्र हेमंत कुमार है। वह बिहार पुलिस जवान था एवं नवंबर माह में वीवी पैट में उसकी पोस्टिंग हुई थी। वह डीएपी 151 अंतर्गत एपी पुलिस केंद्र आरा के कृषि भवन में वीवी पैट गोदाम में सुरक्षाकर्मी के रूप में कार्यरत था। इधर भोजपुर डीएम राज कुमार ने बताया कि हमारे यहां एवं ईवीएम वेयर हाउस में तीन सुरक्षा तैनात थे और वह चौबीस घंटे सुरक्षा में थे। उसमे एक हेमंत कुमार भी थे। जो जिला बाल 151 प्रतिनियुक्ति में थे। उनके साथ एक और सुरक्षा कर्मी भी थे जो कुछ सामान लाने के लिए बाजार गए थे। जब वह बाजार से वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि गेट अंदर बंद है और रूम का दरवाजा भी लॉक है। जब उसने खिड़की से झांककर देखा तो हेमंत कुमार जमीन पर गिरे थे और खून बह रहा था। इसके बाद उनके द्वारा अपने वरीय पदाधिकारी को इसकी सूचना दी गई। जिसके बाद स्थानीय थाना प्रभारी, एएसपी और उसके बाद एसपी साहब और हम यहां पहुंचे। इसके बाद वीडियो ग्राफी की गई और अंदर से तोड़कर दरवाजा को खोला गया। उन्होंने बताया कि जो इंसास राइफल उन्हें निर्गत की गई थी। उसी राइफल से गोली चली है। कहीं से भी गेट खुलने और किसी की एंट्री होने की कोई संभावना नहीं है। जिसे देखते हुए प्रथम दृष्टिया आत्महत्या करने का मामला लग रहा है। डीएम ने बताया कि हो सकता है। उनकी कोई निजी करण रही होगी। इस संदर्भ में उनके परिवार वालों को सूचित कर दिया गया है। उनके आने के बाद विस्तृत रूप से जानकारी पता चल पाएगी।

लोकसभा चुनाव को लेकर इंडिया गठबंधन कार्यकर्ता ने की बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) लोकसभा चुनाव में इंडियन गठबंधन की ओर से राजाराम सिंह को प्रत्याशी बनने पर खुशी व्यक्त की है। जिस चुनाव को लेकर सीपीआईएम के नेता सतार अंसारी की अध्यक्षता में कार्यकताओं ने एक बैठक की। कार्यक्रम में चर्चा करते हुए भाजपा हटाओ-देश बचाओ, लड़ेंगे जीतेंगे के नारे पर विशेष चर्चा किया गया। साथ ही बूथ स्तर पर इंडिया गंठबंधन के कार्यकताओं को संगठित करने और घर-घर मतदाताओं को जागरूक करने का निर्णय लिया गया। जिसको लेकर 7 अप्रैल को नोखा प्रखंड के श्रीखिण्डा, जैनगरा, बरावं, विशुनपुरा, हथिनी, नोनसारी, कैथी, बलिगावां धर्मपुरा, नोखा आदि गांवों में उम्मीदवार राजाराम सिंह का दौरा का निर्णय लिया गया।जबकि 25 अप्रैल को नोखा में विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ता सम्मेलन करने काघोषणा किया। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव संविधान बनाम मनुस्मृति, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाम हिन्दू राष्ट्र के सवाल पर होगा। मौके पर राजद प्रखंड अध्यक्ष मो. अख्तर जमाल, भीम सिंह, रविशंकर राम, जितेन्द्र प्रसाद, लाल बहादुर यादव, राजेश कुमार सिंह, अखिल भारतीय अंबेडकर कल्याण संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंदर चक्रवर्ती, बंचित अधिकार परीषद संजय कुमार सिंह, श्री निवास राम सहित अन्य कार्यकर्ता ने बैठक में भाग लिया।

यीशु के याद में ईस्टर पर्व धूमधाम से मनाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नगर परिषद क्षेत्र स्थित जेम्स चर्च भवन में रविवार को ईस्टर पर्व धूमधाम से मनाया गया। अवसर बच्चों सहित लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर बने गीत-संगीत पर नृत्य किया। मौके उपस्थित लोगों ने

एक-दूसरे को हैप्पी ईस्टर की बधाई दी। कार्यक्रम चर्चा का आयोजन सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक किया गया। जहां भजन कीर्तन से पूरा चर्च प्रभु यीशु मय वातावरण गूंज उठा था। प्रार्थना कार्यक्रम का संचालन रंजीत कुमार ने बताया कि यीशु भक्त को अपने-पापों से पश्चाताप कर प्रभु की शरण में आने वाले जन को क्षमा व उद्धार का वरदान प्राप्त होगा। जिस में बलिराम कुमार का भी भरपूर सहयोग रहा। साथ ही संत जोसफ कन्वेंस स्कूल के मैडम सुनीता मैडम के नेतृत्व में यीशु के भजन कीर्तन किया गया। भजन कीर्तन समाप्त होने के बाद प्रतिभोज का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अमित कुमार, रिंकी कुमारी, पूजा कुमारी साहित्य सैकड़ों भक्त लोग उपस्थित थे।

अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नावानगर (बक्सर) बिहार सरकार के दिबीशा निर्देश के आलोक में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन विद्यालय किया गया। उक्त संगोष्ठी मध्य विद्यालय रामनगर और मध्य विद्यालय बिक्रम इंग्लिश समेत प्रखण्ड के सभी विद्यालयों में हुआ। जिसमे शिक्षा समिति के सदस्यों, विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तथा विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की उपस्थित रहे सगोष्टि में वर्ग 5 एवं 8 के विद्यार्थियों को प्रगति-पत्रक वितरण किया गया। अवसर पर संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापक ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं तहत मिशन दक्ष, एफएलएन स्टूडेंट्स बैग वितरण, बेंच-डेस्क आपूर्ति, टीएलएम किट आपूर्ति, पाठ्य पुस्तक के बारे में बताया गया।

अनुमंडल पुलिस ने विभिन्न जगहों से 9 वारंटी को भेजा जेल

प्रात: किरण संवाददाता

-बिक्रमगंज (रोहतास) अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत संझौली, दिनारा, नासरीगंज एवं कछवां पुलिस ने थाना क्षेत्र के अलग- अलग जगहों से कुल 9 वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया । इस संदर्भ में जानकारी देते हुए संझौली थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के तिलई निवासी स्वर्गीय चंद्रमा बैठा के पुत्र निर्मल बैठा को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया ।

उन्होंने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से इस्तेहार वारंट निर्गत था । वही दिनारा पुलिस ने थाना क्षेत्र के भुई टोला निवासी महेंद्र चौधरी ,दिनेश चौधरी ,उमेश चौधरी एवं योगेंद्र चौधरी को गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। दिनारा थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि गिरफ्तार चारों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत वारंट था । वही नासरीगंज पुलिस ने भी गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के चितोखर निवासी हरिहर साह एवं खुटहां निवासी कुंज बिहारी शर्मा को गिरफ्तार कर लिया ।

थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत था । वही कछवां पुलिस ने भी गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के मंगरांव नोआंव टोला निवासी विकास कुमार सिंह पिता रामेश्वर सिंह एवं रामेश्वर सिंह उर्फ बल्ली पिता राम सिंह को गिरफ्तार कर लिया। कछवां थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत था ।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातःकिरण
पटना, सोमवार, 01 अप्रैल, 2024

जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा शत प्रतिशत सभी मतदाताओं को वोटर इनफोर्मेशन सिल्प उपलब्ध करवाने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गया। लोक सभा आम निर्वाचन, 2024 के अवसर पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी गया डॉ॰ त्यागराजन एसएम ने प्रत्येक मतदाता को वोटर इनफोर्मेशन सिल्प उपलब्ध कराने का निदेश दिया है। सभी निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी इआरोनेट अन्तर्गत दिये गये इआर प्रटीम टुल के माध्यम से मतदान केन्द्रवार वोटर इनफोर्मेशन सिल्प का मुद्रण कर संबंधित मतदान केन्द्र के मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी को उपलब्ध करायेंगे।निवार्ची पदाधिकारी के हस्तपुस्तिका में दिये गये निदेश के आलोक में मतदान की तिथि के पांच दिन पूर्व तक सभी मतदाता को वोटर इनफोर्मेशन सिल्प उपलब्ध कराया जाना है। मतदाता सूचना पर्ची पर एक क्यु आर कोड होगा जो बुथ एप के माध्यम से संबंधित भाग के निर्वाचक का नाम खोजने,निर्वाचक विवरण का मिलान करने में मदद करता है। क्यु आर कोड का विवरण वोटर हेल्पलाइन ऐप के जरिए भी देखा जा सकता है। क्युआर कोड कोड में केवल भीआइस की अनुमोदित जानकारी, होगी जो भीआइस पर मुद्रित होती है। वोटर इनफोर्मेशन सिल्प के वितरण के पश्चात तैयार किये गये एएसडी लिस्ट नोडल पदाधिकारी सामग्री कोषांग को उपलब्ध कराया जाना है, ताकि उनके द्वारा मतदान हेतु तैयार किये जाने वाले थैला में रखवाया जा सके। इसके लिए आवश्यक है कि प्रथम चरण के लिए दिनांक 14तक हर हालत में सभी मतदाता को वोटर इनफोर्मेशन सिल्प मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी के माध्यम से वितरण करना सुनिश्चित की जाये। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी ने सभी सहायक निवार्ची पदाधिकारी एवं सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को सख्त निर्देश दिया है कि वोटर इनफॉरमेशन स्लिप सभी मतदाताओं तक हर हाल में बांटना सुनिश्चित करेंगे। वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप में संबंधित मतदाता के मतदान केंद्र संबंधित जानकारी, मतदाता की विवरणी, बूथ लोकेशन सहित अन्य आवश्यक जानकारी उपलब्ध रहती है। वोटर इनफोर्मेशन सिल्प वितरण के क्रम में निम्नलिखित बिन्दुओं का अनुपालन सुनिश्चित करेंगे । वोटर इनफोर्मेशन सिल्प का वितरण बी०एल०ओ० द्वारा घर-घर जाकर किया जाएगा। किसी भी परिस्थिति में किसी स्थान पर केंद्रित होकर वितरण नहीं करना है। *डीएम ने सभी सहायक निवार्ची पदाधिकारी एवं सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को सभी वोटर्स तक 100% वोटर इंफोर्मेशन सिल्प बंटवाने का सख्त निर्देश दिया है।वोटर इनफोर्मेशन सिल्प मतदाता को अथवा उसके परिवार के किसी व्यस्क सदस्य को ही दिया जाएगा। किसी भी परिस्थिति में परिवार के सदस्य से परे व्यक्ति को मतदाता पर्ची प्राप्त नहीं कराया जाएगा।

वोटर इनफोर्मेशन सिल्प के शत-प्रतिशत वितरण की जिम्मेवारी संबंधित बी०एल०ओ० की होगी। इस कार्य को अभियान के तौर पर सम्पादित करना है। इस हेतु प्रत्येक सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी के स्तर से दो अन्य कर्मी को मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी की सहायता के लिए प्रतिनियुक्त कर सकते हैं ताकि वोटर इनफोर्मेशन सिल्प का ससमय वितरण हो सके। बी०एल०ओ० द्वारा प्रतिदिन वितरण संबंधी प्रतिवेदन सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी को एक प्रपत्र में 5:00 बजे अपराहन तक समर्पित करेंगे। सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सभी मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी से प्राप्त प्रतिवेदन को समेकित कर समेकित प्रतिवेदन संबंधित निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी को भेजेंगे। निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी से प्राप्त प्रतिवेदन के आलोक में समेकित प्रतिवेदन जिला निर्वाचन कार्यालय, गया को अपराह्न 6:00 बजे तक निश्चित रूप से भेजेंगे।वोटर इनफोर्मेशन सिल्प वितरण का कार्य किसी भी परिस्थिति में प्रथम चरण के मतदान के लिए दिनांक-14तक किया जाना है। मतदान की तिथि 19है। सभी बी०एल०ओ० अपने सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी को 5:00 बजे अपराह्न तक विहित प्रपत्र में वितरण संबंधी अंतिम प्रतिवेदन समर्पित करेंगे। बी०एल०ओ० द्वारा प्राप्त वितरण संबंधी अंतिम प्रतिवेदन को समेकित कर सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी द्वारा अंतिम प्रतिवेदन निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी को भेजेंगे। निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी से प्राप्त अंतिम प्रतिवेदन के आधार पर वोटर इंफोर्मेशन सिल्प के वितरण संबंधी अंतिम प्रतिवेदन दिनांक 14तक निश्चित रूप से भेजना सुनिश्चित करेंगे।

वितरण के पश्चात प्रत्येक मतदान केन्द्र के लिए एसीडी लीस्ट संबंधित निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी द्वारा निम्नलिखित प्रपत्र में दिनांक 14 तक निश्चित रूप से सामग्री कोषांग, गया को उपलब्ध करा देंगे। नोडल पदाधिकारी सामग्री कोषांग निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी से प्राप्त मतदान केन्द्रवार एसीडी लीस्ट मतदान हेतु तैयार किये गये थैला में रखवाना सुनिश्चित करेंगे।निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सभी मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी से अविलंब प्राप्त कर उसे सील्ड कभर में अपने पास सुरक्षित रखेंगे। के वितरण की पूर्णता: जवाबदेही निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी की है। निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी आयोग के मापदंडो के अनुरूप वितरण कार्य का गहन अनुश्रवण एंव पर्यवेक्षण करते हुए जवाबदेही के साथ मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारियों के माध्यम से निर्धारित समय सीमा के अन्दर वितरण करवाना सुनिश्चित करेंगे। सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी उक्त कार्य में अपने निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी की आवश्यक सहयोग करेंगे। सभी निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, वितरण का कार्यक्रम तैयार जिला निर्वाचन पदाधिकारी को उपलब्ध करायेंगे। सभी सेक्टर पदाधिकारी का की गई वितरण का जाँच करेंगे तथा भारत निर्वाचन आयोग, के पत्र सं०-464/क्टरल्,श्क्स/2023,एहर दिनांक 08.06.2023 का अक्षरशः अनुपालन करेंगे सभी निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी कार्य हेतु मतदान केन्द्र स्तरीय पदाधिकारी बीएलो के साथ बैठक आयोजित कर निदेशित करना सुनिश्चित करेंगे कि किसी भी परिस्थिति में वोटर इंफोर्मेशन लेटर का ब्लक में वितरण नहीं किया जायेगा तथा इस कार्य में लापरवाही बरतने वाले बीएलओ के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जायेगी।जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने निर्देश दिया है कि उपरोक्त वर्णित सभी कार्य ससमय पूर्ण करना सुनिश्चित करेंगे। इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही, कार्य शिथिलता एवं चूक को काफी गंभीरता से लिया जायेगा।

संक्षिप्त खबरें

आग में 5 लाख से अधिक की संपत्ति नुकसान का अनुमान

रक्सौल। शनिवार की बीती रात एक बिरियानी हाउस में लगी भयंकर आग से लगभग 5 लाख से अधिक की संपत्ति जलकर राख हो गई है। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। पहले तो लोगों द्वारा आग बुझाने का प्रयास किया गया, परंतु फायर बिग्रेड की वाहन आने पर काफी देर के बाद उस आग पर काबू पाया गया। मामला शहर के लक्ष्मीपुर का है। मिली जानकारी के अनुसार बिरियानी हाउस में आग लगने के पहले उसके बगल के एक चाय की दुकान से आग की शुरूआत हुई, ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि शायद गैस सिलेंडर खुला हुआ था, जिस कारण आग और भयावह हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग में सिलेंडर भी विस्फोट हुआ है। उधर घटना के तुरंत बाद पुलिस भी मौके पर पहुंच चुकी थी। बिरियानी हाउस के संचालक ने बताया कि उसके दुकान सभी महंगे फर्नीचर नए ही लगाए गए थे, गला में कुछ नकदी राशि एवं बैंक खाता के साथ बही-खाता भी था, जो सब कुछ जल कर खाक हो गया है। घटना तकरीबन रात के साढ़े 10 बजे की है। उन्होंने बताया कि लगभग 5 लाख का नुकसान हुआ है।

कॉमरेड चंद्रशेखर की शहादत दिवस मनाया गया

अरवल। भाकपा माले जिला कार्यालय में कॉमरेड चंद्रशेखर की शहादत दिवस मनाया गया। 1 मिनट का मौन श्रद्धांजलि दी और उनके तैल चित्र पर पुष्पांजलि की गई। .शाह शाद , सुऐब आलम,ने बताया कि कॉमरेड चंद्रशेखर 90 के दशक जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष चुने गए थे। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पिछड़े एवं दलितों के लिए आंदोलन करके वहां आरक्षण दिलवाए थे । छात्र जीवन के बाद बिहार में सक्रिय राजनीति शुरू किए उन्होंने लाल झंडे के बैनर तले गरीबों मजदूरी को अधिकार के लिए हमेशा लड़ते रहे ।उसके बाद सिवान में सभा के दौरान शासक वर्गो के द्वारा उनकी हत्या कर दी गई थी। जिस तरह से देश में माहौल बनाया जा रहा है उनकी आज जरूरत थी लेकिन शासक वर्गो ने 31 मार्च 1997 को हत्या कर दी गई।

द लाइट सिनेमा की सफल लांचिंग

औरंगाबाद। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के द्वारा द लाइट सिनेमा की सफल लांचिंग नरेंद्र टॉकीज औरंगाबाद में की गई। द लाइट सिनेमा एक आध्यात्मिक जगत की सिनेमा है, जिसमें साकार प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की जीवनी पर आधारित यह 3 डी एनीमेशन मूवी है। जीसे देखने के बाद एक सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। फिल्म का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्वलित औरंगाबाद के सांसद सुशील कुमार सिंह, कुटुंबा प्रखंड प्रमुख धर्मेंद्र, भाजपा कुटुंबा मंडल अध्यक्ष प्रवीण कुमार एवं औरंगाबाद ब्रह्मा कुमारीज की मुख्य संचालिका आदरणीय बीके सविता दीदी ने किया। गोह संगीता बहन, बारूण सिंकी बहन, अंबा बेबी बहन, देव शीला बहन, मदनपुर प्रियंका बहन, डिहरी काजल बहन, डालटेनगंज लाली बहन, भाई, बहन के साथ मूवी को देखने के लिए उपस्थित रही। लगभग 650 से भी अधिक दर्शक मौजूद रहे।

एसएसबी ने आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सघन जांच अभियान चलाया

बेतिया(घनश्याम) ।बगहा के वाल्मीकिनगर स्थित इंडो नेपाल सीमा गंडक बराज पर तैनात एसएसबी के जवान चेक पोस्ट पर हर आने जाने वाले लोगों का गहन जांच कर रही है। भारत से नेपाल और नेपाल से भारत आने जाने वाले लोगों के साथ साथ दो पहिया व चार पहिया वाहन का भी गहन जांच किया जा रहा है । बतादें की आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर एसएसबी 21 वीं बटालियन के गंडक बराज पर तैनात बी समवाय के जवान जांच में सख्ती बरत रहें है और हर दृष्टिकोण से जांच प्रोसेस के उपरांत ही लोगो को आवाजाही करने दिया जा रहा है। इस जांच में सख्ती के बावजूद आम लोगो ने प्रसन्नता जाहिर की है, तो वहीं गैर कानूनी कार्य करने वालों में मायूसी छा गई है। चेक पोस्ट पर मौजूद निरीक्षक प्रदीप कुमार मंडल साथ में उप निरीक्षक प्रदीप कुमार शुक्ला और सहायक उप निरीक्षक रवि कुमार के साथ अन्य जवान जांच प्रक्रिया को कार्यान्वित कर रहे है।

मैट्रिक में 88 प्रतिशत अंक लाकर कनक ने बढ़ाया शहर का मान

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। अगर सच्चे मन से कड़ी मेहनत की जाए और इरादा नेक और मजबूत हो तो बड़ी से बड़ी मंजिल भी ऐसे इंसान के सामने बौने पड़ जाते हैं। कुछ ऐसा ही किया है रक्सौल के सिसवा पंचायत निवासी पूर्व सरपंच रामबाबू प्रसाद राय के पुत्र कनक बिहारी बाबू ने। कनक ने अपने कड़ी मेहनत के बदौलत 88 प्रतिशत अंक के साथ मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ है।

उसे 5 सौ अंको में कुल 440 अंक प्राप्त हुए है। कनक ने सिसवा पंचायत के ही उच्च माध्यमिक विद्यालय सिसवा से मैट्रिक परीक्षा दिया है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक राकेश कुमार आर्य ने इस पर हर्ष जताते हुए बताया कि कनक शुरू से ही मेधावी छात्र रहा है, सभी शिक्षकों को उससे विशेष आशा थी, उसकी दैनिक उपस्थिति भी बेहतर रही है। कनक के इस सफलता से उसके पिता रामबाबू प्रसाद राय काफी खुश नजर आएं। वहीं कनक ने इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता एवं भाई-बहन के साथ अपने शिक्षकों को दिया है। उसके इस सफलता पर प्रधानाध्यापक राकेश कुमार आर्य सहित शिक्षक-शिक्षिकाओं ने हर्ष व्यक्त किया है, जिनमें बेबी कोमल, मो. रैसुल आजम, बेबी कुमारी, अलका कुमारी, मो. कलीम अख्तर, प्रमोद कुमार, धर्मवीर कुमार, एकता, ममता कुमारी, राकेश प्रसाद, रीता देवी, प्रियंका कुमारी, नंदकिशोर राय, सीमा वर्मा एवं निलेश कुमार शामिल हैं।

अभिभावक एवं शिक्षक के बीच मीटिंग बच्चों के लिए विकास की प्रथम सीढ़ी: धर्मेंद्र कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। दिल्ली पब्लिक स्कूल के द्वारा अभिभावक एवं शिक्षक मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावक के द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल एवं एक्स नेवी ऑफिसर धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि इस तरह के मीटिंग के आयोजन से शिक्षक, अभिभावक के बीच जो दूरियां और कमियां होती है वह हद से ज्यादा कम हो जाती हैं। शिक्षक एवं अभिभावक के द्वारा खुलकर अपने बच्चो की कमी एक दूसरे के बीच साझा करते हैं ।जिससे पठन-पाठन में छात्रों के बीच रुचि बढ़ जाती है। धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि इस तरह का मीटिंग बच्चों के विकास के प्रथम सीढ़ी होता है। उन्होंने आगे बताया कि बहुत सारी ऐसी चीज होती है जो बच्चे अपने अभिभावक को नहीं बता पाते और अपने शिक्षक से कुछ बातें साझा करते हैं। तब वहीं शिक्षक अभिभावक को उनके बच्चों की बातों से अवगत भी करते हैं।

ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करने गए छात्र

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। मुख्यमंत्री शैक्षणिक परिभ्रमण योजना के अंतर्गत अभ्यास मध्य विद्यालय शाहपुर के बच्चे रविवार को ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करने गए। वार्ड पार्षद सतीश सिंह ने हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया। इस दौरान विद्यालय के प्राचार्य रामकुमार राम, शिक्षक रंजीत प्रसाद सिन्हा, सत्यनारायण सिंह, वंदना कुमारी, संगीता देवी आदि मौजूद रहे।

प्राचार्य रामकुमार राम ने बताया कि विद्यालय के लगभग 40 बच्चे ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करने बोधगया गए हैं। जहां उन्हें हर तरह की जानकारी दी जाएगी। साथ ही बोधगया में प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर, बोधि वृक्ष आदि के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया जाएगा जिससे उनकी जानकारी बढ़ सके और ऐतिहासिक स्थलों के प्रति उनकी रुचि हो। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री के द्वारा चलाई गई यह योजना बच्चों के लिए बहुत ही लाभकारी है। इससे उन्हें समय-समय पर ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कराया जाता है ताकि उनकी जानकारी में वृद्धि हो सके। परिभ्रमण के दौरान बच्चों के खाने-पीने की भी व्यवस्था की गई है। साथ ही बच्चों को विद्यालय से सुरक्षित ले जाना और वापस लेकर आना इसकी जिम्मेदारी भी हम लोगों की ही है।

लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) । लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर रविवार को भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकताओं ने लोकसभा चुनाव कार्यालय में जिला बैठक आयोजित की। भाजयुमो जिलाध्यक्ष अभिषेक यादव के अध्यक्षता में लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर बेतिया, नौतन व चनपटिया के सभी मंडलो में अपनी स्थिति मजबूत करने व आगामी कार्यक्रम का रूप रेखा तय की गई ।बैठक को संबोधित करते हुए भाजयुमो के प्रदेश उपाध्यक्ष धरंजन कुशवाहा ने कहा कि इस लोकसभा चुनाव के तैयारी में सभी युवा लग जाये ।उन्होंने कहा कि पार्टी का अकेले जितने का लक्ष्य 370 सीटे है और एनडीए गठबंधन के सहयोगियों के साथ मिलकर 400 से ज्यादा अधिक सीटे जितना है ।उन्होंने विशेष रूप से सभी मंडल अध्यक्ष को अपने-अपने शक्तिकेन्द्र को मजबूत करने का निर्देश दिया साथ ही कहा कि बिहार में हम 40 में 40 सीटे जीतकर मोदी जी के हाथों को और मजबूत करें ।जिलाध्यक्ष अभिषेक यादव ने चुनाव में भाजयुमो के कार्यकर्ताओ को और प्रभावशाली तरीके से कार्य करने की सलाह दी।भाजपा के तरह ही प्रत्येक शक्तिकेन्द्र पर अब भाजयुमो का भी शक्तिकेन्द्र संयोजक व सह संयोजक जल्द से जल्द बनाने का निर्देश दिया ।उन्होंने कहा कि हम शक्तिकेन्द्र को और मजबूती के लिए वहाँ अपना कार्यकर्ता की टोली बनाकर इस चुनाव को और मजबूती दे सकते है ।आज के समय मे सोशल मीडिया पर युवा मोर्चा की लचर उपस्थिति को लेकर उन्होंने अपने सभी कार्यकर्तओं से ज्यादा से ज्यादा सक्रिय होने की सलाह दी ।कार्यक्रम का संचालन जिला उपाध्यक्ष राजीव मिश्रा व धन्यवाद ज्ञापन जिला महामंत्री किशन श्रीवास्तव ने किया ।मौके पर जिला उपाध्यक्ष मुकेश कुशवाहा व कुणाल राज श्रॉफ, जिला मंत्री मुन्ना गुप्ता,संजय यादव,आइटी सेल संयोजक रवि किशन,कमल क्लब के सह संयोजक अजय गुप्ता,स्वच्छता संयोजक संजीव पासवान,मंडल अध्यक्ष आकाश श्रीवास्तव, रोहित शर्मा,भूपेंद्र दास,आशीष कुशवहा, अक्षय लाल,गोविंद शाह,अतुल तारा तिवारी,विक्की सिंह व संतोष सिंह,जी.कार्यसमिति रितेश राय,बिपिन शर्मा,आलोक पाल, राजीव सिंह सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दो करोड़ के चरस के साथ टोला चपरिया के उपमुखिया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) ।पचरौता एसएसबी और भंगहा पुलिस की संयुक्त कार्यवाही से 10 किलो चरस व बाइक के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है. प्रेस कांफ्रेंस में डीएसपी जयप्रकाश सिंह ने बताया की एसएसबी और पुलिस की संयुक्त कार्यवाही में बड़ी सफलता हाथ लगी है. बताया गया की पुलिस को सूचना मिली की नेपाल से चरस की खेप आने वाली है।

सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष राहुल प्रसाद ने एसएसबी असिस्टेंट कमांडेंट अतुल तिवारी को सूचित कर टीम गठित किया गया. इंडो-नेपाल बॉर्डर एरिया को घेराबंदी कर लिया गया. रविवार की अहले सुबह देखा गया की पिलर संख्या 428 के पास से एक व्यक्ति बाइक पर नेपाल से आ रहा था. थाना क्षेत्र के बेहरी गांव के पास उसे रुकने का इशारा किया गया. लेकिन वह बाइक छोड़ भागने लगा. पुलिस ने खदेड़ कर पकड़ लिया और तलाशी शुरू कर दी गई. तलाशी के दौरान छिपा कर रखे 10 किलो चरस बरामद की गई. पुलिस ने चरस तस्करी के आरोपी मैनाटांड थाना क्षेत्र के रमपुरवा निवासी विनोद कुमार को गिरफ्तार कर लिया. दस किलो चरस की अंतरराष्ट्रीय कीमत 2 करोड़ रुपए आंकी गई है. इधर बताते चले कि तस्कर टोला चपरिया के उपमुखिया भी है. ये उपमुखिया के आड़ में जोर-शोर से तस्करी करता है. विगत 2023 में शराब की तस्करी में जेल जा चुका है. मौके पर सीओ आशीष आनंद, भंगहा थानाध्यक्ष राहुल प्रसाद, चौकीदार संदीप यादव आदि जवान मौजूद रहें।

पर्यटन नगरी में आपातकालीन 112 सेवा के लिए जागरूक होने की लोगों से थानाध्यक्ष ने अपील की

बेतिया(घनश्याम) ।बगहा के पर्यटन नगरी वाल्मीकिनगर में आपातकालीन 112 सेवा मिलने के बाद पुलिस प्रशासन लोगों का भरोसा कायम करने के लिए दृढ़ संकल्प दिख रही है। इसके लिए थानाध्यक्ष ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि किसी भी विषम परिस्थिति में 112 पर आपात सेवा के लिए कॉल करें। यह बात जनजन तक समाचार माध्यम से पहुंचे ताकि पब्लिक इस आपातकालीन सेवा का लाभ उठा सके। बतादें की पर्यटन नगरी को आपात सेवा 112 जिला प्रशासन के द्वारा उपलब्ध कराया गया है। यह सेवा वाल्मीकिनगर में गत माह से सुचारु है और लोगो के सेवा में तत्पर है। बतादें की ऐसी कई घटनाएं हुई जिसकी सूचना समय से 2 से 3 मिनट के दरमियान आपात सेवा उपलब्ध होते देखा गया है। इस सेवा का लाभ ज्यादा से ज्यादा लोगों को मिले इसके लिए लोगों को जागरूक होना पड़ेगा और लोग एक दूसरे को इसके लिए जागरूक करें । इस सेवा का लाभ वाल्मीकिनगर आए पर्यटक भी उठा सकेंगे। थानाध्यक्ष ने अपने माध्यम से इस के लिए लोगों से अपील भी कर रहें है।

भारी मात्रा में जप्त विदेशी शराब को मजिस्ट्रेट व उत्पाद विभाग सहित सिरिसिया पुलिस ने थाना परिसर में किया विनिष्ट

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)मरविवार को दिन दोपहर दोपहर में पदाधिकारियों के आदेश पर सिरिसिया थाना परिसर में जे सी बी के सहारे अंचलाधिकारी कमलाकान्त सिंह, उत्पाद निरीक्षक मुन्ना कुमार, थानाध्यक्ष मदन कुमार मांझी के मौजूदगी मे भारी मात्रा जप्त अंग्रेजी शराब को विनष्ट किया गया। ।उत्पाद निरीक्षक मुन्ना कुमार ने बताया कि पंजाब निर्मित विभिन्न ब्रांडों का लगभग 75 सौ लीटर शराब को कैमरे के निगरानी में जे सी बी के सहारे विनष्ट किया गया ।थानाध्यक्ष मदन कुमार मांझी ने बताया कि रखे गये जप्त शराब से लेकर विनष्टीकरण स्थल तक पुलिस की चारो तरफ कड़ी निगरानी थी ।अपर थानाध्यक्ष करवेन्दर पशवान ने बताया कि इतनी भारी मात्रा में विनष्ट हो रहे शराब की बदबू से कई लोग मदहोश हो गये ।थानाध्यक्ष मांझी ने बताया की इतनी भारी मात्रा में जप्त शराब तथा विनष्टिकरण करने का पहला मौका मिला है । भारी मात्रा में शराब विनष्ट हो रहे को देखने के लिए छोटे बच्चे से लेकर आसपास के महिला पुरुष व बच्चे की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी। पुलिस ने विनिष्ट करण एरिया से लोगों को भगाति रहि, यह कार्यवाई दोपहर से लेकर देर शाम तक चलती रही।

ग्लोबल कायस्थ कांफ्रेंस ने की एनडीए प्रत्याशी के समर्थन की घोषणा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। ग्लोबल कायस्थ कांफ्रेंस के जिला कार्यकारिणी की बैठक रविवार को जिलाध्यक्ष चित्रांश संजय कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में बहुआर चौरा स्थित संस्था कार्यालय में आयोजित की गई है। इस बैठक के दौरान सबसे पहले जिलाध्यक्ष श्री सिन्हा व चित्रांश अरविंद चरण प्रियदर्शी को संस्था के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य चुने जाने पर उपस्थित लोगों ने उन्हें बधाई दी है। इस बैठक को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने आसन्न लोकसभा चुनाव के मद्देनजर चुनावी मैदान में उतरे उम्मीदवारों की स्थिति पर चर्चा की है। इसके बाद में सर्वसम्मति से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रत्याशी हम सुप्रीमो सह पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी का समर्थन करने का निर्णय लिया गया है। वक्ताओं ने कहा कि सभी दलों ने कायस्थों को ठगने का काम किया है। लेकिन, एनडीए के शासनकाल में ही ईडब्ल्यूसी के माध्यम से समाज के फारवर्ड तबके को 10 फीसदी आरक्षण देने का काम किया गया है। वहीं उन्होंने कहा कि सात मार्च को शहर के चांद चौरा इलाके में स्थित मैत्री गार्डेन में कार्यक्रम आयोजित कर एनडीए प्रत्याशी का स्वागत किया जाएगा। इस कार्यक्रम के दौरान जिलेभर से चित्रांश परिवार जुटेंगे। मौके पर चित्रांश रंजन सिन्हा, कुमुद रंजन, प्रभात शंकर उर्फ सुनील सिन्हा, रंजन कुमार श्रीवास्तव, जितेन्द्र कुमार सिन्हा, राहुल सिन्हा, राजीव रंजन सिन्हा, मनोज कुमार सिंहा, नीरज कुमार, सुमित कुमार सिन्हा, राहुल कुमार, सुजीत कुमार अम्बष्ट, वेद सिन्हा, शेखर कुमार, नलीन कुमार सिन्हा, रतन कुमार, सिद्धार्थ कुमार, दीपक कुमार, शशि भूषण सिंह, शुभम कुमार सिन्हा, रंजन कुमार सिन्हा, सुधीर कुमार वर्मा, विजय कुमार सिन्हा, संजय कुमार सिन्हा, विश्व रंजन सिन्हा, पंकज कुमार सिन्हा, आशुतोष कुमार, धर्मेंद्र कुमार सिन्हा, प्रभात सिन्हा, प्रशांत सिन्हा समेत सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद थे।

सीयूएसबी के लॉ के छात्र रेड्डी ने राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता में जीता सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता का पुरस्कार प्राप्त किया

गया ।राष्ट्र स्तर पर अपने बेहतरीन प्रदर्शन को बरकरार रखते हुए दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबी के स्कूल ऑफ लॉ एंड गवर्नेंस एसएलजी ने एक और उपलब्धि अपने नाम की है ` जन सम्पर्क पदाधिकारी पीआरओ ने बताया कि एसएलजी के बीए एलएलबी के छात्र अवुला वीरभद्र रेड्डी ने नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, हैदराबाद द्वारा आयोजित "तीसरी नालसर - सीसीआई एंटी ट्रस्ट मूट, 2024" प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता का पुरस्कार जीता है । प्रतिस्पर्धा कानून पर केंद्रित इस कार्यक्रम में देश भर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने भाग लिया था । इस प्रतियोगिता में सीयूएसबी की टीम में कौशिक कुमार और शिवा रानी वक्ता थे और अवुला वीरभद्र रेड्डी शोधकर्ता थे। रेड्डी की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह, कुलसचिव कर्नल राजीव कुमार सिंह, डी.एस.डब्ल्यू प्रो. पवन कुमार मिश्रा के साथ एसएलजी के प्रमुख एवं डीन प्रो. संजय प्रकाश श्रीवास्तव ने बधाई दी है ।कुलपति ने वीरभद्र रेड्डी और उनकी टीम के सदस्यों की प्रशंसा करते हुए भविष्य में सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं है। विधि विभाग के प्रध्यापकगणों क्रमशः प्रो. अशोक कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार दास, डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. पूनम कुमारी, डॉ. दिग्विजय सिंह, डॉ. देव नारायण सिंह, डॉ. मणि प्रताप, डॉ. अनंत प्रकाश नारायण, डॉ. कुमारी नीतू, डॉ. नेहा शुक्ला, डॉ. अनुराग अग्रवाल, डॉ. अनुजा मिश्रा आदि ने भी रेड्डी को बधाई एवं शुभकामनायें दी है ।विस्तृत जानकारी देते हुए डॉ. पल्लवी सिंह समन्वयक, मूट कोर्ट सोसाइटी एवं डॉ. चंदना सुबा सदस्य, मूट कोर्ट सोसाइटी ने बताया कि प्रतियोगिता के लिए देशभर से कुल 24 टीमें पंजीकृत थीं` प्रतियोगिता के विभिन्न राउंड में क्वालिफाई करने के बाद रेड्डी ने शोधकर्ता परीक्षण के अंतिम दौर में जीत हासिल की है। इस जीत के लिए रेड्डी को 7500 रुपये की पुरस्कार राशि के साथ सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता का प्रमाण पत्र मिला है ।

मैगरा उच्च विद्यालय के छात्रा सिमरन गुड़िया ने डुमरिया प्रखंड का नाम रौशन किया

गया ।डुमरिया प्रखंड के मैगरा उच्च विद्यालय के छात्रा सिमरन गुड़िया ने 441 नंबर लाकर डुमरिया प्रखंड का नाम रौशन की है ।सिमरन गुड़िया के बड़े भाई पवन चंद्रवंशी ने बताया की सिमरन घर पर रहकर ही पढ़ाई करती थी,प्रतिदिन 10 घंटा पढ़ाई करती थी,आगे इंटर के बाद यूपीएससी का तैयारी करना चाहती है ।बधाई देने में डुमरिया प्रमुख आशा देवी,प्रतिनिधि जितेंद्र उर्फ जित्तू सिंह,उप प्रमुख सुनैना कुमारी,राजन पासवान,राजद नेता प्रताप दास,जिला पार्षद रविंद्र राम समेत सैंकड़ों लोगों ने मिठाई खिला कर बधाई दिए और बोले बहुत ही खुशी के बात है की नक्सल प्रभावित इलाकों के बच्चे इतने अच्छे नंबर लाकर प्रखंड सहित मैगरा डुमरिया के नाम रौशन कर रही है।

मैट्रिक परीक्षा में 476 अंक प्राप्त कर सपना कुमारी बनी अरवल जिला टॉपर

अरवल। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा 2024 का मैट्रिक रिजल्ट जारी किया गयो मैट्रिक परीक्षा में अरवल जिले के परासी बाजार गाँव के रहने वाली सपना कुमारी 476 अंक के साथ अरवल जिला टॉप की है` सपना कुमारी कि पिता बैजनाथ प्रसाद किसान है एवं माता सुषमा कुमारी जो ग्रहणी हैवह निर्भय नरेंद्र उच्च विद्यालय निरंजनपुर पढ़ाई की छात्रा है इसका श्रेय अपने गुरु कमलेश पटेल एवं माता-पिता को दिया है सपना 476 अंक के साथ अरवल जिला में प्रथम स्थान लाकर अपने जिला का नाम रोशन कि है उन्होंने पटेल कोचिंग सेंटर सुमेरा में पढ़ाई की है उन्होंने बताई की आगे चलकर यूपीएससी का तैयारी कर आईएएस अधिकारी बनकर देश का सेवा करना चाहती हूँ कोचिंग सेंटर के संस्थापक कमलेश कुमार ने बताया कि अगर मनुष्य ठान ले और गुरु का मार्गदर्शन सही मिले तो सिर्फ लगन और कड़ी मेहनत से सफलता हासिल किया जा सकता हैं` सपना के पिता ने बताया कि काफी गर्व महसूस कर रहा हूं जो मेरी बेटी जिला में प्रथम स्थान हासिल की है` सपना ने बताया कि पढ़ाई से संबंधित किसी प्रकार का किसी विषय में दिक्कत होती थी तो निर्भय नरेंद्र उच्च विद्यालय निरंजनपुर के इतिहास विषय के पूर्व शिक्षक बसंत नारायण ज्योति सर से सवाल का जवाब उनसे जानकारी प्राप्त करता था काफी कुछ सीखने को मिला है आज इन्हीं के बदौलत इस मुकाम तक पहुंची हू` इधर जिला में सेकंड स्थान बैदराबाद गांव निवासी पवन कुमार गुप्ता के पुत्री नैना कुमारी 472 अंक के साथ अरवल बालिका उच्च विद्यालय का नाम रोशन की है उन्होंने बताया कि आगे चलकर यूपीएससी की तैयारी कर आईएएस बनकर देश की सेवा करना चाहती हूं , माता-पिता गुरूजनो का बदौलत से इस मुकाम तक पहुंची हूं वही जयपुर सर गणेश दत्त उच्च विद्यालय छात्रा स्वर्गीय नीसार अहमद अंसारी के पुत्री जुगनू परवीन 470 अंक लाकर जिले में तीसरे स्थान हासिल की है।

इस वर्ष का आयोजन होगा आकर्षण का केन्द्र: क्षितिज मोहन सिंह

गया। श्रीरामनवमी पूजा सेन्ट्रल कमिटि कि बैठक आज धर्म सभा भवन में आयोजित कि गई है। इस बैठक में गयाजी के सभी झंडा प्रभारी शामिल हुए हैं! कार्याध्यक्ष क्षितिज मोहन सिंह ने कहां कि जिला प्रशासन से सारे बिन्दुओ पर चर्चा कि जायेगी और जो सभी बिन्दू आ रही है उसे जल्द दूर किया जायेगा। जिस प्रकार पूर्व में शोभायात्रा का आयोजन कि गया है उसी प्रकार इस बार भी शोभायात्रा का आयोजन किया जायेगा। इस वर्ष राम मंदिर में विराजमान प्रभू राम जी कि प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र होगा शोभा यात्रा में, सभी जगहों से बड़े संख्या में राम भक्त इस आयोजन में शामिल हो इसको लेकर बैठक का भी आयोजन किया जा रहा है। गया शहर को जल्द सजा दिया जायेगा, समिति के सभी सदस्य आयोजन के सफल आयोजन करने के लिए रोजाना बैठक कर रहे है लगभग सभी वार्डो में बैठक का आयोजन किया गया है ।संगठन महामंत्री ओमप्रकाश सिंह ने कहां कि जो सभी समस्या झंडा प्रभारीयों को हो रही है उसे जल्द दूर कर दिया जायेगां। इस वर्ष शोभा यात्रा और विहंगम निकाली जायेगी।

संक्षिप्त खबरें

लोडेड देशी कट्टा के साथ युवक हुआ गिरफ्तार

नवगछिया (भागलपुर)। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर एसपी पुरन कुमार झा के निर्देश में सभी थाना क्षेत्र इलाके में लगातार वाहन जांच, सघन छापेमारी व समकालीन अभियान के तहत फरार अभियुक्तों, वारंटियों, नशेड़ियों समेत अपराधियों की गिरफ्तारी व कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में ढोलबज्जा थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर ग्राम रामपुर के सुधाकर यादव अपने बासा के समीप किसी घटना को अंजाम देने के लिए हथियार लेकर घूम रहा है। सूचना पाकर ढोलबज्जा थानाध्यक्ष दलबल के साथ सुधाकर यादव के बासा के समीप पहुंचे तो एक व्यक्ति पुलिस को देखकर वहां से भागने लगा। जिसे मौजूद सशस्त्र बलों ने खदेड़कर पकड़ लिया। तलाशी के दौरान सुधाकर यादव के कमर से लोडेड देशी कट्टा बरामद हुआ। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। मामले को लेकर ढोलबज्जा थाना में आर्म्स एक्ट के तहत कांड दर्ज कर गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेजा दिया।

वाहन जांच के क्रम में बाइक सवार दो युवक शराब के साथ हुआ गिरफ्तार

नवगछिया (भागलपुर)। इस्माईलपुर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र अंतर्गत निज टोला में वाहन जांच के क्रम में एक मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक को 375 एमएल विदेशी शराब के साथ गिरफ्तार किया है। मामले को लेकर इस्माईलपुर थानाध्यक्ष अमोद कुमार ने बताया कि गिरफ्तार शराब कारोबारी इस्माइलपुर लक्ष्मीपुर के सचिन कुमार पिता शिव शंकर यादव और कटिहार जिला के कुर्सेला थाना क्षेत्र के जरलाही के दिलखुश कुमार पिता अवधेश यादव शामिल है। गिरफ्तार अभियुक्तों के विरुद्ध मद्य निषेध एवं उत्पाद अधिनियम के तहत कांड दर्ज कर दोनो को मेडिकल जांच के साथ न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

315 बोर देशी रायफल हुआ बरामद, महिला गिरफ्तार

नवगछिया (भागलपुर)। इस्माईलपुर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र अंतर्गत शिव मंदिर टोला स्थित रविता देवी पति कारेलाल मंडल के घर पर छापेमारी कर 315 बोर का एक देशी रायफल बरामद किया गया। वही गिरफ्तारी को लेकर इस्माइलपुर थानाध्यक्ष अमोद कुमार ने बताया कि मौके से रविता देवी को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार महिला से पूछताछ की जा रही है। वही मामले को लेकर आर्म्स एक्ट के तहत कांड दर्ज कर गिरफ्तार अभियूक्त को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

अठारह घंटे बाद मिला लापता छात्र का मृत शव

नवगछिया (भागलपुर)। खरीक प्रखंड अंतर्गत राघोपुर गंगा नदी में शुक्रवार को स्नान करने के दौरान डूबे 6 वर्षीय किशोर का शव करीब 18 घँटे बाद शनिवार को बरामद हुआ। शव को ढूंढने के लिए एसडीआरएफ की टीम के साथ परबत्ता थाना की पुलिस व गोताखोरों को बुलाया गया था। परबत्ता पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडल अस्पताल नवगछिया भेज मामले की जांच में जुट गई है। ज्ञात हो कि शुक्रवार दोपहर बाद खरीक प्रखंड के छोटी अलालपुर निवासी मनोहर मंडल के पुत्र पीयूष कुमार विद्यालय से घर आते ही अपने भाई के साथ गंगा स्नान करने गया था। जहां तेज धार में बहकर वह गहरे पानी मे चला गया और वह डूब गया। घटना के बाद परबत्ता पुलिस, एसडीआरएफ टीम व ग्रामीणों की मदद से शव तलाशने में लगी हुई थी।

चोरों ने की अस्पताल से 10 पंखा की चोरी

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। शुक्रवार की देर रात अज्ञात चोरों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में पूर्वी क्षेत्र में नवनिर्मित भवन की खिड़की का छड़ काटकर और शीशा तोड़कर 10 पंखा एवं देसी बाथरूम आदि में कुल 40 टेप नल की चोरी कर ली चोरी को लेकर अस्पताल नव निर्माण कार्य कर रहे मिश्रा सत्यनारायण सिंह कृष्णापुरी देवघर के संवेदक के मुंशी अशोक कुमार सिंह ने खड़गपुर थाना में आवेदन के माध्यम से जानकारी दिया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन 6 और 7 अप्रैल को

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। पूर्वांचल बिहार झारखंड मध्य देशीय वैश्य समाज का 170 वां दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन सह सती महोत्सव की तैयारी को लेकर एक बैठक महासभा के अध्यक्ष मनोज कुमार शाह की अध्यक्षता में की गई। आगामी 06 और 07 अप्रैल को होने वाले वार्षिक सती महोत्सव की रूपरेखा पर चर्चा की गई। अध्यक्षता मनोज कुमार साह ने किया। इस मौके पर प्रतिवर्ष की तरह दो दिवसीय सती महोत्सव का आयोजित होना है जिसमें राष्ट्रीय एवं क्रांति पदाधिकारी विचारक भाग लेंगे बैठक के सचिव शाह संरक्षक गिरीश प्रसाद गुप्ता प्रमोद शाह मीडिया प्रभारी सह प्रवक्ता कुमार आदर्श दीपक कुमार मौजूद थे।

वोट बहिष्कार की खबर देख तिनटंगा करारी पहुंचे अधिकारीगण

शहरी क्षेत्र के दक्षिणी क्षेत्र में भी लोगों ने किया विरोध

प्रात: किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। अनुमंडल परिक्षेत्र स्थित गोपालपुर खास महल कचहरी व तिनटंगा करारी पंचायत को पुनः गोपालपुर अंचल में शामिल किये जाने की मांग को लेकर ग्रामीणों द्वारा लोकसभा चुनाव में वोट बहिष्कार किये जाने की खबर समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित किये जाने के बाद स्थानीय जिला प्रशासन सह गोपालपुर बीडीओ निशांत कुमार, सीओ रौशन कुमार व थानाध्यक्ष मिथिलेश कुमार तिनटंगा करारी गांव पहुंचे और ग्रामीणों से जानकारी प्राप्त कर आवेदन देने को कहा है। ग्रामीण सह पूर्व सरपंच शंभू यादव ने बताया कि हमलोगों ने अधिकारियों को बता दिया है कि पूर्व में सभी संबंधित अधिकारियों को लिखित आवेदन दिया गया था, लेकिन किसी तरह की कार्रवाई इस दिशा में नहीं हुई है। अब पुनः रविवार को बैठक आयोजित कर कमिटि का निर्माण कर आगे का कार्यक्रम तय किया जायेगा। ज्ञात हो कि लोकसभा चुनावों में जिला परिक्षेत्र इलाके के कई स्थानों पर जगह जगह स्थानीय जनप्रतिनिधियों व राजनीतिक प्रतिनिधि के उदासीनता के कारण विकसित नगर व शहर की खोखले दावों का दंश झेल रहा गांव प्रखंड ही नहीं बल्कि नगर की हालत दशा भी अछूता नहीं रहा है। जिससे ग्रामीणों के लोगों के साथ साथ नगर के आम नगरवासियों का धैर्य बांध टूटता नजर आ रहा है। वही दूसरी तरफ जिले के दक्षिण क्षेत्र इलाके के बाल्टी कारखाना चौक मार्ग से होकर गुजरने वाली सड़क मारूफचक के रास्ते से होकर हबीबपुर मार्ग को जोड़ने वाली सड़क की हाल प्रत्यक्ष रूप से लोगो के नरकीय हालत बयान करता हुआ साफ तौर पर दिख रहा है। क्षेत्र के रहनेवाले लोगों के दरवाजे पर नाले का गंदा पानी बजबजाती हालत में साफ तौर पर देखने को मिल रहा है। मामले को लेकर स्थानीय लोगों की माने तो विगत कई दशक से ग्रामीण व नगर पालिका के उदासीन रवैया की भेंट चढ़ नारकीय हालत में तब्दील हो लोगों के घर दरबाजे पर गंदगी बजबजाती हालत में वर्षो से दंश झेल आम लोगों के जीवन के विकासशील नगर व गांव की बात खोखला साबित होता दिख रहा है। जिससे लोग अपने आवाज को बुलंद कर अपने हक अधिकार की बात को लेकर इस चुनाव में वोट डालने का विरोध जताते हुए वोट बहिष्कार करने का निर्णय ले स्थानीय प्रशासन को आइना दिखाने का काम करने को मजबूर हो गये है। वही दूसरी ओर जिला प्रशासन लोगों के बीच चुनाव में मतदान के सतत प्रतिशत वोटिंग कराने की मुहिम के साथ जागरूक करने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाते हुए चल रही हैं। अब देखने वाली बात है कि स्थानीय लोगों के द्वारा की जा रही विरोध निति को कैसे अपने मन के मुताबिक तब्दील करने की गतिविधि को सार्थक पहल को सुदृढ़ कर लोगों के विश्वास को विकसित करने में जोड़ देती हैं।

अगर मतदान का किया बहिष्कार तो, वैसे लोगों के विरुद्ध होगी कानूनी कार्रवाई : एसएसपी

प्रात: किरण संवाददाता

भागलपुर। जिले में आगामी 26 अप्रैल को द्वितीय चरण में होने वाले लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया तेज हो गई है। वही इस दौरान क्षेत्रीय मतदाता द्वारा ज्यादा से ज्यादा मतदान के साथ वोटिंग प्रतिशत बढ़ाए जाने को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी डॉ. नवल किशोर चौधरी लगातार क्षेत्र इलाके में जागरूकता अभियान के साथ साथ दौरा कर आम लोगों के बीच पहुंच कर उनके बीच व्यवस्था से जुड़ी बातचीत करने की मुहिम भी चला रही हैं। वहीं दूसरी ओर जिले के शहरी व ग्रामीण इलाकों से मतदान बहिष्कार किए जाने की सूचना लगातार सामने आ रही हैं तो वही उक्त सूचना के आलोक में जिलाधिकारी व वरीय पुलिस अधीक्षक द्वारा जिले के तमाम विभाग के जुड़े आला पदाधिकारियों के साथ संयुक्त रूप में एक बड़ी बैठक की साथ ही संबंधित अधिकारियों को मतदान बहिष्कार किए जाने वाले क्षेत्र इलाके में पहुंचकर आम लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं को दूर करने हेतू निर्देशित किया है। इस दौरान जिलाधिकारी ने आम लोगों से मतदान की शक्ति पहचान की बात करते हुए कहा कि आपका एक एक वोट आपके इलाके में विकास की इबादत लिख सकती है। वहीं डीएम डॉ. चौधरी ने यहां तक कहा कि अगर आपको नेता पसंद नहीं है, तो नोटा का बटन दबाइए, लेकिन अपना मतदान जरूर दीजिए। वहीं सीनियर एसपी आनंद कुमार ने कहा है कि संगठित रूप से मतदान का बहिष्कार किया जाना एक अपराध की श्रेणी में आता है, और ऐसे लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी, साथ ही सीनियर एसपी ने यहां तक कहा है कि अगर कोई व्यक्ति लोगों को मतदान करने के विरुद्ध बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करते दिखे तो वैसे लोगों के विरुद्ध कानूनी तौर पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

गरूड़ जागरूकता अभियान में 70 छात्र छात्राएं व शिक्षक हुए शामिल

प्रात: किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। विगत दिनों से लगातार चलाए जा रहे गरूड़ जागरूकता अभियान कार्यक्रम में कोसी कदवा दियारा के मध्य विद्यालय, उच्च विद्यालय और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के करीब 70 छात्र-छात्रों और शिक्षकों को शामिल किया गया। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग वन प्रमंडल भागलपुर और मंदार नेचर क्लब की ओर से वन प्रमंडल पदाधिकारी श्वेता सिंह की पहल पर शहर के सुंदरवन में क्षेत्र परिभ्रमण सह जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें भागलपुर के वन क्षेत्र पदाधिकारी राजेश कुमार का सम्पूर्ण सहयोग रहा है।

इस कार्यक्रम में मुख्य विषय वस्तु पुराने लोग तो यहाँ गरुड़ संरक्षण के विगत दो दशकों के इतिहास से परिचित हो रहे हैं, मगर नई पीढ़ी तो यहाँ गरुड़ की प्रजातियों, उनके महत्व और व्यवहार से उतनी परिचित नहीं है। भविष्य के लिए इन बच्चों को भी अभी से मुख्य धारा से जोड़ने में आवश्यक माना जा रहा है। गरुड़ पर बनी लगभग आधे घंटे की फिल्म के माध्यम से इन बच्चों को गरुड़ के वैश्विक महत्व, उनकी अद्यतन स्थिति के साथ शरुआत से लेकर अब तक यहाँ के किसानों और अन्य स्थानीय समुदाय के लोगों द्वारा किये गए प्रयासों के बारे में बताया गया। जिस प्रयास की बदौलत ही सन 2007 में इनकी 78 की संख्या अब 600 से अधिक हो गई है। उन्हें दुनिया की सबसे बड़ी पक्षियों के संरक्षण के लिए काम करने वाली संस्था रॉयल सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स, इंग्लैंड के वैज्ञानिकों इयान बार्बर और डॉ पॉल डोनाल्ड साक्षात्कार भी दिखाए। जब वे अरविंद मिश्रा के साथ कदवा में अध्ययन के लिए आए थे। वैज्ञानिकों डॉ असद रहमानी और आशीष कोठारी के विचारों को भी इस फिल्म के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। आशीष कोठारी ने कहा कि यहाँ का समुदाय किसी लोभ के कारण इन गरुडों का संरक्षण नहीं कर रहा बल्कि जरूरत पड़ने पर खुद के पैसे खर्च करने को भी तैयार रहता है। कार्यक्रम का संचालन मंदार नेचर क्लब के संस्थापक अरविंद मिश्रा और विभाग के वन्य जीव चिकित्सक डॉ संजीत कुमार ने किया। अरविंद मिश्रा ने स्लाइड शो के माध्यम से गरुड़ और इनसे मिलती जुलती प्रजातियों का वर्णन किया। आयर गरुड़ से सम्बंधित वज्ञानिक तथ्यों से भी बच्चों और शिक्षकों को परिचित कराया। उन्होंने बताया कि हम कोसी कदवा दियारा और आस-पास के इलाकों के युवा, बुजुर्ग, महिलाओं, मछुआरों और बच्चों समेत हर तबके का सहयोग गरुडों के संरक्षण में लेना चाहते हैं। डॉ संजीत कुमार ने स्कूल के छात्र-छात्राओं और शिक्षकों को गरुड सेवा एवं पुनर्वास केंद्र ले जाकर उनकी चिकित्सा, रख-रखाव और पारिस्थिकीय तंत्र में उनके योगदान के बारे में जानकारियां दीं। कछुओं की प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में और नदियों के जल को स्वच्छ रखने में क्या भोमिक होती है, इसे भी बताया। इन केन्द्रों में इन जीवों का इलाज कर उनके स्वस्थ हो जाने पर उन्हें उनके प्राकृतिक वास में छोड़ दिया जाता है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) के शोधार्थी वर्तिका, अभय राय और सुष्मित ने पक्षियों के प्रवास और प्रवासी मार्गों से संबंधित वैज्ञानिक कार्यो के बारे में विस्तृत जानकारी दी और बताया कि कैसे पक्षियों को छल्ले पहनाकर और सैटेलाइट लगाकर उनके आवागमन का अध्ययन किया जाता है। कार्यक्रम मे प्रशांत कुमार, प्रभाकर सिंह, उदय सिंह, सुरुचि कुमारी, रचना, सुबोध साह, नूतन कुमारी और मुक्ता मंडल ने कहा कि अब हम विद्यालय में भी बच्चों को पक्षियों के संरक्षण के बारे में प्रेरित करते रहेंगे। पशु-पक्षी प्रेमी शिक्षक मुकेश चौधरी, पर्यावरण प्रेमी वतन कुमार और पक्षी पालक मो अख्तर ने भी अपने अनुभव साझा किये। गरुड़ सेवियर्स राजीव कुमार, दीपक कुमार, विनय कुमार, मो मुमताज और मो अरसद सहित वनरक्षी अनुराधा सिंहा, वनरक्षी प्रियंका कुमारी आदि ने पूरे कार्यक्रम में सहयोग किया।

पुलिस ने मोटर साइकिल के साथ शराबी को किया गिरफ्तार

बरियारपुर(मुंगेर) रात्री गश्ती के क्रम मे एक मोटर साईकिल पर तीन सवार बरियारपुर-से सुलतानगंज के तरफ तेज रफ्तार में जा रही थें। बरियारपुर पुलिस को देख तेज रफ्तार मे भागने लगा जिसे देख गस्ती दल को शंका हुआ और गश्ती दल उस मोटरसाइकिल का पीछा करने लगा। घोरघट गांव के समीप उसके रफ्तार से भाग रहे मोटरसाइकिल को पुलिस ने पकड़ा लिया। इसके मुंह से शराब के गन्द निकल रहा था जिसे पल्सर मोटरसाइकिल समेत बरियारपुर थाना प्रांगण मे लाया गया। पूछ ताछ में उन्होंने बताया कि मेरा नाम देवदत्त कुमार, शिक्रम कुमार, कौशल कुमार ग्राम बैरिया बंडाला थाना नाथनगर जिला भागलपुर बताया। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बरियारपुर के चिकित्सकों को द्वारा जॉच करने से ज्ञात हुआ की सभी शराब के नशे में हैं जिसे पुलिस अभिरक्षा मुगेर जेल भेज दिया गया।

गठबंधन में दल तो मिल चुके हैं, लेकिन दिल से दिल मिलना अभी बाकी ?

भाजपा तथा जदयू नेताओं के बीच गठबंधन से पूर्व बढी तल्खी अगर नहीं मिटी तो पड़ सकता है प्रभाव

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर। बिहार में एनडीए और महागठबंधन दलों के बीच सीट बंटवारे की घोषणा हो चुकी है। कई सीटों पर उम्मीदवार की भी घोषणा के साथ-साथ सिंबल भी दे दिया गया है। सुबे बिहार का सबसे अधिक हॉट सीट में शुमार मुंगेर लोकसभा सीट से जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सह वर्तमान सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह लगातार दूसरी बार जीत हासिल करने के लिए चुनावी मैदान में। बताते चले की राज्य में एनडीए सरकार बनने से पहले इस क्षेत्र का राजनीतिक परिदृश्य कुछ और था। भाजपा नेताओं द्वारा जदयू को कटघरे में खड़ा किया जाता था। चाहे वह वर्तमान सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह द्वारा आयोजित महाभोज का मुद्दा हो या लखीसराय में लोक आस्था का महापर्व छठ के दौरान तीहरे हत्याकांड का मामला हो। बताते चले की लोक आस्था का महापर्व छठ पर्व के दिन लखीसराय शहर के पंजाबी मोहल्ला में हुई भीषण गोलीकांड और तीहरे हत्याकांड के बाद भाजपा और जदयू के बीच काफी तल्ख तेवर रहे थे। उप-मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार चौधरी ने लखीसराय में महाधरना भी दिया था। भाजपा और जदयू के जिलाध्यक्ष और कार्यकताओं के बीच भी काफी तल्खी बढ़ी थी। भाजपा नेताओ ने जदयू पर कई गंभीर आरोप लगाए गए थे। वर्तमान सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह को भी विजय शंकर सिंह तथा सम्राट चौधरी ने महाधरना के दौरान कटघरे में खड़ा किया था। अब सत्ता बदल गई है। बदलते राजनीतिक समीकरण में जदयू और भाजपा एक साथ हो गई है, लेकिन पुरानी तल्खी का दर्द अभी मीठा नहीं है। गठबंधन में दल तो मिल गए, दिल मिलना सबसे बड़ी चुनौती नजर आ रही है। मुंगेर संसदीय क्षेत्र के अधीन लखीसराय विधानसभा से उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिंह वर्तमान में विधायक हैं। दूसरी सीट सिट पर राजद विधायक प्रहलाद यादव का कब्जा है। हालांकि प्रहलाद यादव फ्लोर टेस्ट में राजद को छोड़ एनडीए के साथ हो गए। ऐसे में दोनों विधानसभा सीट फिलहाल एनडीए के कब्जे में है। इधर लोजपा (रामविलास) भी एनडीए का हिस्सा है। इसके प्रदेश उपाध्यक्ष रविशंकर प्रसाद उर्फ अशोक सिंह का जदयू के साथ बेहतर समन्वय नहीं है। अशोक सिंह पहले ललन सिंह के हनुमान माने जाते थे। पिछले विधानसभा चुनाव से ही उन्होंने अलग राह अपना रखी है। राजनीतिक सूत्रों की माने तो ऊहापोह और असमंजस की स्थिति में कार्यकताओं को अपने शीर्ष नेताओं के सिग्नल का इंतजार है। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि एनडीए गठबंधन में दल तो मिल चुके हैं, लेकिन दिल मिलाना सबसे बड़ी चुनौती नजर आ रही है। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि जदयू और भाजपा के बीच पूर्व में जिस प्रकार के रिश्ते रहे हैं और मुंगेर क्षेत्र के सांसद ललन सिंह को उपमुख्यमंत्री विजय शंकर सिन्हा तथा सम्राट चौधरी मुंगेर संसदीय क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को लेकर हमेशा कटघरे में खड़ा करते रहे हैं, इससे दोनों दलों के इन नेताओं के बीच रिश्ता अच्छा नहीं माना जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि अगर लोकसभा चुनाव में इन नेताओं के बीच रिश्ते नहीं सुधारते हैं, तो मुंगेर लोकसभा सीट पर चुनाव मे प्रभाव पड़ सकता है। दल के साथ-साथ जदयू तथा भाजपा नेताओं के बीच दिल से दिल भी मिलना चाहिए।

जाम के कारण नहीं हो सका नामांकन : प्रत्याशी

प्रात: किरण संवाददाता।

भागलपुर। जिले में आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर आमतौर पर संगठन के साथ साथ समाजसेवी लोगों के बीच सुगबुगाहट तेज हो गई है। चुनावी प्रक्रिया को लेकर जहां जिला प्रशासन के आलाधिकारियों की बैठक व कार्यगतिविधि लगातार क्षेत्र इलाके में मतदाता जागरूकता अभियान के लिए लगातार दौर शुरू है तो वही जिले के दूसरे चरण में होने वाले चुनाव को लेकर आगामी 26 अप्रैल की तैयारी में सामाजिक कार्यकर्ता और संगठन के कार्यकताओं द्वारा चुनावी मैदान में उतड़ने कई तैयारी को लेकर भागलपुर समाहरणालय प्रांगण में नामांकन की प्रक्रिया चालू कर दिया गया है। इसी कड़ी में भागलपुर जिला लोकसभा में अभी तक एक भी प्रत्याशी का नामांकन नहीं हो पाया है लेकिन वही निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी कार्यालय प्रांगण में प्रत्याशी द्वारा नामांकन दाखिल कराने हेतू कहलगांव अनुमंडल के महिला प्रत्याशी के विलंब से पहुंचने के बाद उनका नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया रोक दिया गया है। वही नामांकन प्रक्रिया को लेकर निर्दलीय महिला प्रत्याशी रूपम कुमारी को बैरंग नामांकन के वापस लौटना पड़ा, जिसे लेकर निर्वाचन से संबंधित सभी प्रक्रिया रोक के बाद प्रत्याशी रूपम कुमारी, उसके पति धनंजय कुमार मंडल और उसके समर्थक काफी आक्रोशित दिखे है। वही प्रत्याशी का कहना था कि मुख्य सड़क मार्ग पर वाहनों की लम्बी कतार के बजह से 4 घंटे तक जाम में फंसे रहने के कारण वह सही समय पर नामांकन दाखिल करने नहीं पहुंच पायी है। जिस कारण प्रत्याशी रूपम कुमारी का नामांकन प्रक्रिया रोक दिया गया, लेकिन जिला निर्वाचित पदाधिकारी सह जिलाधिकारी से यह अनुरोध भी किया है कि जाम के कारण उन्हें विलंब हुआ इसलिए उन्हें नामांकन करने दिया जाय, लेकिन समय समाप्त होने के कारण उन्हें नामांकन नहीं करने दिया गया। जिस पर लोकसभा प्रत्याशी रूपम देवी और उसके पति धनंजय कुमार मंडल ने कहा कि जाम के कारण वह समय पर नामांकन नहीं कर पायी, इसके लिए जिमेवार जिला प्रशासन पूर्ण रूप से दोषी है। पहले जिला प्रशासन एनएच 80 पर लगने वाले जाम से निजात दिलाए, तो ही समय पर नामांकन किए जाने की बात करें..।

जनप्रतिनिधियों को चुनाव के वक्त ही जनता की समस्याओं का याद आता है

प्रात: किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में मुंगेर जिले का तारापुर विधानसभा क्षेत्र के टेटिया बम्बर हवेली खड़गपुर अनुमंडल के क्षेत्र में पड़ता है चुनाव के वक्त ही जनता की समस्याओं की याद जनप्रतिनिधियों को आया करता है चुनाव के समय जब जनता से जनप्रतिनिधि रूबरू होते हैं तो उन्हें पता चलता है जनता की समस्याओं का इसके पहले जीत कर जाने के बाद क्षेत्र के भ्रमण में कभी सांसद या सांसद प्रतिनिधि ने रुचि नहीं दिखाते हैं यही हाल अनुमंडल क्षेत्र के टेटिया बम्बर प्रखंड के कुछ किसानों और आम लोगों की समस्याएं हैं टेटिया बंम्बर प्रखंड तारापुर विधानसभा और जमुई लोकसभा क्षेत्र के अधीन पड़ता है तारापुर विधानसभा क्षेत्र के टेटिया बम्बर चंपा चक गांव के मतदाता महाने नदी के कैनल पर पुल निर्माण की समस्या को लेकर कई बार क्षेत्र के सांसद सांसद प्रतिनिधि और विधायक से मांग करता रहा है लेकिन दशकों बाद आज तक इन गांवों के लोगों को इस नदी पर पुल के निर्माण की स्वीकृति नहीं दिलाई जा सकी है पुल नहीं बनने से यहां के लोगों को लंबी दूरी प्रखंड और अनुमंडल मुख्यालय जाना पड़ता है गर्मी और ठंड के मौसम में कैनाल में पानी नहीं होने से ग्रामीणों की परेशानी कम नहीं होती है बरसात में उनकी परेशानी बढ़ जाती है प्रखंड के टेटिया पंचायत के अंतर्गत चंपा चक गांव के समीप महाने नदी से निकलकर कैनाल पर पुल का निर्माण नहीं होने से टेटिया पंचायत के फरसा गांव के अलावा कई गांव के लोग कैनाल में घुसकर टेटिया बंबर प्रखंड पहुंचने को लेकर बेवस है

कहते हैं परसा गांव के ग्रामीण: परसा गांव के ग्रामीण रामदेव बिना अशोक सिंह कैलाश सिंह इंद्रदेव सिंह बहादुर सिंह ने बताया कि कैनाल पर पूल का निर्माण नहीं होने से वर्षा के दिनों में कैनाल में पानी चलने से 12 किलोमीटर चलकर प्रखंड मुख्यालय घूम कर जाना पड़ता है बरसात के दिनों में किसी भी व्यक्ति का तबीयत अगर खराब हो जाती है तो परेशानी बढ़ जाती है अब तक इस दिशा में किसी जनप्रतिनिधि का ध्यान नहीं गया है विधानसभा हो या लोकसभा का चुनाव हो यहां के ग्रामीणों को सिर्फ इस कैनाल के निर्माण के लिए आश्वासन ही आज तक मिलते आया है वहीं भुवनेश्वर प्रसाद सिंह कहते हैं कि चुनाव आने के बाद उम्मीदवार कैनाल पर पुल बनाने का वादा तो करते हैं लेकिन चुनाव संपन्न होने के बाद उम्मीदवार पुल बनाना तो दूर लोगों की समस्याओं को भी सुनने के लिए नहीं पहुंचते हैं वहीं जमुई लोकसभा क्षेत्र के चिराग पासवान दो बार सांसद चुने गए लगभग 10 वर्ष यहां के लोगों ने अपने संसद सदस्य को क्षेत्र में देखा तक नहीं है कैनाल पर पुल नहीं बनने से परेशानी हो रही है वहीं वरुण सिंह कहते हैं कि कैनाल पर पुल निर्माण नहीं किए जाने पर इस बार चुनाव में मतदाताओं में काफी आक्रोश है ग्रामीण अलग-अलग रणनीति बना रहे हैं।

भोजपुर में अनियंत्रित होकर मजदूरों से भरी पिकअप पलटी

इलाज के दौरान तीन ने आरा सदर अस्पताल एवं एक ने पटना के पीएमसीएच में तोड़ा दम

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। आरा-बक्सर नेशनल हाईवे पर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के रानी सागर मोड़ स्थित डायवर्सन के समीप शनिवार की देर रात अनियंत्रित होकर मजदूरों से भरी पिकअप पलट गई। हादसे में पिकअप पर सवार दो महिला समेत चार मजदूर की मौत हो गई। तीन ने इलाज के दौरान आरा सदर अस्पताल एवं एक ने पटना के पीएमसीएच में दम तोड़ दिया। जबकि पिकअप पर सवार एक दर्जन मजदूर गंभीर रूप से जख्मी हो गए। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी का माहौल कायम हो गया। उधर घटना की सूचना मिलते ही शाहपुर थानाध्यक्ष कुमार रजनीकांत पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और सभी जख्मी मजदूरों को पुलिस के सहयोग से इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार मृतकों में बक्सर जिला के सिकरोल थाना क्षेत्र के डफाडीह टोला गांव निवासी रमुन राम की 51 वर्षीया पत्नी सीता सुंदरी देवी, उसी गांव के नागा राम की 45 वर्षीया पत्नी मंगरी देवी, उसी जिले के मुरार थाना क्षेत्र के चौगाई गांव निवासी शिव कुमार राम की 55 वर्षीया पत्नी राम दुलारी देवी, रोहतास जिला के दिनारा थाना क्षेत्र के बीसी खुर्द गांव निवासी चिजू राम की 35 वर्षीय पुत्र सरोज कुमार शामिल है।

जबकि जख्मियों में बक्सर जिला के सिकरोल थाना क्षेत्र के डफाडीह टोला गांव निवासी 46 वर्षीया लालमनी देवी, 14 वर्षीय महावीर कुमार, 40 वर्षीय अरविंद राम, 40 वर्षीय किसनोत देवी, 54 वर्षिया मगली देवी, उसी थाना क्षेत्र के बशाव कला गांव निवासी 50 वर्षीया सोनाक्षी देवी, 42 वर्षीया मालकोनी देवी, 20 वर्षीय गुड़िया कुमारी, 45 वर्षीय रमेश राम, उसी जिले के मुरार थाना क्षेत्र के चौगाई गांव निवासी 55 वर्षीय शिव कुमार राम एवं रोहतास जिला के दिनारा थाना क्षेत्र के बीसी खुर्द गांव निवासी 30 वर्षीय शिव बच्चन राम एवं अरविंद राम शामिल है। इधर ने बताया कि सभी मजदूर शाहपुर थाना क्षेत्र के कारनामेपुर ओपी अंतर्गत माधवपुर (पिपरी) गांव में मसूरी काटने के लिए गए। शनिवार की देर रात जब पिकअप पर सवार होकर सभी मजदूर वापस लौट रहे थे। उसी दौरान रानी सागर मोड़ स्थित डायवर्सन के समीप उनकी पिकअप अनियंत्रित होकर पलट गई। जिससे सभी मजदूर गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जिसके बाद शाहपुर थाना पुलिस द्वारा सभी को इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां इलाज के दौरान सीता सुंदरी देवी, रामदुलारी देवी, सरोज कुमार मैं इलाज के दौरान आरा सदर के इमरजेंसी वार्ड में एवं मंगरी देवी ने पटना के पीएमसीएच में दम तोड़ दिया। जबकि जख्मियों में आधा दर्जन लोगों का प्राथमिक उपचार करने के बाद उनकी हालत को चिंताजनक देखते हुए पटना रेफर कर दिया गया एवं बाकी आधा दर्जन लोगों का इलाज आरा सदर अस्पताल में चल रहा है। इसके पश्चात शाहपुर थाना पुलिस द्वारा तीन मृतकों के आरा सदर अस्पताल एवं एक मृतका के शव का पटना पीएमसीएच में पोस्टमार्टम कराया गया। बताया जाता है कि मृतका सीता सुंदरी देवी को दो पुत्री धरवाता देवी, रीना देवी एवं एक पुत्र बड़क राम है।

12 घंटे बिजली रही ठप उपभोक्ता रहे परेशान

प्रात: किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। शनिवार को देर रात्रि से ही बिजली रानी गुम हो गई जिस से नौवागढी क्षेत्र में बिजली की बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई। उपभोक्ता काफी परेशान दिखे वही उपभोक्ता कल्याणी कुमारी, संजय कुमार, अरुण शर्मा, अनिल वर्मा द्वारा बताया गया कि शनिवार के देर रात्रि से ही बिजली गुम हो गई है रविवार के सुबह लगभग 12 तक बिजली का कोई अता पता नहीं दिखा जिससे हम लोग काफी परेशान हैं। हल्की सी गर्मी में ही बिजली की यह समस्या उत्पन्न हो गई आगे क्या होगा यह तो विभाग ही जान सके एक ओर सरकार बिजली 24 घंटे देने की वात करती है तो दूसरी ओर 12 घंटे बिजली गुम रहती है। ऐसे में सरकार के वादे विफल साबित हो रहे हैं। वहीं बिजली नहीं रहने से मुख्यमंत्री जल नल योजना के तहत हर घर जल लोगों को नहीं पहुंच पाती है। लोग पानी के लिए त्राहिमाम रहते हैं।

क्या कहते हैं कार्यपालक अभियंता जमालपुर = रड चोरी कारण के कारण रात में कई जगह तार क्षतिग्रस्त हो गया था इसी कारण बिजली नहीं रही। कार्यपालक अभियंता जमालपुर।

विवाहिता की मौत मामले में पुलिस ने हत्या का किया मामला दर्ज

मृतका की मां के लिखित बयान पर पुलिस ने किया मामला दर्ज

प्रात: किरण संवाददाता।

- पति-ससुर समेत तीन लोगों पर दहेज के लिए जहर देकर हत्या का मृतिका के परिजनों ने लगाया आरोप

नवगछिया (भागलपुर)। बिहपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत नगरपारा पूरब पंचायत वार्ड संख्या- 13 निवासी सौरव कुंवर उर्फ छोटू की पत्नी वर्षा देवी की मौत के बाद बिहपुर पुलिस ने शनिवार को नवगछिया अनुमंडल अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम कराकर परीजन को सौंप दिया। वही इस मामले में मृतक महिला वर्षा देवी की मां लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र के जगदीशपुर वार्ड संख्या- 5 निवासी साजन देवी पति कवींद्र सिंह के लिखित बयान पर बिहपुर थाना में दहेज प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए जहर देकर पुत्री की हत्या का केस दर्ज कराया है। जिसमे मृतक महिला के पति सौरव कुंवर उर्फ छोटू, ससुर नित्यानंद कुंवर व इनके भाई ललन कुंवर पर हत्या करने का आरोप लगाया है। आवेदन में लिखा है कि वर्षा की शादी फरवरी 2023 में भ्रमरपुर के सौरव कुंवर से कराया था। वही शादी के बाद दोनो के बीच रिश्ता सही से नही चल रहा था। दोनो के बीच बराबर विवाद होता था। वही 28 मार्च की शाम वर्षा के मायके वालों को सूचना मिली कि वर्षा की मौत हो चुकी है। इस बारे में बिहपुर थानाध्यक्ष राहुल कुमार ठाकुर ने बताया कि आवेदन पर कांड दर्ज कर पुलिस जांच में जुट गई है। आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए उसके संभावित ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है। जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार किया जाएगा।

गिरजाघर में तृदिवसीय ईद उल फिदर त्योहार प्रार्थना सभा के साथ संपन्न

प्रात: किरण संवाददाता

बरियारपुर(मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड के विजय नगर गांव के खीस्त राजा विद्यालय के गिरजाघर मे तृदिवसीय इदुल फिदर त्योहार प्रार्थना सभा के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर फादर जौर्ज सोरेन इनके सहायक सुनील खाखा सिस्टर लुसीना, मैक्सिमा, मुकेश माझी, प्रकाश मराडीऊ मुरारी माझी, जयमाला देवी, विश्वजीत कुमार ने साथ अनेक उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रथम कैण्डी लिए जला प्रभु इशु को नमन किया गया इनके अनुयाई ी प्रार्थना भवन मे उपस्थिती दर्ज कर पवित्र और मन से प्रार्थना प्रारम्भ किया पहले फादर जौर्ज सौरेन के साथ स्थानिय सहयोगियों ने उच्चारण किया यह प्रार्थना लगभग एक घंटे चली तब सभी अनुयाई द्वारा प्रसाद ग्रहण किया गया।

हैदराबाद ने गुजरात को दिया था 163 रन का टारगेट

अभिषेक शर्मा और अब्दुल समद ने 29-29 रन बनाए, मोहित शर्मा को तीन विकेट

अहमदाबाद (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद ने इंडियन प्रीमियर लीग-2024 के 12वें मुकाबले में गुजरात टाइटंस को जीत के लिए 163 रन का टारगेट दिया गया था। टीम ने अहमदाबाद में टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 163 रन बनाए। अभिषेक शर्मा और अब्दुल समद ने 29-29 रन बनाए। हेनरिक क्लासन ने 24 रन का योगदान दिया। मोहित शर्मा ने तीन विकेट झटके। अजमतुल्लाह ओमरजई, उमेश यादव, राशिद खान और नूर अहमद को एक-एक विकेट मिला।

मुंबई के फैन ने फोड़ा सीएसके के सपोर्टर का सिर, इलाज के दौरान बुजुर्ग की मौत

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 का रोमांच क्रिकेट फैंस के सिर चढ़कर बोल रहा है। इस रोमांच की बीच दिल को झकझोर कर देने वाली खबर सामने आई है। आईपीएल के एक मैच के दौरान एक क्रिकेट फैंस का सिर फोड़ दिया। इसके बाद बुजुर्ग फैन को हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया लेकिन गंभीर चोट लगने के कारण उसकी मौत हो गई। इस मामले में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल, बीते बुधवार को सनराइजर्स हैदराबाद और मुंबई इंडियंस के बीच आईपीएल 2024 का 8वां मैच खेला गया। इस मैच में पहले बैटिंग करते हुए हैदराबाद ने 277 रन बनाए। जबाव में मुंबई की टीम 246 रनों पर ढेर हो गई। मुंबई इंडियन की ओर से रोहित शर्मा 26 रन बनाकर आउट हो गए। रोहित के आउट होने के बाद आउट होने के बाद बंदोपंत बापसो टिबिले (उम्र 63 वर्ष) नाम के व्यक्ति ने मुंबई के फैंस से जीत को लेकर सवाल पूछा। इस पर वह इतना चिढ़ गए कि उन्होंने बुजुर्ग के सिर पर डंडे से प्रहार कर दिया। बुजुर्ग फैन गंभीर रुप से घायल हो गया। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

आई लीग-रीयल कश्मीर एफसी ने नेरोका एफसी को हराया

श्रीनगर (एजेंसी)। रीयल कश्मीर एफसी ने आई लीग फुटबॉल के मैच में नेरोका एफसी को 3 . 0 से हराकर उसे दूसरी श्रेणी में धकेल दिया। कश्मीर के लिए नोहेरे क्रिजो ने 35वें, हैदर युसूफ ने 45वें और शहर शाहीन ने 67वें मिनट में गोल दागे। इस हार के बाद मणिपुर की नेरोका एफसी 21 मैचों में 13 अंक लेकर 12वें स्थान पर है। इस सत्र में उसने 4 मैच जीते, एक ड्रॉ खेला और 16 गंवाए। अब उसे तीन ही मैच खेलने है और सभी जीतने पर भी वह दूसरी श्रेणी में खिसकने से नहीं बच सकती। वहीं, कश्मीर की टीम ने चार ड्रॉ खेलने के बाद जीत दर्ज की । उसका अपराजेय अभियान नौ मैचों का हो गया है । उसके 22 मैचों में 40 अंक है और वह तालिका में दूसरे स्थान पर है।

शाहिद अफरीदी के दामाद शाहीन अफरीदी की गजब बेइज्जती

5 मैच बाद ही छीनी कप्तानी, बाबर आजम फिर बॉस

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट में कुछ भी असंभव नहीं है। बोर्ड कप्तान को कपड़े की तरह बदलता है।अब शाहीन अफरीदी को ही देख लीजिए।उन्हें वनडे वर्ल्ड कप के बाद बाबर आजम की जगह पाकिस्तान टी 20 क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया गया था। माना जा रहा था कि वह टी20 वर्ल्ड में पाकिस्तान क्रिकेट टीम की अगुवाई करेंगे। लेकिन उससे पहले ही खेल हो गया। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इंटरनेशनल टी20 टीम का कप्तान बदल दिया है।अब शाहीन अफरीदी की जगह बाबर आजम नए कप्तान होंगे। यानी शाहिद अफरीदी के दामाद की घनघोर बेइज्जती हुई है। उन्होंने हाल ही में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को चेतावनी दी थी कि अगर कप्तान बनाया है तो समय भी दो। लेकिन

उनकी इस धौंस का कोई फायदा नहीं हुआ। बोर्ड ने पाकिस्तान सुपर लीग में फेल रहने वाले शाहीन को फायर कर दिया है।उनकी जगह एक बार फिर बाबर आजम को बॉस बना दिया है।

पीसीबी अध्यक्ष ने बाबर को दिया था फिर से कप्तानी का ऑफर

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने बाबर आजम को सफेद गेंद के प्रारूप में कप्तानी की पेशकश दी थी। हालांकि बाबर ने कप्तानी स्वीकार करने के लिए कुछ शर्तें भी रखी थीं, जिसमें कोचों की नियुक्ति में भी उनकी राय लेना शामिल है। बाबर ने यह भी कहा है कि उन्हें तीनों प्रारूपों में टीम की कमान सौंपी जानी चाहिए। फिलहाल बाबर आजम को अभी सिर्फ वाइट बॉल क्रिकेट का कप्तान बनाया गया है।

बाबर आजम की कप्तानी में कैसा रहा पाकिस्तान का रिकॉर्ड?

बता दें कि बाबर आजम की कप्तानी में पाकिस्तान क्रिकेट टीम कोई भी आईसीसी ट्रॉफी नहीं जीत पाई है। 2021 टी20 वर्ल्ड कप में सेमीफाइनल तो 2022 टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान फाइनल तक पहुंची थी। वहीं 2023 के वनडे वर्ल्ड कप में पाकिस्तान अंतिम 4 में भी अपनी जगह नहीं बना पाई थी।

पीसीबी लाल गेंद और सफेद गेंद प्रारूप के लिए अलग-अलग विदेशी कोच नियुक्त करेगा: सूत्र

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने लाल गेंद और सफेद गेंद प्रारूपों के लिए अलग-अलग विदेशी कोच नियुक्त करने का फैसला किया है और सूत्रों के अनुसार इसमें ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज जेसन गिलेस्पी और पूर्व दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज गैरी कर्स्टन को संभावित उम्मीदवारों के रूप में शामिल किया गया है।

पीसीबी ने शनिवार को आधिकारिक तौर पर लाल गेंद और सफेद गेंद कोच के पदों के लिए विज्ञापन जारी किया। इच्छुक उम्मीदवार (विदेशी और स्थानीय) 15 अप्रैल तक आवेदन कर सकते हैं और उनके पास न्यूनतम लेवल दो कोचिंग की पात्रता होने के अलावा घरेलू, अंतरराष्ट्रीय या फ्रेंचाइजी टीम को कोचिंग देने का कम से कम पांच साल का अनुभव होना चाहिए। इसमें कहा गया है कि उच्च स्तर की कोचिंग पात्रता वाले उम्मीदवारों को नियुक्तियों में प्राथमिकता दी जाएगी।

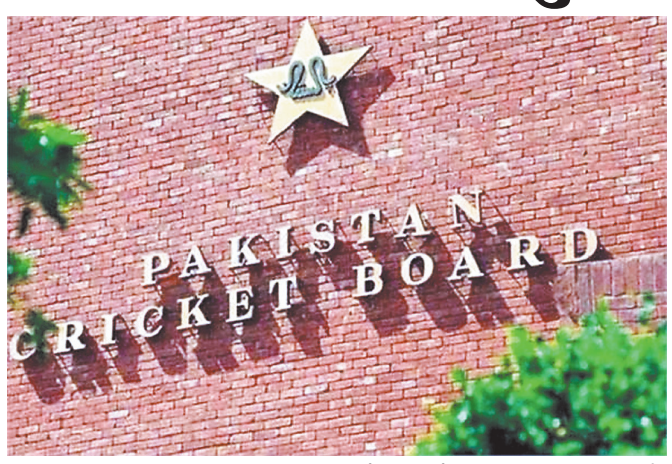

पीसीबी के एक सूत्र ने बताया कि विज्ञापन में आवेदन आमंत्रित किए गए हैं लेकिन बोर्ड ने कर्स्टन और गिलेस्पी के साथ बातचीत की है। बोर्ड को उनके आवेदन का इंतजार है ताकि उन्हें दीर्घकालिक आधार पर नियुक्त किया जा सके। सूत्र के अनुसार भारतीय टीम को कोचिंग दे चुके कर्स्टन सफेद गेंद प्रारूप (सीमित ओवरों की टीम) के लिए चुना गया है, जबकि गिलेस्पी को लाल गेंद (टेस्ट) टीम का मुख्य कोच बनाए जाने की उम्मीद है।

सूत्र ने कहा कि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी सब कुछ तयशुदा तरीके से कर रहे थे और उन्होंने सभी घटनाक्रमों के बारे में बोर्ड ऑफ गवर्नर्स को सूचित भी कर दिया था। सूत्र ने कहा, 'उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए विज्ञापन दिया है कि जो भी कोच के रूप में नियुक्त किया जाता है, उसे अपनी योग्यता दिखाने के लिए उचित अनुबंध और कार्यकाल दिया जाए ताकि उन्हें किसी भी अध्यक्ष की इच्छा और पसंद के अनुसार बदला नहीं जा सके।

पिछले काफी समय में यह पहली बार है जब पीसीबी ने राष्ट्रीय टीम के कोच पद के लिए विज्ञापन दिया है। इससे पहले जका अशरफ और नजम सेठी के कार्यकाल में बिना किसी विज्ञापन के कोच को नियुक्त किया गया था। यहां तक की पूर्व अध्यक्ष रमीज राजा ने भी विदेशी सलाहकारों को बिना किसी विज्ञापन के नियुक्त किया था।

धोनी का यह आखिरी आईपीएल?, पूर्व कप्तान खुद भी दे चुके हैं संकेत

चेन्नई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय और टी20 फ्रेंचाइजी क्रिकेट के सबसे सफल कप्तानों में से एक महेंद्र सिंह धोनी इस साल आईपीएल को अलविदा कह सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों से उनके आईपीएल से संन्यास की योजना भी चल रही है लेकिन टीम को सफल कप्तान ना मिलने की वजह से वह टीम के साथ बने हुए हैं। पिछले साल उन्होंने टीम को पांचवां खिताब दिलाया था जबकि उससे पहले 2022 में रविंद्र जडेजा को कप्तानी सौंपी गई थी जो सही फैसला साबित नहीं हुआ था। लेकिन इस बार 2024 में सीएसके को एक बार फिर से रुतुराज गायकवाड़ के रूप में नया कप्तान मिला है जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है। ऐसे में हो सकता है कि धोनी का यह आखिरी आईपीएल हो। चाहे वह आईपीएल से संन्यास ले लें लेकिन वह टीम के साथ बने रहेंगे और उनके मार्गदर्शन में अगली पीढ़ी सीएसके के लिए काम करेगी।

सबसे सफल कप्तान

उन्होंने सबसे ज्यादा मैचों (226) में कप्तानी की है और 100 से ज्यादा मैच जीते हैं। उनकी अगुवाई में उनकी टीम ने 133 मैच (चेनई सुपर किंग्स ने 128 और राइजिंग पुणे सुपर सुपरजाएंट्स ने 5) जीते हैं। धोनी की अगुवाई में चेन्नई सुपर किंग्स 10 बार फइनल में पहुंची और 5 बार खिताब अपने नाम किया। रोहित शर्मा की अगुवाई में मुंबई इंडियन्स ने भी पांच बार खिताब जीते हैं लेकिन वह रनर-अप केवल एक बार ही बनी।

आइकॉन प्लेयर छोड़ नीलामी में जाना

2008 में आईपीएल की शुरुआत में पहली बार क्रिकेटरों पर बोली लगी। इस दौरान 5 टीमों ने अपने 5 आइकॉन खिलाड़ी (सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, राहुल द्रविड़, युवराज सिंह और वीरेंद्र सहवाग) चुने लेकिन धोनी ने नीलामी में उतरने का फैसला किया। इस पर बात करते हुए धोनी ने एक शो में कहा था, मेरे पास दो-तीन टीमों का आइकॉन प्लेयर बनने का मौका था। लेकिन मैंने प्लेयर्स बिड में उतरने का फैसला किया। मुझे उम्मीद थी कि बिड में उतरने से कम से कम 1 मिलियन डॉलर मिल सकते हैं।

साइना ने कांग्रेस नेता की महिला विरोधी टिप्पणी की निंदा की, सोशल मीडिया पर लिखी ये बात

बेंगलुरु(एजेंसी)। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल ने दावणगेरे सीट से भाजपा उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वर पर की गई महिला विरोधी टिप्पणी करने के लिए राज्य के अनुभवी कांग्रेस नेता शमनूर शिवशंकरप्पा की आलोचना की। दावणगेरे दक्षिण से 92 वर्षीय मौजूदा विधायक शिवशंकरप्पा ने कहा था कि पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद सिद्धेश्वर जीएम की पत्नी गायत्री 'केवल रसोई में खाना बनाना जानती हैं।

उनकी टिप्पणी पर आपत्ति जताते हुए नेहवाल ने अपने 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'कर्नाटक के एक शीर्ष नेता शमनूर शिवशंकरप्पा जी ने कहा है कि महिलाओं को रसोई तक ही सीमित रहना चाहिए। दावणगेरे से उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वरा पर की गई इस लैंगिक टिप्पणी की कम से कम ऐसी पार्टी से उम्मीद नहीं की जा सकती जो कहते हैं कि लड़की हूं, लड़ सकती हूं।

लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीतने वाली 34 वर्षीय नेहवाल ने कहा कि जब देश में महिलायें हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने की ख्वाहिश रखती हैं तो महिलाओं के खिलाफ इस तरह की द्वेषपूर्ण टिप्पणी परेशान करने वाली हैं। उन्होंने लिखा, 'जब मैंने खेल के मैदान पर भारत के लिए पदक जीते तो कांग्रेस पार्टी मुझसे क्या चाहती थी, मुझे क्या करना चाहिए था? इस तरह क्यों कहा जा रहा है, जब सभी लड़कियां और महिलाएं किसी भी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल करने का सपना देखती हैं।

नेहवाल ने लिखा, 'एक तरफ हम नारी शक्ति को वंदन कर रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर के नेतृत्व में महिला आरक्षण विधेयक पारित किया गया है और दूसरी तरफ नारी शक्ति का अपमान और महिला विरोधी लोग। यह बहुत ही परेशान करने वाला है।% शिवशंकरप्पा ने हाल में कहा, 'वह (गायत्री) ठीक से बोलना भी नहीं जानती। वह घर पर खाना पकाने के लिए फिट है।

बोपन्ना-इबडेन की जोड़ी ने जीता मियामी ओपन का खिताब, रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर वापसी की

मियामी (एजेंसी)। भारत के स्टार टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने सबसे उम्रदराज एटीपी मास्टर्स 1000 चैंपियन बनने के अपने रिकॉर्ड में सुधार करते हुए ऑस्ट्रेलिया के जोड़ीदार मैथ्यू इबडेन के साथ यहां मियामी ओपन में पुरुष युगल का खिताब जीता।

इस साल अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए 44 साल बोपन्ना और इबडेन की जोड़ी ने शुरुआती सेट में पिछड़ने के बाद हार्ड रॉक स्टेडियम में क्रोएशिया के इवान डोडिग और अमेरिका के ऑस्टिन क्राजिसेक की जोड़ी पर 6-7(3), 6-3, 10-6 से रोमांचक जीत हासिल की। इस जीत के साथ बोपन्ना ने पिछले साल बनाए अपने ही रिकॉर्ड में सुधार किया। उन्होंने बीते साल 43 बरस की उम्र में इंडियन वेल्स खिताब जीता था। उन्होंने इसके साथ ही युगल रैंकिंग में शीर्ष स्थान भी हासिल किया।

बोपन्ना ने जीत के बाद कहा, 'यह आश्चर्यजनक है। हम इन बड़े आयोजनों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, हम इसी के लिए खेलते हैं। इस साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपना पहला युगल ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाले बोपन्ना ने कहा, 'मैं मास्टर्स 1000 और ग्रैंड स्लैम में अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं।

उस रिकॉर्ड को बरकरार रखना और बाकी सभी को कड़ी टक्कर देना अच्छा है।

यह बोपन्ना का 14वां एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल था। इस अनुभवी भारतीय खिलाड़ी का यह 63वां एटीपी टूर स्तर का फाइनल और 26वां युगल खिताब था। बोपन्ना ने इस दौरान एक और उपलब्धि हासिल की। वह लिएंडर पेस के बाद सभी 9 एटीपी मास्टर्स स्पर्धाओं के फाइनल में पहुंचने वाले दूसरे भारतीय बन गए हैं।

155.8 किमी की रफ्तार से गेंद फेंकने वाले मयंक यादव ने कहा- गति मुझे उत्साहित करती है

लखनऊ(एजेंसी)। भारत के नए तेज गेंदबाजी सनसनी मयंक यादव को गति रोमांचित करती है और वह बचपन से जेट विमान, रॉकेट और सुपर बाइक की गति की कल्पना कर उत्साहित होते रहे हैं। दिल्ली के इस 21 साल के गेंदबाज ने शनिवार को लगातार 150 किलोमीटर से अधिक रफ्तार की गेंद फेंक कर पंजाब किंग्स के बल्लेबाजों को परेशान किया।

उन्होंने जॉनी बेयरस्टो, प्रभसिमरन सिंह और जितेश शर्मा जैसे अनुभवी बल्लेबाजों का विकेट झटक कर अपने आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) पदार्पण को यादगार बनाया। अपने चार ओवर में 27 रन देकर तीन विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने पंजाब की पारी के 12वें ओवर में 155.8 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से गेंद डाली, जो मौजूदा आईपीएल सत्र का सबसे तेज गेंद है।

मयंक ने मैच के बाद कहा, 'क्रिकेट के अलावा सामान्य जीवन में भी मुझे ऐसी चीजें पसंद हैं जिनकी गति अधिक हो। चाहे वह रॉकेट हो, हवाई जहाज हो या सुपर बाइक, गति मुझे उत्साहित करती है। बचपन में मुझे जेट विमान पसंद थे और उनसे प्रेरणा मिलती थी। पंजाबी बाग के इस गेंदबाज ने कहा, 'मैंने इससे पहले कभी भी 156 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद नहीं फेंकी। मैंने मुश्ताक अली (घरेलू टी20 ट्रॉफी) के दौरान 155 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी की है लेकिन यह मेरी सबसे तेज गेंद थी।

मयंक को लखनऊ की टीम ने आईपीएल 2022 से पहले चुना था। उन्होंने तब सिर्फ दो लिस्ट ए मैच खेले थे। वह 2022 सत्र में आईपीएल का एक भी मैच नहीं खेल सके थे और पिछले साल मांसपेशियों में खिंचाव के कारण वह पूरे सत्र से बाहर थे। उन्होंने चोट से उबरने के बाद 50 ओवर प्रारूप में खेले जाने वाले देवधर ट्रॉफी में उत्तर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए अनुभवी राहुल त्रिपाठी का मिडिल स्टंप उखाड़ दिया था।

उन्होंने कहा, चोट तेज गेंदबाजों के जीवन का हिस्सा हैं, वे आपके दोस्त हैं। पिछले एक-डेढ़ साल में मुझे दो-तीन बड़ी चोटें लगीं। यह मेरे लिए थोड़ा निराशाजनक भी था। इस युवा गेंदबाज ने कहा, 'पिछले सत्र में भी मैं चोट के कारण आईपीएल में नहीं खेल पाया था। मुझे पसलियों में फ्रैक्चर के साथ साइड स्ट्रेन की चोट थी। यह चोट मुझे विजय हजारे ट्रॉफी के दौरान लगी थी। मेरा प्रयास है कि मैं अभ्यास और शारीरिक रूप से रिकवरी और खुद पर अधिक ध्यान दूं।

मयंक दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन से काफी प्रेरित है। उन्होंने कहा, 'मैं केवल एक ही तेज गेंदबाज से प्रेरणा लेता हूं और वह डेल स्टेन हैं। वह मेरे आदर्श हैं और मैं उन्हें बहुत मानता हूं। उन्होंने कहा कि अपने पदार्पण मैच के दौरान उन्हें कोई दबाव या घबराहट महसूस नहीं हुई।

मयंक ने कहा, 'मेरे डेब्यू को लेकर काफी उत्साह था। पिछले दो साल से मैं सिर्फ एक ही चीज की कल्पना कर रहा हूं कि जब मैं डेब्यू करूंगा तो पहली गेंद फेंकने पर मुझे कैसा महसूस होगा। हर किसी ने कहा कि कुछ तो होगा दबाव या घबराहट लेकिन मुझे यह बिल्कुल महसूस नहीं हुआ। उन्होंने कहा, 'जब मेरे कप्तान ने मुझे पहला ओवर फेंकने के लिए कहा तो मुझे अपने अंदर महसूस हुआ कि मैं यहीं का हूं और काफी आत्मविश्वास था।

अशोक कुमार को लाइफटाइम अचीवमेंट, सलीमा और हार्दिक वर्ष के सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। युवा मिडफील्डर हार्दिक सिंह और डिफेंडर सलीमा टेटे को वर्ष 2023 के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर पुरस्कार दिया गया जबकि मेजर ध्यानचंद के नाम पर लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान उनके बेटे अशोक कुमार को मिला।

पिछले साल एफआईएच वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार भी जीतने वाले हार्दिक ने पुरस्कार की दौड़ में पी आर श्रीजेश और हरमनप्रीत सिंह जैसे सीनियर खिलाड़ियों को पछाड़ा। तोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता भारतीय टीम के सदस्य रहे 25 वर्ष के हार्दिक सौ से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं।

उन्होंने पुरस्कार जीतने के बाद कहा, 'इतने महान खिलाड़ियों के साथ नामांकन पाना ही बड़ी उपलब्धि है। पुरस्कार से मुझे आगे और अच्छा खेलने की प्रेरणा मिलेगी। वहीं झारखंड के सिमडेगा जिले की टेटे तोक्यो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रही भारतीय महिला टीम का हिस्सा थी। उन्होंने पुरस्कार की दौड़ में अपनी कप्तान और एफआईएच वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला गोलकीपर का पुरस्कार जीतने वाली सविता पूनिया को पछाड़ा।

वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को पुरस्कार के तौर पर 25 लाख रूपये और प्रशस्ति पत्र दिया गया। यहां आयोजित हॉकी इंडिया सालाना पुरस्कार समारोह में पी आर श्रीजेश को वर्ष 2023 के सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह को सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर का पुरस्कार मिला। हरमनप्रीत ने इस मौके पर कहा, 'पुरस्कार और अच्छा खेलने की प्रेरणा देते हैं। टीम में इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती है जो हॉकी के लिए अच्छा है।

वहीं हार्दिक ने सर्वश्रेष्ठ मिडफील्डर का पुरस्कार भी जीता और सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड का पुरस्कार अभिषेक को मिला। सर्वश्रेष्ठ उदीयमान अंडर 21 खिलाड़ी का पुरस्कार महिला वर्ग में दीपिका सोरेंग और पुरूष वर्ग में अराइजीत सिंह हुंडल को मिला। मेजर ध्यानचंद लाइफटाइम पुरस्कार जीतने वाले उनके बेटे और 1975 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य अशोक कुमार ने कहा, 'हमें सरदार

बलबीर सिंह, उधम सिंह, कैप्टन रूप सिंह, केडी सिंह बाबू जैसे महान खिलाड़ियों की परंपरा को जारी रखते हुए इस बार पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना है।

भारत ने 41 साल के इंतजार के बाद तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। आठ बार की ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम ने ओलंपिक में आखिरी स्वर्ण 1980 में मॉस्को में जीता था। अशोक कुमार ने कहा, 'खिलाड़ियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। दबाव पर काबू रखते हुए अपने कौशल का प्रदर्शन करना है। अब तो खिलाड़ियों के पास आलातरीन कोच, बुनियादी ढांचा और सुविधाएं हैं। हमें उम्मीद है कि ये टीम पेरिस में स्वर्ण जीतकर भारतीय हॉकी का पुराना गौरव लौटाएगी।

इसके साथ ही लखनऊ में 2016 में जूनियर पुरूष हॉकी विश्व कप जीतने वाली टीम, हांगझोउ एशियाई खेल 2023 स्वर्ण पदक विजेता पुरूष टीम और कांस्य पदक विजेता महिला टीम, ओमान में 2023 जूनियर एशिया कप जीतने वाली पुरूष टीम, जापान में जूनियर एशिया कप जीतने वाली महिला टीम, ओमान में एशिया हॉकी 5 में स्वर्ण पदक जीतने वाली महिला और पुरूष टीमों, चेन्नई में एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी 2023 जीतने वाली पुरूष टीम, रांची में महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी 2023 जीतने वाली महिला टीमों को भी नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ मुकदमा बंद करने के लिए कांग्रेस ने मोदी सरकार को घेरा

वॉशिंग मशीन के साथ प्रेस कांफेस की

नई दिल्ली, एजेंसी। एअर इंडिया विमानों की खरीद घोटाले के मामले में घिरे राकांपा नेता प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ भ्रष्टाचार का मुकदमा बंद करने के सीबीआई के फैसले को लेकर कांग्रेस ने मोदी सरकार पर निशाना साधा है। कहा कि भाजपा जिन नेताओं पर करोड़ों के घोटाले का आरोप लगाती है, उन्हें भाजपा-एनडीए गठबंधन में शामिल कराकर मुकदमे वापस ले लेती है।

पार्टी के अनुसार, शरद पवार से बगावत कर अजीत पवार के साथ भाजपा के सहयोगी बने प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ मुकदमा बंद किया जाना इसका ताजा उदाहरण है। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने पार्टी मुख्यालय में वॉशिंग पाउडर और वॉशिंग मशीन के साथ प्रेस कांफ्रेंस करते हुए आरोप लगाया कि भाजपा के पास ऐसी वॉशिंग मशीन है, जिसमें 10 साल पुराना केस भी डालो तो आरोपित बेदाग निकलता है। मशीन के साथ ही ये कमाल मोदी वॉशिंग पाउडर का भी है। राकांपा नेता प्रफुल्ल पटेल इसके जीते-जागते उदाहरण हैं। भाजपा ने उन

पर एअर इंडिया घोटाले का आरोप लगाते हुए 2014 के लोकसभा चुनाव के आरोपपत्र में इसे शामिल किया था। भाजपा ने इसे लगभग 25,000-30,000 करोड़ का घोटाला बताया था। उस समय कैग विनोद राय ने भी अनाप-शनाप टिप्पणियां की थीं। इसे लेकर सीबीआई ने प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ 2017 में भ्रष्टाचार का मुकदमा दर्ज किया था। खेड़ा ने कहा कि 2019 में भाजपा ने पटेल के खिलाफ कुछ घिनौने आरोप लगाते हुए दावा किया था कि वह 1993 के मुंबई बम धमाकों के आरोपित इकबाल मिर्ची के साथ एक संपत्ति सौदे में शामिल थे। राकांपा को तोड़कर महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन में शामिल होते ही उनके सारे दाग साफ हो गए।

खेड़ा ने 21 उदाहरण दिए

उन्होंने कहा कि ये महज एक नाम नहीं है, बल्कि ऐसे 21 उदाहरण हैं, जिन्हें भाजपा द्वारा उनके खिलाफ भ्रष्टाचार और गैरकानूनी कार्य करने के आरोप लगाने के बाद पाक-साफ कर दिया गया है। इसका कारण साफ है कि या तो वे भाजपा में शामिल हो गए या वे एनडीए गठबंधन में शामिल हो गए। इनमें हिमंत बिस्वा सरमा, नारायण राणे, अजीत पवार, हसन मुश्रीफ, छगन भुजबल, अशोक चव्हाण समेत अन्य नेता शामिल हैं।

ईडी और सीबीआई का उपयोग राजनीतिक विस्तार के लिए

कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि मोदी सरकार ने ईडी, आईटी, सीबीआई समेत सभी स्वायत्त संस्थानों का इस्तेमाल अपने राजनीतिक विस्तार के लिए एक हथियार के रूप में किया है। चाहे वह चुनावी बॉन्ड की वसूली के लिए ईडी का दुरुपयोग हो या फिर 30 साल पुराने नोटिसों के माध्यम से प्रमुख विपक्षी दलों को परेशान करने के लिए आयकर विभाग का इस्तेमाल हो।

क्या पीएम-गृह मंत्री कह सकते हैं कि उन्हें प्रतिबद्ध संस्थाएं चाहिए

खेड़ा ने आरोप लगाया कि भाजपा संस्थाओं को कमजोर करने में आदतन अपराधी बन गई है। उन्होंने पूछा कि क्या प्रफुल्ल पटेल और कांग्रेस-यूपीए का हिस्सा रहे कई अन्य लोगों के बारे में भाजपा की 2014 की चार्जशीट सच है या यह केवल बदनाम कर विरोधियों को भाजपा का समर्थन करने के लिए मजबूर करने के लिए थी।

खेड़ा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में प्रतिबद्ध न्यायपालिका को लेकर कांग्रेस की आलोचना की लेकिन क्या पीएम और गृह मंत्री अब खुलकर यह कह सकते हैं कि उन्हें प्रतिबद्ध संस्थाएं चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

इंटर द्वितीय वर्ष की छात्रा ने लगाई फांसी, हॉस्टल में मचा हड़कंप

विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश)। विशाखापट्टनम में पीएम पालम पुलिस स्टेशन की सीमा के तहत नारायण कॉलेज की इंटर द्वितीय वर्ष की एक छात्रा ने आत्महत्या कर ली। स्थानीय पुलिस अधिकारियों ने बताया कि 17 वर्षीय छात्रा अपने छात्रावास के कमरे में सोमवार रात को फांसी पर लटकी हुई पाई गई। जिसके बाद उसे तुरंत कोमाडी के गायत्री अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने कहा, ÷वह अनाकापल्ली जिले के चोदावरम मंडल की मूल निवासी थी।÷ घटनास्थल से एक सुसाइड नोट बरामद हुआ है, जिसमें पीड़िता ने अस्वस्थ होने और दो बार अस्पताल जाने की शिकायत की है। पालम पुलिस स्टेशन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ÷प्रथम दृष्टया यह आत्महत्या का मामला प्रतीत होता है। घटना के पीछे का सटीक कारण अभी तक स्पष्ट नहीं है।÷ शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। उन्होंने कहा, हम मामले की आगे जांच कर रहे हैं।

भाजपा विधायकों को छूने की हिम्मत न करे कांग्रेस

हैदराबाद। तेलंगाना में भाजपा विधायक दल के नेता ए. महेश्वर रेड्डी ने शनिवार को चेतावनी दी कि यदि किसी भी भाजपा विधायक को छुआ (दलबदल के लिए लालच) गया तो राज्य में कांग्रेस सरकार 48 घंटों के भीतर गिर जाएगी। मंत्री के. वेंकट रेड्डी के दावों की ओर इशारा करते हुए महेश्वर रेड्डी ने कहा कि वह भाजपा विधायकों को छूने की हिम्मत न करें। वेंकट रेड्डी ने दावा किया था कि तेलंगाना के भाजपा के सभी आठ विधायक कांग्रेस के संपर्क में हैं। भाजपा नेता ने कहा, अगर आपने हमारे एक भी विधायक को छूने की कोशिश की, तो मैं आपको बता रहा हूं कि 48 घंटों के भीतर आपकी सरकार गिर जाएगी। महेश्वर रेड्डी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी सरकार बनाने के 100 दिन बाद भी अपने वादों या गारंटी को लागू करने में विफल रही है। कहा कि कांग्रेस पूरे देश में अपनी राजनीतिक और चुनावी गतिविधियों के लिए हैदराबाद से फंडिंग कर रही है।

जगन्नाथ मंदिर से हिरासत में लिया गया ब्रिटिश नागरिक

भुवनेश्वर , एजेंसी। ओडिशा पुलिस ने एक ब्रिटिश नागरिक को हिरासत में लिया है। उस पर आरोप है कि पहले उसने जगन्नाथ मंदिर में अनाधिकृत तरीके से प्रवेश किया। जब पुलिसकर्मियों ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने पुलिस की टीम पर ही हमला कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने उसे हिरासत में ले लिया। रविवार को एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि विदेशी पर्यटक की पहचान थॉमस क्रेग शेल्डन के रूप में की गई है। थॉमस दक्षिण लंदन के वंड्सवर्थ का रहने वाला है। आपको बता दें कि 12वीं सदी के जगन्नाथ मंदिर में गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित हैं। इसके बाद भी थॉमस ने मंदिर में प्रवेश किया। जब पुलिस कर्मियों ने उसे रोका और मंदिर परिसर छोड़ने के लिए कहा तो थॉमस ने कथित तौर पर पुलिस पर हमला कर दिया। पुरी के डीएसपी सिटी प्रशांत कुमार साहू ने कहा कि हमने विदेशी पर्यटक को हिरासत में ले लिया है और आगे की जांच जारी है। इससे पहले 23 मार्च को पोलैंड की एक महिला को मंदिर में प्रवेश करने पर हिरासत में लिया गया था। इसके ठीक एक हफ्ते बाद ब्रिटिश नागरिक थॉमस को हिरासत में लिया गया है। इससे पहले 3 मार्च को कुछ बांग्लादेशी नागरिकों को मंदिर में प्रवेश करते समय पकड़ा गया था। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया था।

राज्यपाल का पद गंभीर, संविधान के तहत काम करें: बीवी नागरत्ना

हैदराबाद। सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने शनिवार को राज्यपालों को लेकर बड़ी बात कही है। उन्होंने हैदराबाद के एनएएलएसएआर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राज्यपालों को संविधान के अनुसार कार्य करना चाहिए।

न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने कहा कि हाल की प्रवृत्ति यह रही है कि किसी राज्य के राज्यपाल या तो विधेयकों को मंजूरी देने में चूक या उनके द्वारा किए जाने वाले अन्य कार्यों के कारण मुकदमेबाजी का मुद्दा बन रहे हैं। किसी राज्य के राज्यपाल के कार्यों या चूक को संवैधानिक अदालतों के समक्ष विचारार्थ लाना संविधान के तहत एक स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है।

उन्होंने कहा कि हालांकि इसे राज्यपाल पद कहा जाता है, यह एक गंभीर संवैधानिक पद है और राज्यपालों को संविधान के अनुसार कार्य करना चाहिए, ताकि इस प्रकार की मुकदमेबाजी कम हो। राज्यपालों के लिए किसी कार्य को करने या न करने के लिए कहा जाना काफी शर्मनाक है। मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि उन्हें संविधान के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए कहा जाए।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर अखिलेश यादव ने बीजेपी पर बोला हमला

नई दिल्ली , एजेंसी। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को कहा कि भाजपा सत्ता खोने को लेकर चिंतित है और उन्होंने विपक्ष को निशाना बनाने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग करने के लिए सत्तारूढ़ दल पर हमला बोला है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर दुनिया भर में भाजपा की आलोचना हो रही है।

रामलीला मैदान में इंडिया ब्लॉक रैली के लिए शहर पहुंचे यादव ने हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से कहा कि भाजपा चिंतित है कि वह (सत्ता से बाहर) जा रही है। जबकि हम (विपक्षी नेता) आज दिल्ली आ रहे हैं, प्रधानमंत्री दिल्ली से बाहर जा रहे हैं। इससे पता चलता है कि कौन (सत्ता से) बाहर जा रहा है।

चुनावी बांड योजना के मुद्दे पर सरकार पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा, यह एक नया आविष्कार है...ईडी, सीबीआई, आईटी को काम पर लगाओ और जितना चाहो उतना दान ले लो।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के पहले चरण का काम लंबे इंतजार के बाद अंतिम दौर में पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के पहले चरण का काम लंबे इंतजार के बाद अब अपने अंतिम दौर में पहुंच गया है। अक्षरधाम मंदिर से बागपत के खेकड़ा तक करीब 31 किलोमीटर लंबे पहले हिस्से को दो पैकेज में बनाया जा रहा है, जिसका 90 फीसदी काम हो चुका है।

नेशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने मई के अंत तक इसे तैयार करने का लक्ष्य रखा है। हालांकि, यातायात शुरू होने के लिए मध्य जून तक इंतजार करना पड़ सकता है। अधिकारियों का कहना है कि पहले चरण का काम 15 मई तक पूरा कर लेंगे। फिर एक सप्ताह तक ट्रायल रन चलेगा। इसके बाद मंत्रालय से मंजूरी मिलते ही यातायात शुरू कर दिया जाएगा।

अक्षरधाम से लोनी और बागपत सीधे जुड़ेगा = पहले चरण को यातायात के लिए खोले जाने से पूर्वी दिल्ली के लोगों का बड़ा लाभ मिलेगा। खासकर, अक्षरधाम से चलकर गाजियाबाद के लोनी और बागपत के खेकड़ा तक पहुंचना आसान हो जाएगा। एनएचएआई ने टोल दरों को निर्धारित करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

30 हजार पीसीयू वाहनों का दबाव कम होगा = पहले चरण का काम पूरा होने पर दिल्ली-मेरठ और ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे सीधे जुड़ जाएंगे, क्योंकि देहरादून एक्सप्रेसवे अक्षरधाम में मेरठ एक्सप्रेसवे से शुरू हो रहा है जो खेकड़ा में ईस्टर्न पेरिफेरल को जोड़ेगा। माना जा रहा है कि शुरुआत में दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर वाहनों की संख्या कोई खास कम नहीं होगी, लेकिन नवंबर तक वाहनों का सीधे आवागमन देहरादून तक शुरू होगा। इससे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर करीब 30 हजार पैसेंजर पर कार यूनिट वाहनों का दबाव कम होगा।

बता दें कि, राजधानी की सभी मुख्य सड़कों का ट्रैफिक सीधे लूप और रैंप के जरिये दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर आ-जा सकेगा। इसके लिए दिल्ली की सीमा में पांच जगहों पर प्रवेश और निकासी की सुविधा होगी। वहीं, गाजियाबाद की सीमा में दो जगहों पर यह सुविधा उपलब्ध होगी। इसके बनने पर प्रतिदिन करीब ढाई लाख वाहन बिना जाम में फंसे दिल्ली और गाजियाबाद की सीमा से बाहर जा सकेंगे। इस एक्सप्रेसवे के तैयार होने पर दिल्ली में यमुनापार और लोनी को जाम से राहत मिलेगी। अभी अगर दिल्ली-सहारनपुर मार्ग से होते हुए देहरादून जाना है तो उसके लिए छह से सात घंटे लगते हैं। इसलिए लोग देहरादून जाने के लिए दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन, 210 किलोमीटर लंबे नए एक्सप्रेसवे के बनने से समय की बचत के साथ ही दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर जाम खत्म होगा।

डोनाल्ड ट्रंप की विवादित पोस्ट पर बढ़ा हंगामा, राष्ट्रपति बाइडन के समर्थकों ने लगाई फटकार

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा शेयर किए गए एक वीडियो को लेकर अब विवाद खड़ा हो गया है। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन की तस्वीर वाली एक वीडियो शेयर की थी। इस वीडियो में राष्ट्रपति बाइडन के हाथ-पैर बंधे हुए दिखाई दे रहे हैं। ट्रंप ने दावा किया कि यह फुटेज एनवाईपीडी के अधिकारी जोनाथन डिलर की मौजूदगी के दौरान लॉन्ग आइलैंड पर कैप्चर किया गया था। वीडियो में ट्रंप के लिए समर्थन व्यक्त करने वाले दो ट्रकों को दिखाया गया है। जिसमें बाइडन की हाथ और पैर बंधी तस्वीर को ट्रक के पीछे दिखाया गया है।

हालांकि, ट्रंप द्वारा ये वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करने के बाद जो बाइडन के समर्थकों ने उनकी जमकर आलोचना की। ट्रंप के प्रचार प्रवक्ता स्टीवन चेउंग ने उनका बचाव करते हुए कहा कि यह तस्वीर एक पिकअप ट्रक के पीछे थी, जो राजमार्ग से गुजर रहा था। डेमोक्रेट और लोगों ने न केवल पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप और उनके परिवार के खिलाफ घृणित हिंसा का आह्वान किया। बल्कि वे वास्तव में उनके खिलाफ न्याय प्रणाली को हथियार बना रहे हैं। वहीं, बाइडन के प्रचार प्रवक्ता माइकल टायलर ने सीएनएन को बताया कि डोनाल्ड ट्रंप द्वारा शेयर की गई यह पोस्ट हास्यपाद है। यह पोस्ट एक रक्तपात की मांग करने की तरह है। ट्रंप नियमित रूप से राजनीतिक हिंसा को भड़का रहे हैं और समय आ गया है कि लोग उन्हें गंभीरता से लें। इस महीने की शुरुआत में ट्रंप ने चेतावनी देते हुए कहा था कि अगर वह 2024 के चुनाव में हार जाते हैं तो इससे अमेरिकी ऑटो उद्योग और देश के लिए खूनखराबा होगा। उन्होंने अमेरिका के बाहर निर्मित कारों पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाने का प्रस्ताव दिया। यह तर्क देते हुए कि केवल उनके अध्यक्ष घरेलू वाहन विनिर्माण की रक्षा कर सकते हैं।

पाकिस्तान में रेड कार्पेट बैन, सिर्फ विदेशी महमानों के लिए बिछाया जाएगा

पीएम शाहबाज समेत कैबिनेट मंत्री सैलरी नहीं लेंगे

इस्लामाबाद , एजेंसी। पाकिस्तान में किसी भी सरकारी कार्यक्रम में रेड कार्पेट का इस्तेमाल नहीं होगा। अब इसे सिर्फ विदेशी महमानों के स्वागत में बिछाया जाएगा। प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने यह फैसला लिया है। पीएम शाहबाज शरीफ ने अधिकारियों को आधिकारिक कार्यक्रमों में रेड कार्पेट के इस्तेमाल पर बैन लगाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कैबिनेट मीटिंग में रेड कार्पेट बिछाने की प्रथा पर असंतोष जाहिर किया। इसके अलावा उन्होंने प्रधानमंत्री को मिलने वाली सैलरी लेने से भी इन्कार कर दिया है। 18 दिन पहले राष्ट्रपति जरदारी ने भी सैलरी नहीं लेने का फैसला किया था। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के इस फैसले के बाद कैबिनेट के मंत्रियों ने भी सैलरी नहीं लेने की घोषणा की है। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री की सैलरी 2 लाख रुपए प्रति महीना होती है। वहीं, पूर्व राष्ट्रपति आरिफ अल्वी को सैलरी के तौर पर हर महीने करीब 8 लाख 46 हजार पाकिस्तानी रुपए मिलते थे। यह वेतन 2018 में संसद ने तय किया था। 13 मार्च को जरदारी की पार्टी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपने ङ्क अकाउंट पर लिखा- राष्ट्रपति जरदारी देश की मदद करने के लिए अपने कार्यकाल में कोई सैलरी नहीं लेंगे। उन्होंने फाइनेंशियल मैनेजमेंट और राष्ट्रीय राजस्व पर बोझ नहीं डालने का फैसला किया है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार इस समय 8 बिलियन डॉलर है, जो करीब डेढ़ महीने तक के सामानों के आयात जितना है। देश के पास कम से कम 3 महीने के सामान के आयात जितना पैसा होना चाहिए। विकास की ये दर कमजोर सरकार आने पर और नीचे जा सकती है। फिलहाल एक डॉलर की कीमत 276 पाकिस्तानी रुपए के बराबर है।

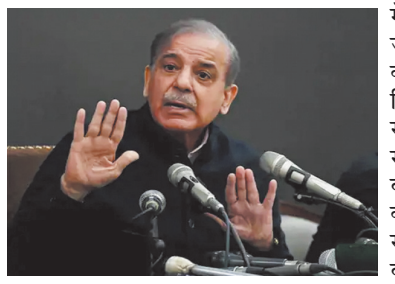

लेबनान में गोलाबारी से संयुक्त राष्ट्र के चार कर्मी घायल, इजरायल ने हमले से संबंध होने से किया इनकार

बेरूत , एजेंसी। लेबनान के दक्षिण में संयुक्त राष्ट्र के शांतिरक्षक दल में शामिल तीन पर्यवेक्षकों और एक अनुवादक शनिवार को बम हमले में घायल हो गए। ये लोग जब क्षेत्र में पैदल भ्रमण कर रहे थे तभी इनके नजदीक टैंक से दागा गया गोला आकर गिरा। इस गोले के टुकड़ों से क्षेत्र में तैनात संयुक्त राष्ट्र के ये कर्मी घायल हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने इस हमले की निंदा करते हुए उसे अस्वीकार्य बताया है जबकि इजरायल ने इस हमले से कोई संबंध होने से इनकार किया है। लेबनान का यह इलाका ईरान समर्थित संगठन हिजबुल्ला के प्रभाव वाला है। यहां पर इजरायल और हिजबुल्ला के बीच बीते आठ अक्टूबर से रह-रहकर लड़ाई चल रही है।

इस बीच, युद्धविराम पर इजरायल और हमास के बीच शनिवार को मिस्त्र की राजधानी काहिरा में फिर से परोक्ष वार्ता शुरू हो गई है। दोनों पक्षों के प्रतिनिधिमंडल काहिरा में मौजूद हैं लेकिन वे मिस्त्र और कतर की मध्यस्थता में वार्ता कर रहे हैं। गाजा की खाद्य समस्या में राहत देने के लिए यूरोपीय देशों का एक और जहाज 400 टन खाद्य सामग्री लेकर साइप्रस से रवाना हो गया है। इसके अगले हफ्ते गाजा पहुंचने की संभावना है।

अमेरिका ने कई अरब डालर मूल्य के बम और लड़ाकू विमान इजरायल को देने के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है। इस खेप में अमेरिका इजरायल को विभिन्न तरह के 4,800 बम देगा। उल्लेखनीय है कि सामान्य स्थिति में अमेरिका अपने पुराने सहयोगी इजरायल को प्रतिवर्ष 3.8 अरब डालर की सैन्य सहायता देता है। गाजा में इजरायली भीषण सैन्य कार्रवाई के चलते अंतरराष्ट्रीय दबाव का सामना कर रही बाइडन सरकार को घरेलू मोर्चे पर भी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है, बावजूद इसके इजरायल की सहायता में कमी नहीं की गई है। गाजा में इजरायली हमलों में 75 हजार से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। इनमें से कई हजार लोगों की हालत चिंताजनक बनी हुई है। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों से भी कई हजार लोग बुरी तरह से बीमार है।

हमें निकालकर भारतीयों को दी नौकरी, अमेरिका में टीसीएस पर लगे गंभीर आरोप

न्यूयार्क , एजेंसी। भारत की दिग्गज कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) पर अमेरिका में भेदभाव के गंभीर आरोप लगे हैं। टीसीएस के 20 से अधिक कर्मचारियों ने आरोप लगाया है कि कंपनी नस्ल और उम्र के आधार पर गैरकानूनी तरीके से भेदभाव कर रही है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल (डब्ल्यूएसजे) ने अपनी रिपोर्ट में ये जानकारी दी। कुल मिलाकर, 22 अमेरिकी प्रोफेशनल ने टीसीएस पर आरोप लगाया है कि कंपनी ने उन्हें निकालकर एच-1बी वीजा पर आए पर भारतीयों को नौकरी पर रखा।

टीसीएस द्वारा निकाले गए व्यक्तियों में कॉकेशियन, एशियाई-अमेरिकी और हिस्पैनिक अमेरिकी नस्ल के लोग शामिल हैं, जिनकी उम्र 40 से 60 वर्ष के बीच है। ये लोग अमेरिका के विभिन्न राज्यों से आते हैं। शिकायतों के आधार पर, टीसीएस द्वारा नौकरी से निकाले गए कई व्यक्तियों के पास मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन या अन्य एडवांस डिग्री है। इन लोगों ने आईटी फील्ड की दिग्गज भारतीय कंपनी पर उनके साथ भेदभाव करके कानूनों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। इन लोगों का कहना है कि कंपनी भारतीयों को फेवर कर रही है। आरोपों के बाद भारतीय आईटी कंपनियों द्वारा एच-1बी वीजा के इस्तेमाल को लेकर जांच शुरू हो गई है। ये वीजा कैटेगरी कुशल विदेशी श्रमिकों के लिए है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129